आचार्य हेमचन्द्र-रचित
सूत्रों पर आधारित
अपभ्रंश-हिन्दी-व्याकरण

संपादन
डॉ. कमलचन्द सोगाणी

लेखिका
श्रीमती शकुन्तला जैन

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
राजस्थान

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य हेमचन्द्र-रचित
सूत्रों पर आधारित
अपभ्रंश-हिन्दी-व्याकरण

संपादन
डॉ. कमलचन्द सोगाणी
निदेशक
जैनविद्या संस्थान-अपभ्रंश साहित्य अकादमी

लेखिका
श्रीमती शकुन्तला जैन
सहायक निदेशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी
राजस्थान

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

◈ प्रकाशक

अपभ्रंश साहित्य अकादमी

जैनविद्या संस्थान

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

श्री महावीरजी - 322 220 (राजस्थान)

दूरभाष - 07469-224323

◈ प्राप्ति-स्थान

1. साहित्य विक्रय केन्द्र, श्री महावीरजी

2. साहित्य विक्रय केन्द्र

दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी

सवाई रामसिंह रोड, जयपुर - 302 004

दूरभाष - 0141-2385247

◈ प्रथम संस्करण 2012

◈ सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

◈ मूल्य - 350 रुपये

◈ ISBN No. 978-81-921276-9-9

◈ पृष्ठ संयोजन

फ्रैण्ड्स कम्प्यूटर्स

जौहरी बाजार, जयपुर - 302003

दूरभाष - 0141-2562288

◈ मुद्रक

जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि.

एम.आई. रोड, जयपुर - 302 001

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ संख्या
	प्रकाशकीय	v
	प्रारम्भिक	viii
1.	संज्ञा शब्दों के विभक्ति प्रत्यय	1
2.	सर्वनाम शब्दों के विभक्ति प्रत्यय	23
3.	क्रियाओं के कालबोधक प्रत्यय	38
4.	कृदन्तों के प्रत्यय	57
5.	भाववाच्य एंव कर्मवाच्य के प्रत्यय	61
6.	स्वार्थिक प्रत्यय	68
7.	प्रेरणार्थक प्रत्यय	69
8.	संख्यावाची शब्द	76
9.	अव्यय	78
10.	विविध	83
	परिशिष्ट - 1 संज्ञा शब्दों की रूपावली	87
	परिशिष्ट - 2 सर्वनाम शब्दों की रूपावली	94
	परिशिष्ट - 3 क्रियारूप व कालबोधक प्रत्यय	110
	परिशिष्ट - 4 संख्यावाची शब्द की रूपावली	117
	परिशिष्ट - 5 आचार्य हेमचन्द्र-रचित सूत्रों के सन्दर्भ	118
	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	121

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य हेमचन्द्र-रचित
सूत्रों पर आधारित
अपभ्रंश-हिन्दी-व्याकरण

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

'अपभ्रंश-हिन्दी-व्याकरण' अध्ययनार्थियों के हाथों में समर्पित करते हुए हमें हर्ष का अनुभव हो रहा है।

तीर्थंकर महावीर ने जनभाषा 'प्राकृत' में उपदेश देकर सामान्यजन के लिए विकास का मार्ग प्रशस्त किया। प्राकृत भाषा ही अपभ्रंश के रूप में विकसित होती हुई प्रादेशिक भाषाओं एवं हिन्दी का स्त्रोत बनी। अतः हिन्दी एवं अन्य सभी उत्तर भारतीय भाषाओं के विकास के इतिहास के अध्ययन के लिए 'अपभ्रंश भाषा' का अध्ययन आवश्यक है।

'अपभ्रंश ईसा की लगभग सातवीं से तेरहवीं शताब्दी तक सम्पूर्ण उत्तर भारत की सामान्य लोक-जीवन के परस्पर व्यवहार की बोली रही है।' हमारे देश में प्राचीनकाल से ही लोकभाषाओं में साहित्य-रचना होती रही है। **'अपभ्रंश'** भी एक ऐसी ही लोकभाषा/जनभाषा थी जिसमें जीवन की सभी विधाओं में पुष्कलमात्रा में साहित्य रचा गया। अपभ्रंश साहित्य की विशालता, लोकप्रियता और महत्ता के कारण ही आचार्य हेमचन्द्र ने अपने 'प्राकृत-व्याकरण' के चतुर्थ पाद में सूत्र संख्या 329 से 446 तक स्वतन्त्र रूप से अपभ्रंश भाषा की व्याकरण-रचना की।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि अपभ्रंश भारतीय आर्यभाषाओं (उत्तर-भारतीय भाषाओं) की जननी है, उनके विकास की एक अवस्था है। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार- 'साहित्यिक परम्परा की दृष्टि से विचार किया जाए तो अपभ्रंश के सभी काव्यरूपों की परम्परा हिन्दी में ही सुरक्षित है।' द्विवेदी जी ने तो अपभ्रंश को हिन्दी की 'प्राणधारा' कहा है। हिन्दी एवं अन्य सभी उत्तर-भारतीय भाषाओं के इतिहास को जानने के लिये अपभ्रंश का अध्ययन आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। अतः राष्ट्रभाषा हिन्दी सहित आधुनिक भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ में यह कहना कि अपभ्रंश का अध्ययन राष्ट्रीय चेतना और एकता का पोषक है उचित प्रतीत होता है।

अपभ्रंश साहित्य के अध्ययन-अध्यापन एवं प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी द्वारा संचालित 'जैनविद्या संस्थान' के अन्तर्गत अपभ्रंश साहित्य अकादमी की स्थापना सन् 1988 में की गई। अकादमी का प्रयास है- अपभ्रंश के अध्ययन-अध्यापन को सशक्त करके उसके सही रूप को सामने रखना जिससे प्राचीन साहित्यिक-निधि के साथ-साथ आधुनिक आर्यभाषाओं के स्वभाव और उनकी सम्भावनाएँ भी स्पष्ट हो सकें।

वर्तमान में अपभ्रंश भाषा के अध्ययन के लिए पत्राचार के माध्यम से अपभ्रंश सर्टिफिकेट व अपभ्रंश डिप्लामो पाठ्यक्रम संचालित हैं, ये दोनों पाठ्यक्रम राजस्थान विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त हैं।

किसी भी भाषा को सीखने, जानने, समझने के लिए उसके रचनात्मक स्वरूप/संरचना को जानना आवश्यक है। अपभ्रंश के अध्ययन के लिये भी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उसकी रचना-प्रक्रिया एवं व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। अपभ्रंश भाषा को सीखने-समझने को ध्यान में रखकर ही 'अपभ्रंश रचना सौरभ', 'अपभ्रंश अभ्यास सौरभ', 'अपभ्रंश काव्य सौरभ', 'प्रौढ अपभ्रंश रचना सौरभ', 'अपभ्रंश-व्याकरण' 'अपभ्रंश अभ्यास उत्तर पुस्तक' 'अपभ्रंश-व्याकरण एवं छंद-अलंकार अभ्यास उत्तर पुस्तक' आदि पुस्तकों का प्रकाशन किया जा चुका है। **'अपभ्रंश-हिन्दी-व्याकरण'** इसी क्रम का प्रकाशन है।

'अपभ्रंश-हिन्दी-व्याकरण' अपभ्रंश भाषा को सीखने-समझने की दिशा में प्रथम व अनूठा प्रयास है। इसका प्रस्तुतिकरण अत्यन्त सहज, सरल, सुबोध एवं नवीन शैली में किया गया है जो विद्यार्थियों के लिए अत्यन्त उपयोगी होगा। इस पुस्तक में अपभ्रंश के संज्ञा-सर्वनाम विभक्तियों, क्रिया-रूपों, कृदन्तों, स्वार्थिक प्रत्ययों, प्रेरणार्थक प्रत्ययों, अव्ययों आदि को हिन्दी भाषा में सरलता से समझाने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक विश्वविद्यालयों के हिन्दी, संस्कृत, इतिहास, राजस्थानी आदि विभागों के अध्ययनार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी आशा है।

यहाँ यह जानना आवश्यक है कि संस्कृत-ज्ञान के अभाव में भी अध्ययनार्थी **'अपभ्रंश-हिन्दी-व्याकरण'** के माध्यम से अपभ्रंश भाषा का समुचित ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

श्रीमती शकुन्तला जैन एम.फिल. (संस्कृत) ने बड़े परिश्रम से **'अपभ्रंश-हिन्दी-व्याकरण'** को तैयार किया है जिससे अध्ययनार्थी अपभ्रंश भाषा को सीखने में अनवरत उत्साह बनाये रख सकेंगे। अतः वे हमारी बधाई की पात्र हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुस्तक-प्रकाशन के लिए अपभ्रंश साहित्य अकादमी के विद्वानों विशेषतया श्रीमती शकुन्तला जैन के आभारी हैं जिन्होंने '**अपभ्रंश- हिन्दी-व्याकरण**' लिखकर अपभ्रंश के पठन-पाठन को सुगम बनाने का प्रयास किया है। पृष्ठ संयोजन के लिए फ्रेण्ड्स कम्प्यूटर्स एवं मुद्रण के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि. धन्यवादार्ह है।

जस्टिस नगेन्द्र कुमार जैन	**प्रकाशचन्द्र जैन**	**डॉ. कमलचन्द सोगाणी**
अध्यक्ष	मंत्री	संयोजक
प्रबन्धकारिणी कमेटी		जैनविद्या संस्थान समिति
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी		जयपुर

तीर्थंकर श्रेयांसनाथ मोक्ष कल्याणक दिवस
श्रावण शुक्ला पूर्णिमा
वीर निर्वाण संवत्-2538
02.08.2012

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रारम्भिक

अपभ्रंश भाषा के सम्बन्ध में निम्नलिखित सामान्य जानकारी आवश्यक है-

अपभ्रंश की वर्णमाला

स्वर- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ।

व्यंजन- क, ख, ग, घ, ङ।

च, छ, ज, झ,ञ।

ट, ठ, ड, ढ, ण।

त, थ, द, ध, न।

प, फ, ब, भ, म।

य, र, ल, व।

स, ह।

ं , ँ

यहाँ ध्यान देने योग्य है कि असंयुक्त अवस्था में **ङ** और **ञ** का प्रयोग अपभ्रंश भाषा में नहीं पाया जाता। हेमचन्द्र कृत अपभ्रंश व्याकरण में **ङ** और **ञ** का संयुक्त प्रयोग उपलब्ध है। न का भी संयुक्त और असंयुक्त अवस्था में प्रयोग देखा जाता है। **ङ, ञ, न** के स्थान पर संयुक्त अवस्था में अनुस्वार भी विकल्प से होता है।

वचन

अपभ्रंश भाषा में दो ही वचन होते हैं- एकवचन और बहुवचन।

लिंग

अपभ्रंश भाषा में तीन लिंग होते हैं- पुल्लिग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग।

पुरुष

अपभ्रंश भाषा में तीन पुरुष होते हैं- उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विभक्ति

अपभ्रंश भाषा में संज्ञा में आठ विभक्तियाँ होती हैं और सर्वनाम में सात विभक्तियाँ होती हैं। सर्वनाम में संबोधन विभक्ति नहीं होती है।

	विभक्ति	प्रत्यय-चिह्न
1.	प्रथमा	ने
2.	द्वितीया	को
3.	तृतीया	से, (के द्वारा)
4.	चतुर्थी	के लिए
5.	पंचमी	से (पृथक् अर्थ में)
6.	षष्ठी	का, के, की
7.	सप्तमी	में, पर
8.	सम्बोधन	हे

अपभ्रंश भाषा में चतुर्थी विभक्ति और षष्ठी विभक्ति में एक जैसे प्रत्यय होते हैं।

क्रिया

अपभ्रंश भाषा में दो प्रकार की क्रियाएँ होती हैं- सकर्मक और अकर्मक।

काल

अपभ्रंश भाषा में चार प्रकार के काल वर्णित हैं-

1. वर्तमानकाल 2. भूतकाल
3. भविष्यत्काल 4. विधि एवं आज्ञा

अपभ्रंश भाषा में भूतकाल को व्यक्त करने के लिये भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग बहुलता से किया गया है।

शब्द

अपभ्रंश भाषा में छह प्रकार के शब्द पाए जाते हैं-

1. अकारान्त 2. आकारान्त
3. इकारान्त 4. ईकारान्त
5. उकारान्त 6. ऊकारान्त

◆◆◆

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अपभ्रंश–हिन्दी–व्याकरण
में प्रयुक्त
संज्ञा शब्द

(क) पुल्लिग शब्द – देव, हरि, गामणी, साहु, सयंभू
(ख) नपुंसकलिंग शब्द – कमल, वारि, महु
(ग) स्त्रीलिंग शब्द – कहा, मइ, लच्छी, धेणु, बहू

पुल्लिग

अकारान्त पुल्लिग – **देव**
इकारान्त पुल्लिग – **हरि**
ईकारान्त पुल्लिग – **गामणी**
उकारान्त पुल्लिग – **साहु**
ऊकारान्त पुल्लिग – **सयंभू**

नपुंसकलिंग

अकारान्त नपुंसकलिंग – **कमल**
इकारान्त नपुंसकलिंग – **वारि**
उकारान्त नपुंसकलिंग – **महु**

स्त्रीलिंग

आकारान्त स्त्रीलिंग – **कहा**
इकारान्त स्त्रीलिंग – **मइ**
ईकारान्त स्त्रीलिंग – **लच्छी**
उकारान्त स्त्रीलिंग – **धेणु**
ऊकारान्त स्त्रीलिंग – **बहू**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संज्ञा शब्दों के विभक्ति प्रत्यय

अकारान्त (पु.,नपुं.)

(क) **प्रथमा एकवचन 1/1** (ख) **द्वितीया एकवचन 2/1**

1. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति एकवचन व द्वितीया विभक्ति एकवचन में **'उ'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

प्रथमा एकवचन 1/1

(क) देव (पु.) (देव+उ) = **देवु** (प्रथमा एकवचन)
कमल (नपुं.)(कमल+उ) = **कमलु** (प्रथमा एकवचन)

द्वितीया एकवचन 2/1

(ख) देव (पु.) (देव+उ) = **देवु** (द्वितीया एकवचन)
कमल (नपुं.) (कमल+उ) = **कमलु** (द्वितीया एकवचन)

अकारान्त (पु.) प्रथमा एकवचन 1/1

2. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति एकवचन में <u>विकल्प से</u> **'ओ'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है। जैसे-
देव (पु.) (देव+ओ) = **देवो** (प्रथमा एकवचन)
अन्य रूप - **देव, देवा, देवु**

अकारान्त (पु.,नपुं.) तृतीया एकवचन 3/1

3. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति एकवचन में अन्त्य **'अ'** का **'ए'** करके उसमें **'ण'**, **'णं'** और **अनुस्वार (ं)** जोड़े जाते हैं। जैसे-
देव (पु.) (देवे+ण/णं) = **देवेण/देवेणं** (तृतीया एकवचन)
(देवे+ं) = **देवें** (तृतीया एकवचन)
कमल (नपुं.) (कमले+ण/णं) = **कमलेण/कमलेणं** (तृतीया एकवचन)
(कमले+ं) = **कमलें** (तृतीया एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त (पु.,नपुं.) सप्तमी एकवचन 7/1

4. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'इ'** और **'ए'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देव+इ) = **देवि** (सप्तमी एकवचन)

(देव+ए) = **देवे** (सप्तमी एकवचन)

कमल (नपुं.)(कमल+इ) = **कमलि** (सप्तमी एकवचन)

(कमल+ए) = **कमले** (सप्तमी एकवचन)

अकारान्त (पु.,नपुं.) तृतीया बहुवचन 3/2

5. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति बहुवचन में अन्त्य **'अ'** का विकल्प से **'ए'** करके उसमें **'हिं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

देव (पु.) (देवे+हिं) = **देवेहिं** (तृतीया बहुवचन)

कमल (नपुं.)(कमले+हिं) = **कमलेहिं** (तृतीया बहुवचन)

अन्य रूप-

देव (पु.) (देव+हिं) = **देवहिं** (तृतीया बहुवचन)

कमल (नपुं.)(कमल+हिं) = **कमलहिं** (तृतीया बहुवचन)

अकारान्त (पु.,नपुं.) पंचमी एकवचन 5/1

6. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति एकवचन में **'हे'** और **'हु'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं।जैसे-

देव (पु.) (देव+हे) = **देवहे** (पंचमी एकवचन)

(देव+हु) = **देवहु** (पंचमी एकवचन)

कमल (नपुं.)(कमल+हे) = **कमलहे** (पंचमी एकवचन)

(कमल+हु) = **कमलहु** (पंचमी एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त (पु.,नपुं.) पंचमी बहुवचन 5/2

7. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति बहुवचन में **'हुं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

देव (पु.) (देव+हुं) = **देवहुं** (पंचमी बहुवचन)

कमल (नपुं.)(कमल+हुं) = **कमलहुं** (पंचमी बहुवचन)

अकारान्त (पु.,नपुं.) षष्ठी एकवचन 6/1

8. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति एकवचन में **'सु'**, **'हो'** और **'स्सु'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

देव (पु.) (देव+सु) = **देवसु** (षष्ठी एकवचन)

(देव+हो) = **देवहो** (षष्ठी एकवचन)

(देव+स्सु) = **देवस्सु** (षष्ठी एकवचन)

कमल (नपुं.) (कमल+सु) = **कमलसु** (षष्ठी एकवचन)

(कमल+हो) = **कमलहो** (षष्ठी एकवचन)

(कमल+स्सु) = **कमलस्सु** (षष्ठी एकवचन)

अकारान्त (पु.,नपुं.) षष्ठी बहुवचन 6/2

9. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति बहुवचन में **'हं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

देव (पु.) (देव+हं) = **देवहं** (षष्ठी बहुवचन)

कमल (नपुं.)(कमल+हं) = **कमलहं** (षष्ठी बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)
इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

(क) **षष्ठी बहुवचन 6/2** (ख) **सप्तमी बहुवचन 7/2**

10. अपभ्रंश भाषा में इ-ईकारान्त व उ-ऊकारान्त पुल्लिंग और इकारान्त व उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति बहुवचन में '**हुं**' और '**हं**' प्रत्यय तथा सप्तमी विभक्ति बहुवचन में '**हुं**' प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

षष्ठी बहुवचन 6/2

(क) हरि (पु.) (हरि+हुं) = **हरिहुं** (षष्ठी बहुवचन)
(हरि+हं) = **हरिहं** (षष्ठी बहुवचन)

गामणी (पु.)(गामणी+हुं) = **गामणीहुं** (षष्ठी बहुवचन)
(गामणी+हं) = **गामणीहं** (षष्ठी बहुवचन)

साहु (पु.) (साहु+हुं) = **साहुहुं** (षष्ठी बहुवचन)
(साहु+हं) = **साहुहं** (षष्ठी बहुवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+हुं) = **सयंभूहुं** (षष्ठी बहुवचन)
(सयंभू+हं) = **संयभूहं** (षष्ठी बहुवचन)

वारि (नपुं.)(वारि+हुं) = **वारिहुं** (षष्ठी बहुवचन)
(वारि+हं) = **वारिहं** (षष्ठी बहुवचन)

महु (नपुं.) (महु+हुं) = **महुहुं** (षष्ठी बहुवचन)
(महु+हं) = **महुहं** (षष्ठी बहुवचन)

सप्तमी बहुवचन 7/2

(ख) हरि (पु.) (हरि+हुं) = **हरिहुं** (सप्तमी बहुवचन)

गामणी (पु.) (गामणी+हुं) = **गामणीहुं** (सप्तमी बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

साहु (पु.) (साहु+हुं) = **साहुहुं** (सप्तमी बहुवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+हुं) = **सयंभूहुं** (सप्तमी बहुवचन)

वारि (नपुं.) (वारि+हुं) = **वारिहुं** (सप्तमी बहुवचन)

महु (नपुं.) (महु+हुं) = **महुहुं** (सप्तमी बहुवचन)

इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)
इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

(क) **पंचमी एकवचन 5/1** (ख) **पंचमी बहुवचन 5/2** (ग) **सप्तमी एकवचन 7/1**

11. अपभ्रंश भाषा में इ-ईकारान्त व उ-ऊकारान्त पुल्लिंग और इकारान्त व उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के पंचमी विभक्ति एकवचन में **'हे'**, पंचमी विभक्ति बहुवचन में **'हुं'** तथा सप्तमी एकवचन में **'हि'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

पंचमी एकवचन 5/1

(क) हरि (पु.) (हरि+हे) = **हरिहे** (पंचमी एकवचन)

गामणी (पु.)(गामणी+हे) = **गामणीहे** (पंचमी एकवचन)

साहु (पु.) (साहु+हे) = **साहुहे** (पंचमी एकवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+हे) = **सयंभूहे** (पंचमी एकवचन)

वारि (नपुं.)(वारि+हे) = **वारिहे** (पंचमी एकवचन)

महु (नपुं.) (महु+हे) = **महुहे** (पंचमी एकवचन)

पंचमी बहुवचन 5/2

(ख) हरि (पु.) (हरि+हुं) = **हरिहुं** (पंचमी बहुवचन)

गामणी (पु.)(गामणी+हुं) = **गामणीहुं** (पंचमी बहुवचन)

साहु (पु.) (साहु+हुं) = **साहुहुं** (पंचमी बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सयंभू (पु.) (सयंभू+हुं) = **सयंभूहुं** (पंचमी बहुवचन)

वारि (नपुं.) (वारि+हुं) = **वारिहुं** (पंचमी बहुवचन)

महु (नपुं.) (महु+हुं) = **महुहुं** (पंचमी बहुवचन)

सप्तमी एकवचन 7/1

(ग) हरि (पु.) (हरि+हि) = **हरिहि** (सप्तमी एकवचन)

गामणी (पु.) (गामणी+हि) = **गामणीहि** (सप्तमी एकवचन)

साहु (पु.) (साहु+हि) = **साहुहि** (सप्तमी एकवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+हि) = **सयंभूहि** (सप्तमी एकवचन)

वारि (नपुं.) (वारि+हि) = **वारिहि** (सप्तमी एकवचन)

महु (नपुं.) (महु+हि) = **महुहि** (सप्तमी एकवचन)

इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)

इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

तृतीया एकवचन 3/1

12. अपभ्रंश भाषा में इ-ईकारान्त व उ-ऊकारान्त पुल्लिंग और इकारान्त व उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति एकवचन में **'एं', 'ण', 'णं'** और **'अनुस्वार' (ं)** जोड़े जाते हैं। जैसे-

हरि (पु.) (हरि+एं) = **हरिएं** (तृतीया एकवचन)

(हरि+ण/णं) = **हरिण/हरिणं** (तृतीया एकवचन)

(हरि+ं) = **हरिं** (तृतीया एकवचन)

गामणी (पु.) (गामणी+एं) = **गामणीएं** (तृतीया एकवचन)

(गामणी+ण/णं) = **गामणीण/गामणीणं** (तृतीया एकवचन)

(गामणी+ं) = **गामणीं** (तृतीया एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

साहु (पु.) (साहु+एं) = **साहुएं** (तृतीया एकवचन)

(साहु+ण/णं) = **साहुण/साहुणं** (तृतीया एकवचन)

(साहु+ं) = **साहुं** (तृतीया एकवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+एं) = **सयंभूएं** (तृतीया एकवचन)

(सयंभू+ण/णं) = **सयंभूण/सयंभूणं** (तृतीया एकवचन)

(सयंभू+ं) = **सयंभूं** (तृतीया एकवचन)

वारि (नपुं.)(वारि+एं) = **वारिएं** (तृतीया एकवचन))

(वारि+ण/णं) = **वारिण/वारिणं** (तृतीया एकवचन)

(वारि+ं) = **वारिं** (तृतीया एकवचन)

महु (नपुं.) (महु+एं) = **महुएं** (तृतीया एकवचन)

(महु+ण/णं) = **महुण/महुणं** (तृतीया एकवचन)

(महु+ं) = **महुं** (तृतीया एकवचन)

अकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)

(क) **प्रथमा एकवचन 1/1** (ख) **प्रथमा बहुवचन 1/2**

(ग) **द्वितीया एकवचन 2/1** (घ) **द्वितीया बहुवचन 2/2**

13. (i) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति एकवचन व प्रथमा विभक्ति बहुवचन तथा द्वितीया विभक्ति एकवचन व द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'शून्य'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

प्रथमा एकवचन 1/1

(क) देव (पु.) (देव+0) = **देव** (प्रथमा एकवचन)

हरि (पु.) (हरि+0) = **हरि** (प्रथम एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गामणी (पु.) (गामणी+0) = **गामणी** (प्रथमा एकवचन)

साहु (पु.) (साहु+0) = **साहु** (प्रथमा एकवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+0) = **सयंभू** (प्रथमा एकवचन)

प्रथमा बहुवचन 1/2

(ख) देव (पु.) (देव+0) = **देव** (प्रथमा बहुवचन)

हरि (पु.) (हरि+0) = **हरि** (प्रथमा बहुवचन)

गामणी (पु.) (गामणी+0) = **गामणी** (प्रथमा बहुवचन)

साहु (पु.) (साहु+0) = **साहु** (प्रथमा बहुवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+0) = **सयंभू** (प्रथमा बहुवचन)

द्वितीया एकवचन 2/1

(ग) देव (पु.) (देव+0) = **देव** (द्वितीया एकवचन)

हरि (पु.) (हरि+0) = **हरि** (द्वितीया एकवचन)

गामणी (पु.) (गामणी+0) = **गामणी** (द्वितीया एकवचन)

साहु (पु.) (साहु+0) = **साहु** (द्वितीया एकवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+0) = **सयंभू** (द्वितीया एकवचन)

द्वितीया बहुवचन 2/2

(घ) देव (पु.)(देव+0) = **देव** (द्वितीया बहुवचन)

हरि (पु.) (हरि+0) = **हरि** (द्वितीया बहुवचन)

गामणी (पु.)(गामणी+0) = **गामणी** (द्वितीया बहुवचन)

साहु (पु.) (साहु+0) = **साहु** (द्वितीया बहुवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+0) = **सयंभू** (द्वितीया बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

(क) **प्रथमा एकवचन 1/1** (ख) **प्रथमा बहुवचन 1/2**

(ग) **द्वितीया एकवचन 2/1** (घ) **द्वितीया बहु वचन 2/2**

(ii) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति एकवचन व प्रथमा विभक्ति बहुवचन तथा द्वितीया विभक्ति एकवचन व द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'शून्य'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

प्रथमा एकवचन 1/1

(क) कमल (नपुं.)(कमल+0) = **कमल** (प्रथमा एकवचन)

वारि (नपुं.)(वारि+0) = **वारि** (प्रथमा एकवचन)

महु (नपुं.) (महु+0) = **महु** (प्रथमा एकवचन)

प्रथमा बहुवचन 1/2

(ख) कमल (नपुं.)(कमल+0) = **कमल** (प्रथमा बहुवचन)

वारि (नपुं.)(वारि+0) = **वारि** (प्रथमा बहुवचन)

महु (नपुं.) (महु+0) = **महु** (प्रथमा बहुवचन)

द्वितीया एकवचन 2/1

(ग) कमल (नपुं.) (कमल+0) = **कमल** (द्वितीया एकवचन)

वारि (नपुं.) (वारि+0) = **वारि** (द्वितीया एकवचन)

महु (नपुं.) (महु+0) = **महु** (द्वितीया एकवचन)

द्वितीया बहुवचन 2/2

(घ) कमल (नपुं.) (कमल+0) = **कमल** (द्वितीया बहुवचन)

वारि (नपुं.)(वारि+0) = **वारि** (द्वितीया बहुवचन)

महु (नपुं.) (महु+0) = **महु** (द्वितीया बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)

(क) प्रथमा एकवचन 1/1 (ख) प्रथमा बहुवचन 1/2

(ग) द्वितीया एकवचन 2/1 (घ) द्वितीया बहुवचन 2/2

(iii) अपभ्रंश भाषा में आकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति एकवचन व प्रथमा विभक्ति बहुवचन तथा द्वितीया विभक्ति एकवचन व द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'शून्य'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

प्रथमा एकवचन 1/1

(क) कहा (स्त्री.) (कहा+0) = **कहा** (प्रथमा एकवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+0) = **मइ** (प्रथमा एकवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+0) = **लच्छी** (प्रथमा एकवचन)

धेणु (स्त्री.) (धेणु+0) = **धेणु** (प्रथमा एकवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+0) = **बहू** (प्रथमा एकवचन)

प्रथमा बहुवचन 1/2

(ख) कहा (स्त्री.) (कहा+0) = **कहा** (प्रथमा बहुवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+0) = **मइ** (प्रथमा बहुवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+0) = **लच्छी** (प्रथमा बहुवचन)

धेणु (स्त्री.) (धेणु+0) = **धेणु** (प्रथमा बहुवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+0) = **बहू** (प्रथमा बहुवचन)

द्वितीया एकवचन 2/1

(ग) कहा (स्त्री.) (कहा+0) = **कहा** (द्वितीया एकवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+0) = **मइ** (द्वितीया एकवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+0) = **लच्छी** (द्वितीया एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धेणु (स्त्री.) (धेणु+0) = **धेणु** (द्वितीया एकवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+0) = **बहू** (द्वितीया एकवचन)

द्वितीया बहुवचन 2/2

(घ) कहा (स्त्री.) (कहा+0) = **कहा** (द्वितीया बहुवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+0) = **मइ** (द्वितीया बहुवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+0) = **लच्छी** (द्वितीया बहुवचन)

धेणु (स्त्री.) (धेणु+0) = **धेणु** (द्वितीया बहुवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+0) = **बहू** (द्वितीया बहुवचन)

अकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)

(कं) षष्ठी एकवचन 6/1 (ख) षष्ठी बहुवचन 6/2

14. (i) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति एकवचन व षष्ठी विभक्ति बहुवचन में **'शून्य'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

षष्ठी एकवचन 6/1

(क) देव (पु.) (देव+0) = **देव** (षष्ठी एकवचन)

हरि (पु.) (हरि+0) = **हरि** (षष्ठी एकवचन)

गामणी (पु.) (गामणी+0) = **गामणी** (षष्ठी एकवचन)

साहु (पु.) (साहु+0) = **साहु** (षष्ठी एकवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+0) = **सयंभू** (षष्ठी एकवचन)

षष्ठी बहुवचन 6/2

(ख) देव (पु.) (देव+0) = **देव** (षष्ठी बहुवचन)

हरि (पु.) (हरि+0) = **हरि** (षष्ठी बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गामणी (पु.) (गामणी+0) = **गामणी** (षष्ठी बहुवचन)

साहु (पु.) (साहु+0) = **साहु** (षष्ठी बहुवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+0) = **सयंभू** (षष्ठी बहुवचन)

अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

(क) **षष्ठी एकवचन 6/1** (ख) **षष्ठी बहुवचन 6/2**

(ii) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति एकवचन व षष्ठी विभक्ति बहुवचन में **'शून्य'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

(क) कमल (नपुं.)(कमल+0) = **कमल** (षष्ठी एकवचन)

वारि (नपुं.)(वारि+0) = **वारि** (षष्ठी एकवचन)

महु (नपुं.) (महु+0) = **महु** (षष्ठी एकवचन)

षष्ठी बहुवचन 6/2

(ख) कमल (नपुं.) (कमल+0) = **कमल** (षष्ठी बहुवचन)

वारि (नपुं.)(वारि+0) = **वारि** (षष्ठी बहुवचन)

महु (नपुं.) (महु+0) = **महु** (षष्ठी बहुवचन)

आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)

(क) **षष्ठी एकवचन 6/1** (ख) **षष्ठी बहुवचन 6/2**

(iii) अपभ्रंश भाषा में आकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति एकवचन व षष्ठी विभक्ति बहुवचन में **'शून्य'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

षष्ठी एकवचन 6/1

(क) कहा (स्त्री.)(कहा+0) = **कहा** (षष्ठी एकवचन)
मइ (स्त्री.) (मइ+0) = **मइ** (षष्ठी एकवचन)
लच्छी (स्त्री.)(लच्छी+0) = **लच्छी** (षष्ठी एकवचन)
धेणु (स्त्री.)(धेणु+0) = **धेणु** (षष्ठी एकवचन)
बहू (स्त्री.) (बहू+0) = **बहू** (षष्ठी एकवचन)

षष्ठी बहुवचन 6/2

(ख) कहा (स्त्री.) (कहा+0) = **कहा** (षष्ठी बहुवचन)
मइ (स्त्री.) (मइ+0) = **मइ** (षष्ठी बहुवचन)
लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+0) = **लच्छी** (षष्ठी बहुवचन)
धेणु (स्त्री.) (धेणु+0) = **धेणु** (षष्ठी बहुवचन)
बहू (स्त्री.) (बहू+0) = **बहू** (षष्ठी बहुवचन)

अकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)

अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)

संबोधन बहुवचन 8/2

15.(i) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, इ- ईकारान्त और उ-ऊकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के संबोधन बहुवचन में **'हो'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। संबोधन के अन्य रूप प्रथमा विभक्ति एकवचन और बहुवचन के अनुरूप होंगे जिन्हें परिशिष्ट-1 से समझा जा सकता है। जैसे-

संबोधन बहुवचन (पु.) 8/2

देव (पु.) (देव+हो) = **देवहो** (संबोधन बहुवचन)
हरि (पु.) (हरि+हो) = **हरिहो** (संबोधन बहुवचन)
गामणी (पु.) (गामणी+हो) = **गामणीहो** (संबोधन बहुवचन)
साहु (पु.) (साहु+हो) = **साहुहो** (संबोधन बहुवचन)
सयंभू (पु.) (सयंभू+हो) = **सयंभूहो** (संबोधन बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ii) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के संबोधन बहुवचन में **'हो'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। संबोधन के अन्य रूप प्रथमा विभक्ति एकवचन और बहुवचन के अनुरूप होंगे जिन्हें परिशिष्ट-1 से समझा जा सकता है। जैसे-

संबोधन बहुवचन (नपुं.) 8/2

कमल (नपुं.)(कमल+हो) = **कमलहो** (संबोधन बहुवचन)

वारि (नपुं.)(वारि+हो) = **वारिहो** (संबोधन बहुवचन)

महु (नपुं.) (महु+हो) = **महुहो** (संबोधन बहुवचन)

(iii) अपभ्रंश भाषा में आकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के संबोधन बहुवचन में **'हो'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। संबोधन के अन्य रूप प्रथमा विभक्ति एकवचन और बहुवचन के अनुरूप होंगे जिन्हें परिशिष्ट-1 से समझा जा सकता है। जैसे-

संबोधन बहुवचन (स्त्री.)8/2

कहा (स्त्री.)(कहा+हो) = **कहाहो** (संबोधन बहुवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+हो) = **मइहो** (संबोधन बहुवचन)

लच्छी (स्त्री.)(लच्छी+हो) = **लच्छीहो** (संबोधन बहुवचन)

धेणु (स्त्री.)(धेणु+हो) = **धेणुहो** (संबोधन बहुवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+हो) = **बहूहो** (संबोधन बहुवचन)

अकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (पु.)

(क) **तृतीया बहुवचन 3/2** (ख) **सप्तमी बहुवचन 7/2**

16.(i) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त पुल्लिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति बहुवचन तथा सप्तमी विभक्ति बहुवचन में **'हिं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तृतीया बहुवचन 3/2

(क) देव (पु.) (देव+हिं) = **देवहिं** (तृतीया बहुवचन)

हरि (पु.) (हरि+हिं) = **हरिहिं** (तृतीया बहुवचन)

गामणी (पु.)(गामणी+हिं) = **गामणीहिं** (तृतीया बहुवचन)

साहु (पु.) (साहु+हिं) = **साहुहिं** (तृतीया बहुवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+हिं) = **सयंभूहिं** (तृतीया बहुवचन)

सप्तमी बहुवचन 7/2

(ख) देव (पु.) (देव+हिं) = **देवहिं** (सप्तमी बहुवचन)

हरि (पु.) (हरि+हिं) = **हरिहिं** (सप्तमी बहुवचन)

गामणी (पु.) (गामणी+हिं) = **गामणीहिं** (सप्तमी बहुवचन)

साहु (पु.) (साहु+हिं) = **साहुहिं** (सप्तमी बहुवचन)

सयंभू (पु.) (सयंभू+हिं) = **सयंभूहिं** (सप्तमी बहुवचन)

अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

(क) तृतीया बहुवचन 3/2 (ख) सप्तमी बहुवचन 7/2

(ii) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति बहुवचन तथा सप्तमी विभक्ति बहुवचन में **'हिं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

तृतीया बहुवचन 3/2

(क) कमल (नपुं.) (कमल+हिं) = **कमलहिं** (तृतीया बहुवचन)

वारि (नपुं.) (वारि+हिं) = **वारिहिं** (तृतीया बहुवचन)

महु (नपुं.) (महु+हिं) = **महुहिं** (तृतीया बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सप्तमी बहुवचन 7/2

(ख) कमल (नपुं.) (कमल+हिं) = **कमलहिं** (सप्तमी बहुवचन)

वारि (नपुं.)(वारि+हिं) = **वारिहिं** (सप्तमी बहुवचन)

महु (नपुं.) (महु+हिं) = **महुहिं** (सप्तमी बहुवचन)

आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)

(क) तृतीया बहुवचन 3/2 (ख) सप्तमी बहुवचन 7/2

(iii) अपभ्रंश भाषा में आकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति बहुवचन तथा सप्तमी विभक्ति बहुवचन में **'हिं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

तृतीया बहुवचन 3/2

(क) कहा (स्त्री.)(कहा+हिं) = **कहाहिं** (तृतीया बहुवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+हिं) = **मइहिं** (तृतीया बहुवचन)

लच्छी (स्त्री.)(लच्छी+हिं) = **लच्छीहिं** (तृतीया बहुवचन)

धेणु (स्त्री.)(धेणु+हिं) = **धेणुहिं** (तृतीया बहुवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+हिं) = **बहूहिं** (तृतीया बहुवचन)

सप्तमी बहुवचन 7/2

(ख) कहा (स्त्री.) (कहा+हिं) = **कहाहिं** (सप्तमी बहुवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+हिं) = **मइहिं** (सप्तमी बहुवचन)

लच्छी (स्त्री.)(लच्छी+हिं) = **लच्छीहिं** (सप्तमी बहुवचन)

धेणु (स्त्री.)(धेणु+हिं) = **धेणुहिं** (सप्तमी बहुवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+हिं) = **बहूहिं** (सप्तमी बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(क) **प्रथमा बहुवचन 1/2** (ख) **द्वितीया बहुवचन 2/2**

17. अपभ्रंश भाषा में आकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के प्रथमा विभक्ति बहुवचन तथा द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'उ'** और **'ओ'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

प्रथमा बहुवचन 1/2

(क) कहा (स्त्री.) (कहा+उ) = **कहाउ** (प्रथमा बहुवचन)

(कहा+ओ) = **कहाओ** (प्रथमा बहुवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+उ) = **मइउ** (प्रथमा बहुवचन)

(मइ+ओ) = **मइओ** (प्रथमा बहुवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+उ)= **लच्छीउ** (प्रथमा बहुवचन)

(लच्छी+ओ)= **लच्छीओ** (प्रथमा बहुवचन)

धेणु (स्त्री.) (धेणु+उ) = **धेणुउ** (प्रथमा बहुवचन)

(धेणु+ओ) = **धेणुओ** (प्रथमा बहुवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+उ) = **बहूउ** (प्रथमा बहुवचन)

(बहू+ओ) = **बहूओ** (प्रथमा बहुवचन)

द्वितीया बहुवचन 2/2

(ख) कहा (स्त्री.) (कहा+उ) = **कहाउ** (द्वितीया बहुवचन)

(कहा+ओ) = **कहाओ** (द्वितीया बहुवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+उ) = **मइउ** (द्वितीया बहुवचन)

(मइ+ओ) = **मइओ** (द्वितीया बहुवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+उ)= **लच्छीउ** (द्वितीया बहुवचन)

(लच्छी+ओ)= **लच्छीओ** (द्वितीया बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धेणु (स्त्री.)(धेणु+उ) = **धेणुउ** (द्वितीया बहुवचन)

(धेणु+ओ) = **धेणुओ** (द्वितीया बहुवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+उ) = **बहूउ** (द्वितीया बहुवचन)

(बहू+ओ) = **बहूओ** (द्वितीया बहुवचन)

आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)

तृतीया एकवचन 3/1

18. अपभ्रंश भाषा में आकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के तृतीया विभक्ति एकवचन में **'ए'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

कहा (स्त्री.)(कहा+ए) = **कहाए** (तृतीया एकवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+ए) = **मइए** (तृतीया एकवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+ए) = **लच्छीए** (तृतीया एकवचन)

धेणु (स्त्री.)(धेणु+ए) = **धेणुए** (तृतीया एकवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+ए) = **बहूए** (तृतीया एकवचन)

आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)

(क) षष्ठी एकवचन 6/1

(ख) पंचमी एकवचन 5/1

19. अपभ्रंश भाषा में आकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के षष्ठी विभक्ति एकवचन तथा पंचमी विभक्ति एकवचन में **'हे'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

षष्ठी एकवचन 6/1

(क) कहा (स्त्री.)(कहा+हे) = **कहाहे** (षष्ठी एकवचन)
मइ (स्त्री.) (मइ+हे) = **मइहे** (षष्ठी एकवचन)
लच्छी (स्त्री.)(लच्छी+हे) = **लच्छीहे** (षष्ठी एकवचन)
धेणु (स्त्री.)(धेणु+हे) = **धेणुहे** (षष्ठी एकवचन)
बहू (स्त्री.) (बहू+हे) = **बहूहे** (षष्ठी एकवचन)

पंचमी एकवचन 5/1

(ख) कहा (स्त्री.) (कहा+हे) = **कहाहे** (पंचमी एकवचन)
मइ (स्त्री.) (मइ+हे) = **मइहे** (पंचमी एकवचन)
लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+हे)= **लच्छीहे** (पंचमी एकवचन)
धेणु (स्त्री.)(धेणु+हे) = **धेणुहे** (पंचमी एकवचन)
बहू (स्त्री.) (बहू+हे) = **बहूहे** (पंचमी एकवचन)

आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)

(क) षष्ठी बहुवचन 6/2

(ख) पंचमी बहुवचन 5/2

20. अपभ्रंश भाषा में आकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के षष्ठी विभक्ति बहुवचन तथा पंचमी विभक्ति बहुवचन में **'हु'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

षष्ठी बहुवचन 6/2

(क) कहा (स्त्री.)(कहा+हु) = **कहाहु** (षष्ठी बहुवचन)
मइ (स्त्री.) (मइ+हु) = **मइहु** (षष्ठी बहुवचन)
लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+हु) = **लच्छीहु** (षष्ठी बहुवचन)
धेणु (स्त्री.)(धेणु+हु) = **धेणुहु** (षष्ठी बहुवचन)
बहू (स्त्री.) (बहू+हु) = **बहूहु** (षष्ठी बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पंचमी बहुवचन 5/2

(ख) कहा (स्त्री.) (कहा+हु) = **कहाहु** (पंचमी बहुवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+हु) = **मइहु** (पंचमी बहुवचन)

लच्छी (स्त्री.) (लच्छी+हु) = **लच्छीहु** (पंचमी बहुवचन)

धेणु (स्त्री.) (धेणु+हु) = **धेणुहु** (पंचमी बहुवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+हु) = **बहूहु** (पंचमी बहुवचन)

आकारान्त, इ-ईकारान्त, उ-ऊकारान्त (स्त्री.)

सप्तमी एकवचन 7/1

21. अपभ्रंश भाषा में आकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'हिं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

कहा (स्त्री.)(कहा+हिं) = **कहाहिं** (सप्तमी एकवचन)

मइ (स्त्री.) (मइ+हिं) = **मइहिं** (सप्तमी एकवचन)

लच्छी (स्त्री.)(लच्छी+हिं) = **लच्छीहिं** (सप्तमी एकवचन)

धेणु (स्त्री.)(धेणु+हिं) = **धेणुहिं** (सप्तमी एकवचन)

बहू (स्त्री.) (बहू+हिं) = **बहूहिं** (सप्तमी एकवचन)

अकारान्त, इकारान्त, उकारान्त (नपुं.)

(क) प्रथमा बहुवचन 1/2 (ख) द्वितीया बहुवचन 2/2

22. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के प्रथमा विभक्ति बहुवचन तथा द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'इं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रथमा बहुवचन 1/2

(क) कमल (नपुं.)(कमल+इं) = **कमलइं** (प्रथमा बहुवचन)
वारि (नपुं.)(वारि+इं) = **वारिइं** (प्रथमा बहुवचन)
महु (नपुं.) (महु+इं) = **महुइं** (प्रथमा बहुवचन)

द्वितीया बहुवचन 2/2

(ख) कमल (नपुं.) (कमल+इं)= **कमलइं** (द्वितीया बहुवचन)
वारि (नपुं.) (वारि+इं) = **वारिइं** (द्वितीया बहुवचन)
महु (नपुं.) (महु+इं) = **महुइं** (द्वितीया बहुवचन)

---

*दीर्घ होने पर ह्रस्व तथा ह्रस्व होने पर दीर्घ

23. अकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त पुल्लिंग, अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त नपुंसकलिंग और आकारान्त, इ-ईकारान्त उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों में प्रथमा विभक्ति से संबोधन तक के प्रत्यय परे होने पर/रहने पर अंतिम स्वर **दीर्घ होने पर ह्रस्व तथा ह्रस्व होने पर दीर्घ** हो जाता है। (जो प्रत्यय संज्ञा शब्दों में मिलकर रूप निर्माण करते हैं अर्थात् जो परे नहीं बने रहते वहाँ यह नियम लागू नहीं होता है)

जैसे- **देवु, देवि, देवें, देवेण, देवो।**

कमलु, कमलि, कमलें, कमलेण।

* इस नियम का उपयोग इस चिह्न से संज्ञा-सर्वनाम की रूपावली में दर्शाया जायेगा।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

24. अपभ्रंश भाषा में स्वर परिवर्तन के साथ एक ही शब्द के अनेक रूप हो सकते हैं। जैसे-

बाह/बाहा/बाहु = भुजा

लिह/लीह/लेह = लकीर

पट्ठि/पिट्ठि/पुट्ठि = पीठ

नोट- अपभ्रंश भाषा में शब्द-रचना-प्रवृत्ति कहीं-कहीं प्राकृत भाषा[1] के अनुसार होती है और कहीं-कहीं पर शौरसेनी भाषा के समान भी होती है।

1. हेमचन्द्र वृत्ति 4/329

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सर्वनाम[1] शब्दों के विभक्ति प्रत्यय

अकारान्त सर्वनाम(पु., नपुं.) पंचमी एकवचन 5/1

1. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग **सव्वादि** सर्वनामों के पंचमी विभक्ति एकवचन में **'हां'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

अकारान्त सर्वनाम (पु.) पंचमी एकवचन 5/1

(क) सव्व (सब) (पु.) (सव्व+हां) = **सव्वहां** (पंचमी एकवचन)

इयर (दूसरा) (पु.) (इयर+हां) = **इयरहां** (पंचमी एकवचन)

अन्न (दूसरा) (पु.) (अन्न+हां) = **अन्नहां** (पंचमी एकवचन)

पुव्व (पहला) (पु.) (पुव्व+हां) = **पुव्वहां** (पंचमी एकवचन)

स (अपना) (पु.) (स+हां) = **सहां** (पंचमी एकवचन)

त (वह)(पु.) (त+हां) = **तहां** (पंचमी एकवचन)

ज (जो) (पु.)(ज+हां) = **जहां** (पंचमी एकवचन)

क (कौन,क्या) (पु.) (क+हां) = **कहां** (पंचमी एकवचन)

एक्क (एक) (पु.) (एक्क+हां) = **एक्कहां** (पंचमी एकवचन)

नोट-

1. जो प्रत्यय अकारान्त (पु., नपु.) व आकारान्त (स्त्री.) संज्ञा शब्दों में प्रयुक्त हुए हैं वे ही प्रत्यय अकारान्त (पु., नपु.) व आकारान्त (स्त्री.) सर्वनामों में प्रयुक्त होंगे। यद्यपि इसमें कुछ अपवाद हैं जो सर्वनामों की रूपावली से समझे जा सकते हैं।

   सर्वनाम शब्द इस प्रकार हैं- सव्व (सब), इयर (दूसरा), अन्न (दूसरा) पुव्व (पहला), स (अपना), त (वह), ज (जो), क (कौन,क्या), एक्क (एक)।

2. यहाँ सव्वादि सर्वनामों के कुछ विभक्तियों के रूप बताये जा रहे हैं। शेष विभक्तियों के रूप पुल्लिंग में **'देव'** के समान, नपुंसकलिंग में **'कमल'** के समान तथा स्त्रीलिंग में **'कहा'** के समान चलेंगे।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त सर्वनाम (नपुं.) पंचमी एकवचन 5/1

(ख) सव्व (सब) (नपुं.) (सव्व+हां) = **सव्वहां** (पंचमी एकवचन)

इयर (दूसरा) (नपुं.) (इयर+हां) = **इयरहां** (पंचमी एकवचन)

अन्न (दूसरा) (नपुं.) (अन्न+हां) = **अन्नहां** (पंचमी एकवचन)

पुव्व (पहला) (नपुं.) (पुव्व+हां) = **पुव्वहां** (पंचमी एकवचन)

स (अपना) (नपुं.) (स+हां) = **सहां** (पंचमी एकवचन)

त (वह)(नपुं.) (त+हां) = **तहां** (पंचमी एकवचन)

ज (जो) (नपुं.) (ज+हां) = **जहां** (पंचमी एकवचन)

क (कौन,क्या) (नपुं.) (क+हां) = **कहां** (पंचमी एकवचन)

एक्क (एक) (नपुं.) (एक्क+हां)= **एक्कहां** (पंचमी एकवचन)

अकारान्त सर्वनाम (पु., नपुं.) पंचमी एकवचन 5/1

2. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग **क** सर्वनाम के पंचमी विभक्ति एकवचन में **'इहे'** प्रत्यय विकल्प से जोड़ा जाता है। जैसे-

अकारान्त सर्वनाम (पु.) पंचमी एकवचन 5/1

(क) क (पु.) (क+इहे) = **किहे** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **कहां, काहां** (पंचमी एकवचन)

अकारान्त सर्वनाम (नपुं.) पंचमी एकवचन 5/1

(ख) क (नपुं.) (क+इहे) = **किहे** (पंचमी एकवचन)

अन्य रूप - **कहां, काहां** (पंचमी एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त सर्वनाम (पु., नपुं.) सप्तमी एकवचन 7/1

3. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग **सव्वादि** सर्वनामों के सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'हिं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। जैसे-

अकारान्त सर्वनाम (पु.) सप्तमी एकवचन 7/1

(क) सव्व (सब) (पु.) (सव्व+हिं) = **सव्वहिं** (सप्तमी एकवचन)
इयर (दूसरा) (पु.) (इयर+हिं) = **इयरहिं** (सप्तमी एकवचन)
अन्न (दूसरा) (पु.) (अन्न+हिं) = **अन्नहिं** (सप्तमी एकवचन)
पुव्व (पहला) (पु.) (पुव्व+हिं) = **पुव्वहिं** (सप्तमी एकवचन)
स (अपना) (पु.) (स+हिं) = **सहिं** (सप्तमी एकवचन)
त (वह) (पु.) (त+हिं) = **तहिं** (सप्तमी एकवचन)
ज (जो) (पु.) (ज+हिं) = **जहिं** (सप्तमी एकवचन)
क (कौन,क्या) (पु.) (क+हिं) = **कहिं** (सप्तमी एकवचन)
एक्क (एक) (पु.) (एक्क+हिं) = **एक्कहिं** (सप्तमी एकवचन)

अकारान्त सर्वनाम (नपुं.) सप्तमी एकवचन 7/1

(ख) सव्व (सब) (नपुं.) (सव्व+हिं) = **सव्वहिं** (सप्तमी एकवचन)
इयर (दूसरा) (नपुं.) (इयर+हिं) = **इयरहिं** (सप्तमी एकवचन)
अन्न (दूसरा) (नपुं.) (अन्न+हिं) = **अन्नहिं** (सप्तमी एकवचन)
पुव्व (पहला) (नपुं.) (पुव्व+हिं) = **पुव्वहिं** (सप्तमी एकवचन)
स (अपना) (नपुं.) (स+हिं) = **सहिं** (सप्तमी एकवचन)
त (वह) (नपुं.) (त+हिं) = **तहिं** (सप्तमी एकवचन)
ज (जो) (नपुं.) (ज+हिं) = **जहिं** (सप्तमी एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क (कौन,क्या)(नपुं.) (क+हिं) = **कहिं** (सप्तमी एकवचन)

एक्क (एक)(नपुं.) (एक्क+हिं) = **एक्कहिं** (सप्तमी एकवचन)

अकारान्त सर्वनाम (पु., नपुं.) षष्ठी एकवचन 6/1

4. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग **ज, त** और **क** सर्वनामों के षष्ठी विभक्ति एकवचन में **'आसु'** प्रत्यय विकल्प से जोड़ा जाता है। जैसे-

अकारान्त सर्वनाम (पु.) षष्ठी एकवचन 6/1

(क) ज (पु.) (ज+आसु) = **जासु** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **ज, जा, जहो, जाहो, जस्सु** (षष्ठी एकवचन)

त (पु.) (त+आसु) = **तासु** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप- **त, ता, तहो, ताहो, तस्सु** (षष्ठी एकवचन)

क (पु.) (क+आसु) = **कासु** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **क, का, कहो, काहो, कस्सु** (षष्ठी एकवचन)

अकारान्त सर्वनाम (नपुं.) षष्ठी एकवचन 6/1

(ख) ज (नपुं.) (ज+आसु) = **जासु** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **ज, जा, जहो, जाहो, जस्सु** (षष्ठी एकवचन)

त (नपुं.) (त+आसु) = **तासु** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **त, ता, तहो, ताहो, तस्सु** (षष्ठी एकवचन)

क (नपुं.) (क+आसु) = **कासु** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **क, का, कहो, काहो, कस्सु** (षष्ठी एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त सर्वनाम(स्त्री.) षष्ठी एकवचन 6/1

5. अपभ्रंश भाषा में आकारान्त स्त्रीलिंग **जा, ता** और **का** सर्वनामों के षष्ठी विभक्ति एकवचन में '**अहे**' प्रत्यय विकल्प से जोड़ा जाता है। '**अहे**' प्रत्यय जोड़ने पर **जा, ता** और **का** सर्वनामों के अन्त्य स्वर **आ** का लोप हो जाता है। जैसे-

जा (स्त्री.) (जा+अहे) = **जहे** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **जा, ज, जाहे** (षष्ठी एकवचन)

ता (स्त्री.) (ता+अहे) = **तहे** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **ता, त, ताहे** (षष्ठी एकवचन)

का (स्त्री.) (का+अहे) = **कहे** (षष्ठी एकवचन)

अन्य रूप - **का, क, काहे** (षष्ठी एकवचन)

अकारान्त सर्वनाम (पु., नपुं.)

(क) प्रथमा एकवचन 1/1 (ख) द्वितीया एकवचन 2/1

6. (i) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग **ज** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन व द्वितीया विभक्ति एकवचन में विकल्प से '**ध्रुं**' भी होता है। जैसे-

प्रथमा एकवचन 1/1

(क) ज (जो) (पु.) - **ध्रुं** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **ज, जा, जु, जो** (प्रथमा एकवचन)

ज (जो) (नपुं.) - **ध्रुं** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **जु** (प्रथमा एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीया एकवचन 2/1

(ख) ज (जो) (पु.) - **ध्रुं** (द्वितीया एकवचन)

अन्य रूप - **ज, जा, जु** (द्वितीया एकवचन)

ज (जो) (नपुं.) - **ध्रुं** (द्वितीया एकवचन)

अन्य रूप - **जु** (द्वितीया एकवचन)

आकारान्त सर्वनाम (स्त्री.)(क)प्रथमा एकवचन 1/1(ख)द्वितीया एकवचन 2/1

(ii) अपभ्रंश भाषा में आकारान्त स्त्रीलिंग **जा** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन व द्वितीया विभक्ति एकवचन में <u>विकल्प से</u> **'ध्रुं'** भी होता है। जैसे-

(क) जा (जो) (स्त्री.) - **ध्रुं** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **जु** (प्रथमा एकवचन)

(ख) जा (जो) (स्त्री.) - **ध्रुं** (द्वितीया एकवचन)

अन्य रूप - **जु** (द्वितीया एकवचन)

अकारान्त सर्वनाम (पु., नपुं.)

(क) प्रथमा एकवचन 1/1 (ख) द्वितीया एकवचन 2/1

(iii) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग और नपुंसकलिंग **त** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन व द्वितीया विभक्ति एकवचन में <u>विकल्प से</u> **'त्रं'** भी होता है। जैसे-

प्रथमा एकवचन 1/1

(क) त (वह)(पु.) - **त्रं** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **स, सा, सु, सो, तं** (प्रथमा एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

त (वह)(नपुं.) - **त्रं** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **तं** (प्रथमा एकवचन)

द्वितीया एकवचन 2/1

(ख) त (वह)(पु.) - **त्रं** (द्वितीया एकवचन)

अन्य रूप - **तं** (द्वितीया एकवचन)

त (वह)(नपुं.) - **त्रं** (द्वितीया एकवचन)

अन्य रूप - **तं** (द्वितीया एकवचन)

आकारान्त सर्वनाम (स्त्री.)

(क) प्रथमा एकवचन 1/1(ख) द्वितीया एकवचन 2/1

(iv) आकारान्त स्त्रीलिंग **ता** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन व द्वितीया विभक्ति एकवचन में <u>विकल्प से</u> **'त्रं'** भी होता है। जैसे-

(क) ता (स्त्री.) (वह) - **त्रं** (प्रथमा एकवचन)

अन्य रूप - **सा, स, तं** (प्रथमा एकवचन)

(ख) ता (स्त्री.) (वह) - **त्रं** (द्वितीया एकवचन)

अन्य रूप - **तं** (द्वितीया एकवचन)

अकारान्त सर्वनाम (नपुं.)

प्रथमा एकवचन 1/1, द्वितीया एकवचन 2/1

7. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त नपुंसकलिंग **इम** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन व द्वितीया विभक्ति एकवचन में **'इमु'** होता है। जैसे-

इम (यह)(नपुं.) - **इमु** (प्रथमा एकवचन)

- **इमु** (द्वितीया एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

प्रथमा एकवचन 1/1, द्वितीया एकवचन 2/1

8.(i) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **एत** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन व द्वितीया विभक्ति एकवचन में **'एहो'** होता है। जैसे-

एत (यह) (पु.) - **एहो** (प्रथमा एकवचन)

- **एहो** (द्वितीया एकवचन)

अकारान्त सर्वनाम (नपुं.)

प्रथमा एकवचन 1/1, द्वितीया एकवचन 2/1

(ii) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त नपुंसकलिंग **एत** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन व द्वितीया विभक्ति एकवचन में **'एहु'** होता है। जैसे-

एत (यह)(नपुं.) - **एहु** (प्रथमा एकवचन)

- **एहु** (द्वितीया एकवचन)

आकारान्त सर्वनाम (स्त्री.)

प्रथमा एकवचन 1/1, द्वितीया एकवचन 2/1

(iii) अपभ्रंश भाषा में आकारान्त स्त्रीलिंग **एता** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन व द्वितीया विभक्ति एकवचन में **'एह'** होता है। जैसे-

एता (यह)(स्त्री.) - **एह** (प्रथमा एकवचन)

- **एह** (द्वितीया एकवचन)

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

प्रथमा बहुवचन 1/2, द्वितीया बहुवचन 2/2

9. (i) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त पुल्लिंग **एत** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति बहुवचन व द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'एइ'** होता है। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

एत (यह) (पु.) - **एइ** (प्रथमा बहुवचन)

- **एइ** (द्वितीया बहुवचन)

अकारान्त सर्वनाम (नपुं.)

प्रथमा बहुवचन 1/2, द्वितीया बहुवचन 2/2

(ii) अपभ्रंश भाषा में अकारान्त नपुंसकलिंग **एत** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति बहुवचन व द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'एइ'** होता है।जैसे-

एत (यह)(नपुं.) - **एइ** (प्रथमा बहुवचन)

- **एइ** (द्वितीया बहुवचन)

आकारान्त सर्वनाम (स्त्री.)

प्रथमा बहुवचन 1/2, द्वितीया बहुवचन 2/2

(iii) अपभ्रंश भाषा में आकारान्त स्त्रीलिंग **एता** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति बहुवचन व द्वितीया बहुवचन में **'एइ'** होता है। जैसे-

एता (यह)(स्त्री.) - **एइ** (प्रथमा बहुवचन)

- **एइ** (द्वितीया बहुवचन)

अकारान्त सर्वनाम (पु.)

प्रथमा बहुवचन 1/2, द्वितीया बहुवचन 2/2

10. (i) अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग **अमु** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति बहुवचन व द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'ओइ'** होता है। जैसे-

अमु (यह) (पु.) - **ओइ** (प्रथमा बहुवचन)

- **ओइ** (द्वितीया बहुवचन)

अकारान्त सर्वनाम (नपुं.)

प्रथमा बहुवचन 1/2, द्वितीया बहुवचन 2/2

(ii) अपभ्रंश भाषा में नपुंसकलिंग **अमु** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति बहुवचन व द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'ओइ'** होता है। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अमु(यह)(नपुं.) - **ओइ** (प्रथमा बहुवचन)

- **ओइ** (द्वितीया बहुवचन)

आकारान्त सर्वनाम (स्त्री.)

प्रथमा बहुवचन 1/2, द्वितीया बहुवचन 2/2

(iii) अपभ्रंश भाषा में स्त्रीलिंग **अमु** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति बहुवचन व द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'ओइ'** होता है। जैसे-

अमु (यह)(स्त्री.)- **ओइ** (प्रथमा बहुवचन)

- **ओइ** (द्वितीया बहुवचन)

---

11. अपभ्रंश भाषा में यह के अर्थ में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग **'आय'** और स्त्रीलिंग **'आया'** का प्रयोग भी होता है।

नोट : पुल्लिंग, नपुंसकलिंग में **आय** के रूप **सव्व** की तरह तथा स्त्रीलिंग में **आया** के रूप **सव्वा** (कहा) की तरह चलेंगे।

---

12. अपभ्रंश भाषा में सब के अर्थ में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग **'साह'** और स्त्रीलिंग **'साहा'** का प्रयोग भी होता है।

नोट : पुल्लिंग, नपुंसकलिंग में **साह** के रूप **सव्व** की तरह तथा स्त्रीलिंग **में साहा** के रूप **सव्वा** (कहा) की तरह चलेंगे।

---

13. (i) अपभ्रंश भाषा में कौन, क्या के अर्थ में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग में **'काइं'** का प्रयोग भी होता है।

नोट : काइं सभी विभक्तियों (प्रथमा से सप्तमी तक) व दोनों वचनों (एकवचन व बहुवचन) में **काइं** ही रहता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ii) अपभ्रंश भाषा में कौन, क्या के अर्थ में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग **'कवण'** और स्त्रीलिंग **'कवणा'** का प्रयोग भी होता है।

नोट: पुल्लिंग, नपुंसकलिंग में **कवण** के रूप **सव्व** की तरह तथा स्त्रीलिंग **कवणा** के रूप **सव्वा** (कहा) की तरह चलेंगे।

पुरुषवाचक सर्वनाम

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंगों में)

प्रथमा एकवचन 1/1

14. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन में **'तुहुं'** होता है।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **तुहुं** (प्रथमा एकवचन)

(क) प्रथमा बहुवचन 1/2 (ख) द्वितीया बहुवचन 2/2

15. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति बहुवचन तथा द्वितीया विभक्ति बहुवचन में **'तुम्हे'** और **'तुम्हइं'** होते हैं।

प्रथमा बहुवचन 1/2

(क) तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **तुम्हे/तुम्हइं** (प्रथमा बहुवचन)

द्वितीया बहुवचन 2/2

(ख) तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **तुम्हे/तुम्हइं** (द्वितीया बहुवचन)

(क) द्वितीया एकवचन 2/1(ख) तृतीया एकवचन 3/1(ग) सप्तमी एकवचन 7/1

16. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के द्वितीया विभक्ति एकवचन, तृतीया विभक्ति एकवचन तथा सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'पइं'** और **'तइं'** होते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीया एकवचन 2/1

(क) तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **पइं/तइं** (द्वितीया एकवचन)

तृतीया एकवचन 3/1

(ख) तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **पइं/तइं** (तृतीया एकवचन)

सप्तमी एकवचन 7/1

(ग) तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग)- **पइं/तइं** (सप्तमी एकवचन)

तृतीया बहुवचन 3/2

17. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग और नपुंसकलिंग तथा स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के तृतीया विभक्ति बहुवचन में '**तुम्हेहिं**' होता है।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **तुम्हेहिं** (तृतीया बहुवचन)

(क) पंचमी एकवचन 5/1 (ख) षष्ठी एकवचन 6/1

18. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के पंचमी विभक्ति एकवचन तथा षष्ठी विभक्ति एकवचन में '**तउ, तुज्झ** और **तुध्र**' होते हैं।

पंचमी एकवचन 5/1

(क) तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **तउ/तुज्झ/तुध्र** (पंचमी एकवचन)

षष्ठी एकवचन 6/1

(ख) तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **तउ/तुज्झ/तुध्र** (षष्ठी एकवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(क) पंचमी बहुवचन 5/2 (ख) षष्ठी बहुवचन 6/2

19. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के पंचमी विभक्ति बहुवचन तथा षष्ठी विभक्ति बहुवचन में '**तुम्हहं**' होता है।

पंचमी बहुवचन 5/2

(क) तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **तुम्हहं** (पंचमी बहुवचन)

षष्ठी बहुवचन 6/2

(ख) तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **तुम्हहं** (षष्ठी बहुवचन)

सप्तमी बहुवचन 7/2

20. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग **तुम्ह** सर्वनाम के सप्तमी विभक्ति बहुवचन में '**तुम्हासु**' होता है।

तुम्ह (तुम) (तीनों लिंग) - **तुम्हासु** (सप्तमी बहुवचन)

पुरुषवाचक सर्वनाम

अम्ह (मैं) (तीनों लिंगों में)

प्रथमा एकवचन 1/1

21. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति एकवचन में '**हउं**' होता है।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **हउं** (प्रथमा एकवचन)

(क) प्रथमा बहुवचन 1/2 (ख) द्वितीया बहुवचन 2/2

22. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के प्रथमा विभक्ति बहुवचन तथा द्वितीया विभक्ति बहुवचन में '**अम्हे**' और '**अम्हइं**' होते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रथमा बहुवचन 1/2

(क) अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **अम्हे/अम्हइं** (प्रथमा बहुवचन)

द्वितीया बहुवचन 2/2

(ख) अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **अम्हे/अम्हइं** (द्वितीया बहुवचन)

(क) द्वितीया एकवचन 2/1 (ख) तृतीया एकवचन 3/1 (ग) सप्तमी एकवचन 7/1

23. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के द्वितीया विभक्ति एकवचन, तृतीया विभक्ति एकवचन तथा सप्तमी विभक्ति एकवचन में **'मइं'** होता है।

द्वितीया एकवचन 2/1

(क) अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **मइं** (द्वितीया एकवचन)

तृतीया एकवचन 3/1

(ख) अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **मइं** (तृतीया एकवचन)

सप्तमी एकवचन 7/1

(ग) अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **मइं** (सप्तमी एकवचन)

तृतीया बहुवचन 3/2

24. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के तृतीया विभक्ति बहुवचन में **'अम्हेहिं'** होता है।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **अम्हेहिं** (तृतीया बहुवचन)

(क) पंचमी एकवचन 5/1 (ख) षष्ठी एकवचन 6/1

25. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के पंचमी विभक्ति एकवचन तथा षष्ठी विभक्ति एकवचन में **'महु'**, और **'मज्झु'** होते हैं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पंचमी एकवचन 5/1

(क) अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **महु/मज्झु** (पंचमी एकवचन)

षष्ठी एकवचन 6/1

(ख) अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **महु/मज्झु** (षष्ठी एकवचन)

(क) पंचमी बहुवचन 5/2 (ख) षष्ठी बहुवचन 6/2

26. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के पंचमी विभक्ति बहुवचन तथा षष्ठी विभक्ति बहुवचन में '**अम्हहं**' होता है।

पंचमी बहुवचन 5/2

(क) अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **अम्हहं** (पंचमी बहुवचन)

षष्ठी बहुवचन 6/2

(ख) अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **अम्हहं** (षष्ठी बहुवचन)

सप्तमी बहुवचन 7/2

27. अपभ्रंश भाषा में पुल्लिंग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग **अम्ह** सर्वनाम के सप्तमी विभक्ति बहुवचन में '**अम्हासु**' होता है।

अम्ह (मैं) (तीनों लिंग) - **अम्हासु** (सप्तमी बहुवचन)

नोट- अपभ्रंश भाषा में शब्द-रचना-प्रवृत्ति कहीं-कहीं प्राकृत भाषा[1] के अनुसार होती है और कहीं-कहीं पर शौरसेनी भाषा के मान भी होती है।

◆◆◆

1. हेमचन्द्र वृत्ति 4/329

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

क्रियाओं के कालबोधक प्रत्यय

वर्तमानकाल

उत्तम पुरुष एकवचन 1/1

1. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष एकवचन में <u>विकल्प से</u> **'उं'** प्रत्यय क्रियाओं में लगता है। जैसे-

(हस+उं) = **हसउं** = (मैं) हँसता हूँ/हँसती हूँ। (व.उ.पु.एक.)

(ठा+उं)= **ठाउं** = (मैं) ठहरता हूँ/ठहरती हूँ। (व.उ.पु.एक.)

(हो+उं)= **होउं** = (मैं) होता हूँ/होती हूँ। (व.उ.पु.एक.)

इसके अतिरिक्त वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष एकवचन में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'मि'** प्रत्यय भी उपर्युक्त क्रियाओं में लगता है। **'मि'** प्रत्यय लगने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'आ'** और **'ए'** भी हो जाता है। जैसे-

(हस+मि)=**हसमि/हसामि/हसेमि**=(मैं) हँसता हूँ/हँसती हूँ।(व.उपु.एक.)

(ठा+मि)=**ठामि** =(मैं) ठहरता हूँ/ठहरती हूँ। (व.उ.पु.एक.)

(हो+मि) = **होमि** = (मैं) होता हूँ/होती हूँ। (व.उ.पु.एक.)

उत्तम पुरुष बहुवचन 1/2

2. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष बहुवचन में <u>विकल्प से</u> **'हुं'** प्रत्यय क्रियाओं में लगता है। जैसे-

(हस+हुं) = **हसहुं** = (हम दोनों/हम सब) हँसते हैं/हँसती हैं। (व.उ.पु.बहु.)

(ठा+हुं) = **ठाहुं** = (हम दोनों/हम सब) ठहरते हैं/ठहरती हैं। (व.उ.पु.बहु.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(हो+हुं) = **होहुं** = (हम दोनों/हम सब) होते हैं/होती हैं। (व.उ.पु.बहु.)

इसके अतिरिक्त वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष बहुवचन में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'मो, मु** और **म'** प्रत्यय भी उपर्युक्त क्रियाओं में लगते हैं। **'मो, मु** और **म'** प्रत्यय लगने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'आ' 'इ'** और **'ए'** भी हो जाता है। जैसे-

(क) (हस+मो) = **हसमो/हसामो/हसिमो/हसेमो** =

(हम दोनों/हम सब) हँसते हैं/हँसती हैं। (व.उ.पु.बहु.)

(ठा+मो) = **ठामो** = (हम दोनों/हम सब)ठहरते हैं/ठहरती हैं। (व.उ.पु.बहु.)

(हो+मो) = **होमो** = (हम दोनों/हम सब) होते हैं/होती हैं। (व.उ.पु.बहु.)

(ख) (हस+मु)=**हसमु/हसामु/हसिमु/हसेमु** =

(हम दोनों/हम सब) हँसते हैं/हँसती हैं। (व.उ.पु.बहु.)

(ठा+मु)=**ठामु** =(हम दोनों/हम सब)ठहरते हैं/ठहरती हैं। (व.उ.पु.बहु.)

(हो+मु)=**होमु** = (हम सब) होते हैं/होती हैं। (व.उ.पु.बहु.)

(ग) (हस+म) = **हसम/हसाम/हसिम/हसेम** =

(हम दोनों/हम सब)हँसते हैं/हँसती हैं। (व.उ.पु.बहु.)

(ठा+म)=**ठाम** = (हम दोनों/हम सब)ठहरते हैं/ठहरती हैं। (व.उ.पु.बहु.)

(हो+म)= **होम** = (हम दोनों/हम सब) होते हैं/होती हैं। (व.उ.पु.बहु.)

मध्यम पुरुष एकवचन 2/1

3. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष एकवचन में <u>विकल्प से</u> **'हि'** प्रत्यय क्रियाओं में लगता है। जैसे-

(हस+हि) = **हसहि** = (तुम) हँसते हो/हँसती हो। (व.म.पु.एक.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ठा+हि) = **ठाहि** = (तुम) ठहरते हो/ठहरती हो। (व.म.पु.एक.)

(हो+हि) = **होहि** = (तुम)होते हो/होती हो। (व.म.पु.एक.)

इसके अतिरिक्त वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष एकवचन में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'सि और से'** प्रत्यय भी अकारान्त क्रियाओं में लगते हैं। **'सि'** प्रत्यय लगने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** भी हो जाता है।

आकारान्त व ओकारान्त आदि क्रियाओं में केवल **'सि'** प्रत्यय ही लगता है **'से'** प्रत्यय नहीं लगता है। जैसे-

(हस+सि) = **हससि/हसेसि** = (तुम) हँसते हो/हँसती हो। (व.म.पु.एक.)

(हस+से) = **हससे** = (तुम) हँसते हो/हँसती हो। (व.म.पु.एक.)

(ठा+सि)= **ठासि** = (तुम) ठहरते हो/ठहरती हो। (व.म.पु.एक.)

(हो+सि) = **होसि** (तुम) होते हो/होती हो। (व.म.पु.एक.)

मध्यम पुरुष बहुवचन 2/2

4. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष बहुवचन में विकल्प से **'हु'** प्रत्यय क्रियाओं में लगता है। जैसे-

(हस+हु) = **हसहु** = (तुम दोनों/तुम सब) हँसते हो/हँसती हो। (व.म.पु.बहु.)

(ठा+हु) = **ठाहु** = (तुम दोनों/तुम सब) ठहरते हो/ठहरती हो। (व.म.पु.बहु.)

(हो+हु) = **होहु** = (तुम दोनों/तुम सब) होते हो/होती हो।(व.म.पु.बहु.)

इसके अतिरिक्त वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष बहुवचन में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'ह और इत्था'** प्रत्यय तथा शौरसेनी भाषा के अनुसार **'ध'** प्रत्यय भी उपर्युक्त क्रियाओं में लगता है। **'ह'** ,**'इत्था'** और **'ध'** प्रत्यय लगने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** भी हो जाता है। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(क) (हस+ह)=**हसह/हसेह**=(तुम दोनों/तुम सब) हँसते हो/हँसती हो। (व.म.पु.बहु.)

(ठा+ह) = **ठाह** = (तुम दोनों/तुम सब)ठहरते हो/ठहरती हो। (व.म.पु.बहु.)

(हो+ह) = **होह** = (तुम दोनों/तुम सब) होते हो/होती हो। (व.म.पु.बहु.)

(ख) (हस+इत्था)=**हसित्था/हसेइत्था** =

(तुम दोनों/तुम सब)हँसते हो/हँसती हो। (व.म.पु.बहु.)

(ठा+इत्था)=**ठाइत्था** = (तुम दोनों/तुम सब)ठहरते हो/ठहरती हो।(व.म.पु.बहु.)

(हो+इत्था)=**होइत्था** = (तुम दोनों/तुम सब) होते हो/होती हो।(व.म.पु.बहु.)

(ग) (हस+ध)=**हसध/हसेध**=(तुम दोनों/तुम सब) हँसते हो/हँसती हो।(व.म.पु.बहु.)

(ठा+ध) = **ठाध** = (तुम दोनों/तुम सब)ठहरते हो/ठहरती हो।(व.म.पु.बहु.)

(हो+ध) = **होध** = (तुम दोनों/तुम सब) होते हो/होती हो। (व.म.पु.बहु.)

अन्य पुरुष एकवचन 3/1

5. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त क्रियाओं के वर्तमानकाल के अन्य पुरुष एकवचन में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'इ और ए'** प्रत्यय तथा शौरसेनी भाषा के अनुसार **'दि और दे'** प्रत्यय क्रियाओं में लगते हैं। **'इ'** तथा **'दि'** प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** भी हो जाता है।

आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में वर्तमानकाल के अन्य पुरुष एकवचन में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'इ'** प्रत्यय तथा शौरसेनी भाषा के अनुसार **'दि'** प्रत्यय ही क्रियाओं में लगते हैं **'ए'** तथा **'दे'** प्रत्यय इन क्रियाओं में नहीं लगते हैं। जैसे-

(हस+इ)= **हसइ/हसेइ** = (वह) हँसता है/हँसती है। (व.अ.पु.एक.)

(हस+ए) = **हसए** = (वह) हँसता है/हँसती है। (व.अ.पु.एक.)

(हस+दि)= **हसदि/हसेदि** = (वह) हँसता है/हँसती है। (व.अ.पु.एक.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(हस+दे) = **हसदे** = (वह) हँसता है/हँसती है। (व.अ.पु.एक.)

(ठा+इ) = **ठाइ** = (वह) ठहरता है/ठहरती है। (व.अ.पु.एक.)

(ठा+दि) = **ठादि** = (वह) ठहरता है/ठहरती है। (व.अ.पु.एक.)

(हो+इ) = **होइ** = (वह) होता है/होती है। (व.अ.पु.एक.)

(हो+दि) = **होदि** = (वह) होता है/होती है। (व.अ.पु.एक.)

अन्य पुरुष बहुवचन 3/2

6. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के वर्तमानकाल के अन्य पुरुष बहुवचन में <u>विकल्प से</u> **'हिं'** प्रत्यय क्रियाओं में लगता है। जैसे-

(हस+हिं) = **हसहिं** = (वे दोनों/वे सब) हँसते हैं/हँसती हैं। (व.अ.पु.बहु.)

(ठा+हिं) = **ठाहिं** (वे दोनों/वे सब) ठहरते हैं/ठहरती हैं। (व.अ.पु.बहु.)

(हो+हिं) = **होहिं** (वे दोनों/वे सब) होते हैं/होती हैं। (व.अ.पु.बहु.)

इसके अतिरिक्त वर्तमानकाल के अन्य पुरुष बहुवचन में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'न्ति, न्ते और इरे'** प्रत्यय भी उपर्युक्त क्रियाओं में लगते हैं। प्राकृत के नियमानुसार संयुक्ताक्षर के पहिले यदि दीर्घ स्वर हो तो वह ह्रस्व हो जाता है। जैसे-

(क) (हस+न्ति) = **हसन्ति** = (वे दोनों/वे सब) हँसते हैं/हँसती हैं। (व.अ.पु.बहु.)

(ठा+न्ति)=ठान्ति→**ठन्ति**=(वे दोनों/वे सब) ठहरते हैं/ठहरती हैं। (व.अ.पु.बहु.)

(हो+न्ति) = **होन्ति** = (वे दोनों/वे सब) होते हैं/होती हैं। (व.अ.पु.बहु.)

(ख) (हस+न्ते) = **हसन्ते** = (वे दोनों/वे सब) हँसते हैं/हँसती हैं। (व.अ.पु.बहु.)

(ठा+न्ते) = ठान्ते→**ठन्ते**= (वे दोनों/वे सब) ठहरते हैं/ठहरती हैं। (व.अ.पु.बहु.)

(हो+न्ते) = **होन्ते** = (वे दोनों/वे सब) होते हैं/होती हैं। (व.अ.पु.बहु.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ग) (हस+इरे) = **हसिरे** = (वे दोनों/वे सब) हँसते हैं/हँसती हैं। (व.अ.पु.बहु.)

(ठा+इरे) = **ठाइरे** = (वे दोनों/वे सब) ठहरते हैं/ठहरती हैं। (व.अ.पु.बहु.)

(हो+इरे) = **होइरे** = (वे दोनों/वे सब) होते हैं/होती हैं। (व.अ.पु.बहु.)

भूतकाल

उत्तम पुरुष 1/1, मध्यम पुरुष 2/1, अन्य पुरुष 3/1 (एकवचन)

उत्तम पुरुष 1/2, मध्यम पुरुष 2/2, अन्य पुरुष 3/2 (बहुवचन)

7. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त क्रियाओं में *प्राकृत भाषा* के अनुसार भूतकाल के उत्तम पुरुष एकवचन व बहुवचन, मध्यम पुरुष एकवचन व बहुवचन, अन्य पुरुष एकवचन व बहुवचन में **'ईअ'** प्रत्यय क्रियाओं में लगता है। जैसे-

उत्तम पुरुष एकवचन 1/1

(हस+ईअ) = **हसीअ** = (मैं) हँसा/हँसी। (भू.उ.पु.एक.)

उत्तम पुरुष बहुवचन 1/2

(हस+ईअ) = **हसीअ** = (हम दोनों/हम सब) हँसे/हँसीं। (भू.उ.पु.बहु.)

मध्यम पुरुष एकवचन 2/1

(हस+ईअ) = **हसीअ** = (तुम) हँसे/हँसी। (भू.म.पु.एक.)

मध्यम पुरुष बहुवचन 2/2

(हस+ईअ) = **हसीअ** = (तुम दोनों/तुम सब) हँसे/हँसीं। (भू.म.पु.बहु.)

अन्य पुरुष एकवचन 3/1

(हस+ईअ) = **हसीअ** = (वह) हँसा/हँसी। (भू.अ.पु.एक.)

अन्य पुरुष बहुवचन 3/2

(हस+ईअ) = **हसीअ** = (वे दोनों/वे सब) हँसे/हँसीं। (भू.अ.पु.बहु.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उत्तम पुरुष 1/1, मध्यम पुरुष 2/1, अन्य पुरुष 3/1 (एकवचन)

उत्तम पुरुष 1/2, मध्यम पुरुष 2/2, अन्य पुरुष 3/2 (बहुवचन)

8. अपभ्रंश में आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में *प्राकृत भाषा* के अनुसार भूतकाल के उत्तम पुरुष एकवचन व बहुवचन, मध्यम पुरुष एकवचन व बहुवचन, अन्य पुरुष एकवचन व बहुवचन में **'सी'**, **'ही'**, **'हीअ'** प्रत्यय क्रियाओं में लगते हैं। जैसे-

उत्तम पुरुष एकवचन 1/1

(ठा+सी) = **ठासी** = (मैं) ठहरा/ठहरी। (भू.उ.पु.एक.)

(ठा+ही) = **ठाही** = (मैं) ठहरा/ठहरी। (भू.उ.पु.एक.)

(ठा+हीअ) = **ठाहीअ** = (मैं) ठहरा/ठहरी। (भू.उ.पु.एक.)

(हो+सी) = **होसी** = (मैं) हुआ/हुई। (भू.उ.पु.एक.)

(हो+ही) = **होही** = (मैं) हुआ/हुई। (भू.उ.पु.एक.)

(हो+हीअ) = **होहीअ** = (मैं) हुआ/हुई। (भू.उ.पु.एक.)

उत्तम पुरुष बहुवचन 1/2

(ठा+सी) = **ठासी** = (हम दोनों/हम सब) ठहरे/ठहरीं। (भू.उ.पु.बहु.)

(ठा+ही) = **ठाही** = (हम दोनों/हम सब) ठहरे/ठहरीं। (भू.उ.पु.बहु.)

(ठा+हीअ) = **ठाहीअ** = (हम दोनों/हम सब) ठहरे/ठहरीं। (भू.उ.पु.बहु.)

(हो+सी) = **होसी** = (हम दोनों/हम सब) हुए/हुईं। (भू.उ.पु.बहु.)

(हो+ही) = **होही** = (हम दोनों/हम सब) हुए/हुईं। (भू.उ.पु.बहु.)

(हो+हीअ) = **होहीअ** = (हम दोनों/हम सब) हुए/हुईं। (भू.उ.पु.बहु.)

मध्यम पुरुष एकवचन 2/1

(ठा+सी) = **ठासी** = (तुम) ठहरे/ठहरी। (भू.म.पु.एक.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ठा+ही) = **ठाही** = (तुम) ठहरे/ठहरी। (भू.म.पु.एक.)

(ठा+हीअ) = **ठाहीअ** = (तुम) ठहरे/ठहरी। (भू.म.पु.एक.)

(हो+सी) = **होसी** = (तुम) हुए/हुई। (भू.म.पु.एक.)

(हो+ही) = **होही** = (तुम) हुए/हुई। (भू.म.पु.एक.)

(हो+हीअ) = **होहीअ** = (तुम) हुए/हुई। (भू.म.पु.एक.)

मध्यम पुरुष बहुवचन 2/2

(ठा+सी) = **ठासी** = (तुम दोनों/तुम सब) ठहरे/ठहरीं। (भू.म.पु.बहु.)

(ठा+ही) = **ठाही** = (तुम दोनों/तुम सब) ठहरे/ठहरीं। (भू.म.पु.बहु.)

(ठा+हीअ) = **ठाहीअ** = (तुम दोनों/तुम सब) ठहरे/ठहरीं। (भू.म.पु.बहु.)

(हो+सी) = **होसी** = (तुम दोनों/तुम सब) हुए/हुईं। (भू.म.पु.बहु.)

(हो+ही) = **होही** = (तुम दोनों/तुम सब) हुए/हुईं। (भू.म.पु.बहु.)

(हो+हीअ) = **होहीअ** = (तुम दोनों/तुम सब) हुए/हुईं। (भू.म.पु.बहु.)

अन्य पुरुष एकवचन 3/1

(ठा+सी) = **ठासी** = (वह) ठहरा/ठहरी। (भू.अ.पु.एक.)

(ठा+ही) = **ठाही** = (वह) ठहरा/ठहरी। (भू.अ.पु.एक.)

(ठा+हीअ) = **ठाहीअ** = (वह) ठहरा/ठहरी। (भू.अ.पु.एक.)

(हो+सी) = **होसी** = (वह) हुआ/हुई। (भू.अ.पु.एक.)

(हो+ही) = **होही** = (वह) हुआ/हुई। (भू.अ.पु.एक.)

(हो+हीअ) = **होहीअ** = (वह) हुआ/हुई। (भू.अ.पु.एक.)

अन्य पुरुष बहुवचन 3/2

(ठा+सी) = **ठासी** = (वे दोनों/वे सब) ठहरे/ठहरीं। (भू.अ.पु.बहु.)

(ठा+ही) = **ठाही** = (वे दोनों/वे सब) ठहरे/ठहरीं। (भू.अ.पु.बहु.)

(ठा+हीअ) = **ठाहीअ** = (वे दोनों/वे सब) ठहरे/ठहरीं। (भू.अ.पु.बहु.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(हो+सी) = **होसी** = (वे दोनों/वे सब) हुए/हुईं। (भू.अ.पु.बहु.)

(हो+ही) = **होही** = (वे दोनों/वे सब) हुए/हुईं। (भू.अ.पु.बहु.)

(हो+हीअ) = **होहीअ** = (वे दोनों/वे सब) हुए/हुईं। (भू.अ.पु.बहु.)

भविष्यत्काल

उत्तम पुरुष एकवचन 1/1

9. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में भविष्यत्काल के अर्थ में <u>विकल्प से</u> **'स'** प्रत्यय जोड़ा जाता है, इसको जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष एकवचन का **'उं'** प्रत्यय जोड़ दिया जाता है और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है। जैसे-

(हस+स+उं) = **हसिसउं/हसेसउं** = (मैं) हँसूँगा/हँसूँगी। (भ.उ.पु.एक.)

(ठा+स+उं) = **ठासउं** (मैं) ठहरूँगा/ठहरूँगी। (भ.उ.पु.एक.)

(हो+स+उं) = **होसउं** (मैं) होऊँगा/होऊँगी। (भ.उ.पु.एक.)

इसके अतिरिक्त उपर्युक्त क्रियाओं में भविष्यत्काल के अर्थ में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'हि'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है, इसको जोड़ने के पश्चात् *प्राकृत भाषा* के अनुसार वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष एकवचन का **'मि'** प्रत्यय जोड़ दिया जाता है और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है। जैसे-

(हस+हि+मि) = **हसिहिमि/हसेहिमि** (मैं) हँसूँगा/हँसूँगी। (भ.उ.पु.एक.)

(ठा+हि+मि) = **ठाहिमि** ((मैं) ठहरूँगा/ठहरूँगी। (भ.उ.पु.एक.)

(हो+हि+मि) = **होहिमि** (मैं) होऊँगा/होऊँगी। (भ.उ.पु.एक.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

10. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में भविष्यत्काल के अर्थ में <u>विकल्प से</u> **'स'** प्रत्यय जोड़ा जाता है, इसको जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष बहुवचन का **'हुं'** प्रत्यय जोड़ दिया जाता है और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है। जैसे-

(हस+स+हुं) = **हसिसहुं/हसेसहुं** = (हम दोनों/हम सब) हँसेंगे/हँसेंगी। (भ.उ.पु.बहु.)

(ठा+स+हुं) = **ठासहुं** = (हम दोनों/हम सब) ठहरेंगे/ठहरेंगी। (भ.उपु.बहु.)

(हो+स+हुं) = **होसहुं** = (हम दोनों/हम सब) होंगे/होंगी। (भ.उ.पु.बहु.)

इसके अतिरिक्त उपर्युक्त क्रियाओं में भविष्यत्काल के अर्थ में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'हि'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है, इसको जोड़ने के पश्चात् *प्राकृत भाषा* के अनुसार वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष बहुवचन के **'मो, मु** और **म'** प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है। जैसे-

(क) (हस+हि+मो)=**हसिहिमो/हसेहिमो** = (हम दोनों/हम सब) हँसेंगे/हँसेंगी। (भ.उ.पु.बहु.)

(ठा+हि+मो) = **ठाहिमो** = (हम दोनों/हम सब) ठहरेंगे/ठहरेंगी। (भ.उ.पु.बहु.)

(हो+हि+मो) = **होहिमो** = (हम दोनों/हम सब) होंगे/होंगी। (भ.उ.पु.बहु.)

(ख) (हस+हि+मु) = **हसिहिमु/हसेहिमु** = (हम दोनों/हम सब) हँसेंगे/हँसेंगी। (भ.उ.पु.बहु.)

(ठा+हि+मु) = **ठाहिमु** = (हम दोनों/हम सब) ठहरेंगे/ठहरेंगी। (भ.उ.पु.बहु.)

(हो+हि+मु) = **होहिमु** = (हम दोनों/हम सब) होंगे/होंगी। (भ.उ.पु.बहु.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ग) (हस+हि+म) = **हसिहिम/ हसेहिम**= (हम दोनों/हम सब) हँसेंगे/हँसेंगी। (भ.उ.पु.बहु.)

(ठा+हि+म) = **ठाहिम** = (हम दोनों/हम सब) ठहरेंगे/ठहरेंगी। (भ.उ.पु.बहु.)

(हो+हि+म) = **होहिम** = (हम दोनों/हम सब) होंगे/होंगी। (भ.उ.पु.बहु.)

मध्यम पुरुष एकवचन 2/1

11. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त व ओकारान्त आदि क्रियाओं में भविष्यत्काल के अर्थ में विकल्प से **'स'** प्रत्यय जोड़ा जाता है, इसको जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष एकवचन का **'हि'** प्रत्यय जोड़ दिया जाता है और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है। जैसे-

(हस+स+हि) =**हसिसहि/हसेसहि** = (तुम) हँसोगे /हँसोगी। (भ.म.पु.एक.)

(ठा+स+हि) = **ठासहि** = (तुम) ठहरोगे /ठहरोगी। (भ.म.पु.एक.)

(हो+स+हि) = **होसहि** = (तुम) होओगे /होओगी। (भ.म.पु.एक.)

इसके अतिरिक्त भविष्यत्काल के अर्थ में उपर्युक्त क्रियाओं में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'हि'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है, इसको जोड़ने के पश्चात् *प्राकृत भाषा* के अनुसार वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष एकवचन के **'सि** और **से'** प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है। जैसे-

(क) (हस+हि+सि)=**हसिहिसि/हसेहिसि**= (तुम) हँसोगे /हँसोगी। (भ.म.पु.एक.)

(हस+हि+से) = **हसिहिसे/हसेहिसे**= (तुम) हँसोगे /हँसोगी। (भ.म.पु.एक.)

आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में केवल **'सि'** प्रत्यय ही जोड़ा जाता है **'से'** प्रत्यय नहीं। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ख) (ठा+हि+सि) = **ठाहिसि** = (तुम) ठहरोगे /ठहरोगी। (भ.म.पु.एक.)

(हो+हि+सि) = **होहिसि** = (तुम) होओगे /होओगी। (भ.म.पु.एक.)

मध्यम पुरुष बहुवचन 2/2

12. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त व ओकारान्त आदि क्रियाओं में भविष्यत्काल के अर्थ में विकल्प से **'स'** प्रत्यय जोड़ा जाता है, इसको जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष बहुवचन का **'हु'** प्रत्यय जोड़ दिया जाता है और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है। जैसे-

(हस+स+हु) = **हसिसहु/हसेसहु** = (तुम दोनों/तुम सब) हँसोगे/हँसोगी। (भ.म.पु.बहु.)

(ठा+स+हु) = **ठासहु** = (तुम दोनों/तुम सब) ठहरोगे/ठहरोगी। (भ.म.पु.बहु.)

(हो+स+हु) = **होसहु** = (तुम दोनों/तुम सब) होवोगे/होवोगी। (भ.म.पु.बहु.)

इसके अतिरिक्त भविष्यत्काल के अर्थ में उपर्युक्त क्रियाओं में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'हि'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है, इसको जोड़ने के पश्चात् *प्राकृत भाषा* के अनुसार वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष बहुवचन के **'ह और इत्था'** प्रत्यय तथा शौरसेनी भाषा के अनुसार **'ध'** प्रत्यय भी जोड़ दिया जाता है और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है। जैसे-

(क) (हस+हि+ह)= **हसिहिह/हसेहिह** = (तुम दोनों/तुम सब) हँसोगे/हँसोगी। (भ.म.पु.बहु)

(ठा+हि+ह) = **ठाहिह** = (तुम दोनों/तुम सब) ठहरोगे/ठहरोगी। (भ.म.पु.बहु.)

(हो+हि+ह) = **होहिह** = (तुम दोनों/तुम सब) होवोगे/होवोगी। (भ.म.पु.बहु.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ख) (हस+हि+इत्था) = **हसिहित्था/हसेहित्था** =

(तुम दोनों/तुम सब) हँसोगे/हँसोगी। (भ.मपु.एक.)

(ठा+हि+इत्था)=**ठाहित्था**=(तुम दोनों/तुम सब) ठहरोगे/ठहरोगी। (भ.म.पु.बहु.)

(हो+हि+इत्था)=**होहित्था**=(तुम दोनों/तुम सब) होवोगे/होवोगी। (भ.म.पु.बहु.)

(ग) (हस+हि+ध)= **हसिहिध/हसेहिध**= (तुम दोनों/तुम सब) हँसोगे/हँसोगी।

(भ.म.पु.बहु)

(ठा+हि+ध) = **ठाहिध** = (तुम दोनों/तुम सब) ठहरोगे/ठहरोगी। (भ.म.पु.बहु.)

(हो+हि+ध) = **होहिध** = (तुम दोनों/तुम सब) होवोगे/होवोगी। (भ.म.पु.बहु.)

अन्य पुरुष एकवचन 3/1

13. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त व ओकारान्त आदि क्रियाओं में भविष्यत्काल के अर्थ में <u>विकल्प से</u> **'स'** प्रत्यय जोड़ा जाता है, इसको जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के अन्य पुरुष एकंवचन के **'इ, ए, दि और दे'** प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है।

आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में केवल **'इ और दि'** प्रत्यय ही क्रियाओं में जोड़े जाते हैं **'ए और दे'** प्रत्यय नहीं। जैसे-

(हस+स+इ) = **हसिसइ/हसेसइ** = (वह) हँसेगा /हँसेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(हस+स+ए) = **हसिसए/हसेसए** = (वह) हँसेगा /हँसेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(हस+स+दि) = **हसिसदि/हसेसदि** = (वह) हँसेगा /हँसेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(हस+स+दे) = **हसिसदे/हसेसदे** = (वह) हँसेगा /हँसेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(ठा+स+इ) = **ठासइ** = (वह) ठहरेगा/ठहरेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(ठा+स+दि) = **ठासदि** = (वह) ठहरेगा/ठहरेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(हो+स+इ) = **होसइ** = (वह) होवेगा/होवेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(हो+स+दि) = **होसदि** = (वह) होवेगा/होवेगी। (भ.अ.पु.एक.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इसके अतिरिक्त भविष्यत्काल के अर्थ में उपर्युक्त क्रियाओं में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'हि'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है, इसको जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के अन्य पुरुष एकवचन के **'इ, ए, दि** और **दे'** प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है।

आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं में केवल **'इ और दि'** प्रत्यय ही क्रियाओं में जोड़े जाते हैं **'ए और दे'** प्रत्यय नहीं। जैसे-

(हस+हि+इ) = **हसिहिइ/हसेहिइ** = (वह) हँसेगा/हँसेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(हस+हि+ए) = **हसिहिए/हसेहिए** = (वह) हँसेगा/हँसेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(हस+हि+दि)=**हसिहिदि/हसेहिदि** = (वह) हँसेगा/हँसेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(हस+हि+दे) = **हसिहिदे/हसेहिदे** = (वह) हँसेगा/हँसेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(ठा+हि+इ) = **ठाहिइ** = (वह) ठहरेगा/ठहरेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(ठा+हि+दि) = **ठाहिदि** = (वह) ठहरेगा/ठहरेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(हो+हि+इ) = **होहिइ** = (वह) होवेगा/होवेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(हो+हि+दि) = **होहिदि** = (वह) होवेगा/होवेगी। (भ.अ.पु.एक.)

इनके अतिरिक्त भविष्यत्काल के अर्थ में उपर्युक्त क्रियाओं में शौरसेनी भाषा के अनुसार **'स्सि'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है, इसको जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के अन्य पुरुष एकवचन का **'दि'** प्रत्यय भी जोड़ दिया जाता है और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** हो जाता है। जैसे-

(हस+स्सि+दि) = **हसिस्सिदि** = (वह) हँसेगा/हँसेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(ठा+स्सि+दि) = **ठास्सिदि** = (वह) ठहरेगा/ठहरेगी। (भ.अ.पु.एक.)

(हो+स्सि+दि) = **होस्सिदि** = (वह) होवेगा/होवेगी। (भ.अ.पु.एक.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

14. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त व ओकारान्त आदि क्रियाओं में भविष्यत्काल के अर्थ में <u>विकल्प से</u> **'स'** प्रत्यय जोड़ा जाता है, इसको जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के अन्य पुरुष बहुवचन का **'हिं'** प्रत्यय जोड़ दिया जाता है और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है। जैसे-

(हस+स+हिं) = **हसिसहिं/हसेसहिं** = (वे दोनों/वे सब) हँसेंगे/हँसेंगी। (भ.अ.पु.बहु.)

(ठा+स+हिं) = **ठासहिं** = (वे दोनों/वे सब) ठहरेंगे/ठहरेंगी।(भ.अ.पु.बहु.)

(हो+स+हिं) = **होसहिं** = (वे दोनों/वे सब) होंगे/होंगी। (भ.अ.पु.बहु.)

इसके अतिरिक्त भविष्यत्काल के अर्थ में *प्राकृत भाषा* के अनुसार उपर्युक्त क्रियाओं में **'हि'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है, इसको जोड़ने के पश्चात् *प्राकृत भाषा* के अनुसार वर्तमानकाल के अन्य पुरुष बहुवचन के **'न्ति, न्ते** और **इरे'** प्रत्यय जोड़ दिये जाते हैं और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है। जैसे-

(क) (हस+हि+न्ति)=**हसिहिन्ति/हसेहिन्ति**=(वे दोनों/वे सब) हँसेंगे/हँसेंगी। (भ.अ.पु.बहु.)

(ठा+हि+न्ति) = **ठाहिन्ति** = (वे दोनों/वे सब) ठहरेंगे/ठहरेंगी।(भ.अ.पु.बहु.)

(हो+हि+न्ति) = **होहिन्ति** = (वे दोनों/वे सब) होंगे/होंगी। (भ.अ.पु.बहु.)

(ख) (हस+हि+न्ते)=**हसिहिन्ते/हसेहिन्ते**= (वे दोनों/वे सब) हँसेंगे/हँसेंगी। (भ.अ.पु.बहु.)

(ठा+हि+न्ते) = **ठाहिन्ते** = (वे दोनों/वे सब) ठहरेंगे/ठहरेंगी।(भ.अ.पु.बहु.)

(हो+हि+न्ते) = **होहिन्ते** = (वे दोनों/वे सब) होंगे/होंगी। (भ.अ.पु.बहु.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ग) (हस+हि+इरे) = **हसिहिइरे** या **हसिहिरे/हसेहिइरे** या **हसेहिरे** =
(वे दोनों/वे सब) हँसेंगे/हँसेंगी। (भ.अ.पु.बहु.)

(ठा+हि+इरे) = **ठाहिइरे** या **ठाहिरे** =
(वे दोनों/वे सब)ठहरेंगे/ठहरेंगी।(भ.अ.पु.बहु.)

(हो+हि+इरे)= **होहिइरे** या **होहिरे**=(वे दोनों/वे सब) होंगे/होंगी। (भ.अ.पु.बहु.)

विधि एवं आज्ञा

उत्तम पुरुष एकवचन 1/1

15. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के विधि एवं आज्ञा के उत्तम पुरुष एकवचन में *प्राकृत भाषा* के अनुसार '**मु**' प्रत्यय क्रियाओं में लगता है। '**मु**' प्रत्यय लगने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**ए**' भी हो जाता है। जैसे-

(हस+मु) = **हसमु/हसेमु** = (मैं) हँसूँ। (वि. उ.पु. एक.)

(ठा+मु) = **ठामु** = (मैं) ठहरूँ। (वि.उ.पु.एक.)

(हो+मु) = **होमु** = (मैं) होऊँ। (वि.उ.पु.एक.)

उत्तम पुरुष बहुवचन 1/2

16. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के विधि एवं आज्ञा के उत्तम पुरुष बहुवचन में *प्राकृत भाषा* के अनुसार '**मो**' प्रत्यय क्रियाओं में लगता है। '**मो**' प्रत्यय लगने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**आ**' और '**ए**' भी हो जाता है। जैसे-

(क) (हस+मो)=**हसमो/हसामो/हसेमो**=(हम दोनों/हम सब) हँसें। (वि.उ.पु.बहु.)

(ठा+मो) = **ठामो** = (हम दोनों/हम सब) ठहरें। (वि.उ.पु.बहु.)

(हो+मो) = **होमो** = (हम दोनों/हम सब) होवें। (वि.उ.पु.बहु.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

17. अपभ्रंश भाषा में अक्कारान्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के विधि एवं आज्ञा के मध्यम पुरुष एकवचन में <u>विकल्प से</u> **'इ, उ और ए'** प्रत्यय क्रियाओं में लगते हैं। जैसे-

(क) (हस+इ) = **हसि** = (तुम) हँसो। (वि.म.पु.एक.)
(ठा+इ) = **ठाइ** = (तुम) ठहरो। (वि.म.पु.एक.)
(हो+इ) = **होइ** = (तुम) होवो। (वि.म.पु.एक.)

(ख) (हस+उ) = **हसु** = (तुम) हँसो। (वि.म.पु.एक.)
(ठा+उ) = **ठाउ** = (तुम) ठहरो। (वि.म.पु.एक.)
(हो+उ) = **होउ** = (तुम) होवो। (वि.म.पु.एक.)

(ग) (हस+ए) = **हसे** = (तुम) हँसो। (वि.म.पु.एक.)
(ठा+ए) = **ठाए** = (तुम) ठहरो। (वि.म.पु.एक.)
(हो+ए) = **होए** = (तुम) होवो। (वि.म.पु.एक.)

इसके अतिरिक्त *प्राकृत भाषा* के अनुसार अकारान्त क्रियाओं में **'हि, सु और शून्य (0)'** प्रत्यय भी लगते हैं। प्रत्यय लगने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** भी हो जाता है। जैसे-

(क) (हस+हि) = **हसहि/हसेहि** = (तुम) हँसो। (वि.म.पु.एक.)
(हस+सु) = **हससु/हसेसु** = (तुम) हँसो। (वि.म.पु.एक.)
(हस+0) = **हस** = (तुम) हँसो। (वि.म.पु.एक)

आकारान्त व ओकारान्त आदि क्रियाओं में केवल **'हि और सु'** प्रत्यय ही लगते हैं **'शून्य (0)'** प्रत्यय नहीं लगता। जैसे-

(ख) (ठा+हि) = **ठाहि** = (तुम) ठहरो। (वि.म.पु.एक.)
(हो+हि) = **होहि** = (तुम) होवो। (वि.म.पु.एक.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ग) (ठा+सु) = **ठासु** = (तुम) ठहरो। (वि.म.पु.एक.)

(हो+सु) = **होसु** = (तुम) होवो। (वि.म.पु.एक.)

मध्यम पुरुष बहुवचन 2/2

18. अपभ्रंश में अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के विधि एवं आज्ञा के मध्यम पुरुष बहुवचन में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'ह'** प्रत्यय तथा शौरसेनी भाषा के अनुसार **'ध'** प्रत्यय क्रियाओं में लगता है। **'ह'** और **'ध'** प्रत्यय लगने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** भी हो जाता है। जैसे-

(क) (हस+ह) = **हसह/हसेह** = (तुम दोनों/तुम सब) हँसो। (वि.म.पु.बहु.)

(ठा+ह) = **ठाह** = (तुम दोनों/तुम सब) ठहरो। (वि.म.पु.बहु.)

(हो+ह) = **होह** = (तुम दोनों/तुम सब) होवो। (वि.म.पु.बहु.)

(ख) (हस+ध) = **हसध/हसेध** = (तुम दोनों/तुम सब) हँसो। (वि.म.पु.बहु.)

(ठा+ध) = **ठाध** = (तुम दोनों/तुम सब) ठहरो। (वि.म.पु.बहु.)

(हो+ध) = **होध** = (तुम दोनों/तुम सब) होवो। (वि.म.पु.बहु.)

अन्य पुरुष एकवचन 3/1

19. अपभ्रंश में अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के विधि एवं आज्ञा के अन्य पुरुष एकवचन में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'उ'** प्रत्यय तथा शौरसेनी भाषा के अनुसार **'दु'** प्रत्यय क्रियाओं में लगते हैं। **'उ और दु'** प्रत्यय लगने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** भी हो जाता है। जैसे-

(क) (हस+उ) = **हसउ/हसेउ** = (वह) हँसे। (वि.अ.पु.एक.)

(ठा+उ) = **ठाउ** = (वह) ठहरे। (वि.अ.पु.एक.)

(हो+उ) = **होउ** = (वह) होवे। (वि.अ.पु.एक.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ख) (हस+दु) = **हसदु/हसेदु** = (वह) हँसे। (वि.अ.पु.एक.)

(ठा+दु) = **ठादु** = (वह) ठहरे। (वि.अ.पु.एक.)

(हो+दु) = **होदु** = (वह) होवे। (वि.अ.पु.एक.)

अन्य पुरुष बहुवचन 3/2

20. अपभ्रंश भाषा में अकारान्त, आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के विधि एवं आज्ञा के अन्य पुरुष बहुवचन में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'न्तु'** प्रत्यय क्रिया में लगता है। **'न्तु'** प्रत्यय लगने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** भी हो जाता है। प्राकृत के नियमानुसार संयुक्ताक्षर के पहिले यदि दीर्घ स्वर हो तो वह ह्रस्व हो जाता है। जैसे-

(हस+न्तु) = **हसन्तु/हसेन्तु** = (वे दोनों/वे सब) हँसें। (वि.अ.पु.बहु.)

(ठा+न्तु) = ठान्तु→**ठन्तु** = (वे दोनों/वे सब) ठहरें। (वि.अ.पु.बहु.)

(हो+न्तु) = **होन्तु** = (वे दोनों/वे सब)होवें। (वि.अ.पु.बहु.)

नोट- अपभ्रंश भाषा में शब्द-रचना-प्रवृत्ति कहीं-कहीं प्राकृत भाषा[1] के अनुसार होती है और कहीं-कहीं पर शौरसेनी भाषा के समान भी होती है।

◆◆◆

---

1. हेमचन्द्र वृत्ति 4/329

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कृदन्तों के प्रत्यय

विधि कृदन्त

1.(क) अपभ्रंश भाषा में **'चाहिए'** अर्थ में विधि कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। विधि कृदन्त में **'इएव्वउं', 'एव्वउं'** और **'एवा'** प्रत्यय क्रियाओं में जोड़े जाते हैं। जैसे-

1. (हस+इएव्वउं) = **हसिएव्वउं** (हँसा जाना चाहिए)
2. (हस+एव्वउं) = **हसेव्वउं** (हँसा जाना चाहिए)
3. (हस+एवा) = **हसेवा** (हँसा जाना चाहिए)

(ख) अपभ्रंश भाषा में *प्राकृत भाषा* के अनुसार विधि कृदन्त में **'अव्व, यव्व, तव्व** और **दव्व'** प्रत्यय भी क्रियाओं में जोड़े जाते हैं और अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है। जैसे-

(हस+अव्व) = **हसिअव्व/हसेअव्व** (हँसा जाना चाहिए)
(हस+यव्व) = **हसियव्व/हसेयव्व** (हँसा जाना चाहिए)
(हस+तव्व) = **हसितव्व/हसेतव्व** (हँसा जाना चाहिए)
(हस+दव्व) = **हसिदव्व/हसेदव्व** (हँसा जाना चाहिए)

सम्बन्धक भूतकृदन्त

2. (i) अपभ्रंश भाषा में **'करके'** अर्थ में संबंधक भूतकृदन्त का प्रयोग किया जाता है। संबंधक भूतकृदन्त में **'इ', 'इउ', 'इवि', 'अवि', 'एप्पि', 'एप्पिणु', 'एवि'** और **'एविणु'** प्रत्यय क्रिया में जोड़े जाते हैं। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

1. (हस+इ) = **हसि** (हँसकर)

2. (हस+इउ) = **हसिउ** (हँसकर)

3. (हस+इवि) = **हसिवि** (हँसकर)

4. (हस+अवि) = **हसवि** (हँसकर)

5. (हस+एप्पि) = **हसेप्पि** (हँसकर)

6. (हस+एप्पिणु) = **हसेप्पिणु** (हँसकर)

7. (हस+एवि) = **हसेवि** (हँसकर)

8. (हस+एविणु) = **हसेविणु** (हँसकर)

(ii) अपभ्रंश भाषा में **'करके'** अर्थ में संबंधक भूतकृदन्त का प्रयोग किया जाता है। शौरसेनी भाषा के अनुसार संबंधक भूतकृदन्त में **'इय'**, **'दूण'**, **'दूणं'** और **'त्ता'** प्रत्यय भी क्रिया में जोड़े जाते हैं और क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** हो जाता है। जैसे-

1. (हस+इय) = **हसिय** (हँसकर)

2. (हस+दूण) = **हसिदूण/हसिदूणं** (हँसकर)

3. (हस+त्ता) = **हसित्ता** (हँसकर)

---

3. अपभ्रंश भाषा में **'जाकर'**, **'गमन करके'** अर्थ में **'गम'** क्रिया में **'एप्पिणु'** और **'एप्पि'** प्रत्यय क्रिया में जोड़े जाते हैं। इन प्रत्ययों को क्रिया में जोड़ने के पश्चात् विकल्प से एप्पिणु और एप्पि प्रत्ययों के आदि स्वर **ए** का लोप हो जाता है।

जैसे- (गम+एप्पिणु) = **गम्प्पिणु/गमेप्पिणु** (जाकर/गमन करके)

(गम+एप्पि) = **गम्प्पि/गमेप्पि** (जाकर/गमन करके)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हेत्वर्थक कृदन्त

4. अपभ्रंश भाषा में **'के लिए'** अर्थ में हेत्वर्थक कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। हेत्वर्थक कृदन्त में **'एवं'**, **'अण'**, **'अणहं'**, **'अणहिं'**, **'एप्पि'**, **'एप्पिणु'**, **'एवि'** और **'एविणु'** प्रत्यय क्रियाओं में जोड़े जाते हैं। जैसे-

1. (हस+एवं) = **हसेवं** (हँसने के लिए)
2. (हस+अण) = **हसण** (हँसने के लिए)
3. (हस+अणहं) = **हसणहं** (हँसने के लिए)
4. (हस+अणहिं) = **हसणहिं** (हँसने के लिए)
5. (हस+एप्पि) = **हसेप्पि** (हँसने के लिए)
6. (हस+एप्पिणु) = **हसेप्पिणु** (हँसने के लिए)
7. (हस+एवि) = **हसेवि** (हँसने के लिए)
8. (हस+एविणु) = **हसेविणु** (हँसने के लिए)

भूतकालिक कृदन्त

5. अपभ्रंश भाषा में भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए *प्राकृत भाषा* के अनुसार भूतकालिक कृदन्त का भी प्रयोग किया जाता है। भूतकालिक कृदन्त में **'अ'** और **'य'** प्रत्यय क्रियाओं में जोड़े जाते हैं और क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** हो जाता है। जैसे-

(हस+अ) = **हसिअ** (हँसा)

(हस+य) = **हसिय** (हँसा)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

6. अपभ्रंश भाषा में **हँसता हुआ** आदि भावों को प्रकट करने के लिए *प्राकृत भाषा* के अनुसार वर्तमान कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। वर्तमान कृदन्त में **'न्त'** और **'माण'** प्रत्यय क्रियाओं में जोड़े जाते हैं। जैसे-

(हस+न्त) = **हसन्त** (हँसता हुआ)

(हस+माण) = **हसमाण** (हँसता हुआ)

नोट- अपभ्रंश भाषा में शब्द-रचना-प्रवृत्ति कहीं-कहीं प्राकृत भाषा[1] के अनुसार होती है और कहीं-कहीं पर शौरसेनी भाषा के समान भी होती है।

◆◆◆

---

1. हेमचन्द्र वृत्ति 4/329

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भाववाच्य एवं कर्मवाच्य के प्रत्यय

1. अपभ्रंश भाषा में भाववाच्य तथा कर्मवाच्य का प्रयोग किया जाता है। अकर्मक क्रियाओं से **भाववाच्य** तथा सकर्मक क्रियाओं से **कर्मवाच्य** बनाया जाता है।

क्रिया का भाववाच्य में प्रयोग-नियम

अकर्मक क्रियाओं से भाववाच्य बनाने के लिए *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'इज्ज'** और *__'इअ'/'इय'__ प्रत्यय जोड़े जाते हैं। कर्ता में **तृतीया विभक्ति (एकवचन अथवा बहुवचन)** होगी। क्रिया में उपर्युक्त प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् **'अन्य पुरुष एकवचन'** के प्रत्यय भी काल के अनुसार लगा दिये जाते हैं।

'इज्ज' और **'इअ'/'इय'** प्रत्यय **वर्तमानकाल, भूतकाल** तथा **विधि एवं आज्ञा** में लगाये जाते हैं। जैसे-

(क) (i) (हस+इज्ज+इ) = **हसिज्जइ** = हँसा जाता है। (व.अ.पु.एक.)

(हस+इज्ज+ए) = **हसिज्जए** = हँसा जाता है। (व.अ.पु.एक.)

(हस+इज्ज+दि) = **हसिज्जदि** = हँसा जाता है। (व.अ.पु.एक.)

(हस+इज्ज+दे) = **हसिज्जदे** = हँसा जाता है। (व.अ.पु.एक.)

(ii) (हस+इय+इ) = **हसियइ** = हँसा जाता है। (व.अ.पु.एक.)

(हस+इय+ए) = **हसियए** = हँसा जाता है। (व.अ.पु.एक.)

(हस+इय+दि) = **हसियदि** = हँसा जाता है। (व.अ.पु.एक.)

(हस+इय+ए) = **हसियदे** = हँसा जाता है। (व.अ.पु.एक.)

---

* इअ/इय के लिए देखें, अपभ्रंश भाषा का अध्ययन, पृष्ठ-218

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ख) (हस+इज्ज+ईअ) = **हसिज्जईअ (हसिज्जीअ)** = हँसा गया। (भू.अ.पु.एक.)

(हस+इअ+ईअ) = **हसिअईअ (हसिईअ)** = हँसा गया। (भू.अ.पु.एक.)

(ग) (i) (हस+इज्ज+उ) = **हसिज्जउ** = हँसा जाए। (वि.अ.पु.एक.)

(हस+इज्ज+दु) = **हसिज्जदु** = हँसा जाए। (वि.अ.पु.एक.)

(ii) (हस+इअ+उ) = **हसिअउ** = हँसा जाए। (वि.अ.पु.एक.)

(हस+इअ+दु) = **हसिअदु** = हँसा जाए। (वि.अ.पु.एक.)

---

2. भविष्यत्काल में क्रिया का **भविष्यत्काल कर्तृवाच्य** रूप ही बना रहता है उसमें **'इज्ज'** और **'इअ'** प्रत्यय नहीं लगते। जैसे-

(क) (हस+स+इ) = **हसिसइ/हसेसइ** = हँसा जायेगा। (भ.अ.पु.एक.)

(हस+स+ए) = **हसिसए/हसेसए** = हँसा जायेगा। (भ.अ.पु.एक.)

(हस+स+दि) = **हसिसदि/हसिसदि** = हँसा जायेगा। (भ.अ.पु.एक.)

(हस+स+दे) = **हसिसदे/हसेसदे** = हँसा जायेगा। (भ.अ.पु.एक.)

(ख) (हस+हि+इ) = **हसिहिइ/हसेहिइ** = हँसा जायेगा। (भ.अ.पु.एक.)

(हस+हि+ए) = **हसिहिए/हसेहिए** = हँसा जायेगा। (भ.अ.पु.एक.)

(हस+हि+दि) = **हसिहिदि/हसेहिदि** = हँसा जायेगा। (भ.अ.पु.एक.)

(हस+हि+दे) = **हसिहिदे/हसेहिदे** = हँसा जायेगा। (भ.अ.पु.एक.)

नोट- अपभ्रंश भाषा में शब्द-रचना-प्रवृत्ति कहीं-कहीं प्राकृत भाषा[1] के अनुसार होती है और कहीं-कहीं पर शौरसेनी भाषा के समान भी होती है।

◆◆◆

---

1. हेमचन्द्र वृत्ति 4/329

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कृदन्तों का भाववाच्य में प्रयोग-नियम

भूतकालिक कृदन्त का भाववाच्य में प्रयोग-नियम

जब क्रिया अकर्मक होती है तो अपभ्रंश भाषा में *प्राकृत भाषा* के अनुसार भूतकालिक कृदन्त का भाववाच्य में प्रयोग होता है। कर्ता में तृतीया विभक्ति (एकवचन अथवा बहुवचन) होगी। **कृदन्त** में सदैव **'नपुंसकलिंग एकवचन'** ही होगा। जैसे-

हसिअ/हसिआ/हसिउ = हँसा गया।

नोट- जब अकर्मक क्रियाओं में भूतकालिक कृदन्त के प्रत्ययों को लगाया जाता है तो भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए इनका प्रयोग कर्तृवाच्य में भी किया जा सकता है। कर्ता पुल्लिग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग में से जो भी होगा भूतकालिक कृदन्त के रूप भी उसी के अनुसार होंगे। जैसे-

(क) नरिंद/नरिंदा/नरिंदु/नरिंदो **हसिअ/हसिआ/हसिउ/हसिओ** = राजा हँसा। (पुल्लिग एकवचन)

(ख) कमल/कमला/कमलु **विअसिअ/विअसिआ/विअसिउ** = कमल खिला । (नपुंसकलिंग एकवचन)

(ग) ससा/सस **हसिआ/हसिअ** = बहिन हँसी। (स्त्रीलिंग एकवचन)

विधि कृदन्त का भाववाच्य में प्रयोग-नियम

(क) जब क्रिया अकर्मक होती है तो अपभ्रंश भाषा में *प्राकृत भाषा* के अनुसार विधि कृदन्त का प्रयोग भाववाच्य में किया जाता है। कर्ता में तृतीया विभक्ति (एकवचन अथवा बहुवचन) होगी। **कृदन्त** में सदैव **'नपुंसकलिंग एकवचन'** ही होगा। जैसे-

हसिअव्व/हसिअव्वा/हसिअव्वु आदि = हँसा जाना चाहिए।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(ख) अपभ्रंश में विधि कृदन्त का भाववाच्य में प्रयोग करने के लिए कर्ता में तृतीया विभक्ति (एकवचन अथवा बहुवचन) होगी।
कृदन्त में कोई परिवर्तन नहीं होगा। जैसे-
हसिएव्वउं/हसेव्वउं/हसेवा = हँसा जाना चाहिए।

नोट- विधि कृदन्त कर्तृवाच्य में प्रयुक्त नहीं होता है।

क्रिया का कर्मवाच्य में प्रयोग-नियम

सकर्मक क्रियाओं से कर्मवाच्य बनाने के लिए *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'इज्ज'** और **'इअ'/'इय'** प्रत्यय जोड़े जाते हैं।
कर्ता में तृतीया विभक्ति (एकवचन अथवा बहुवचन) होगी।
कर्म में द्वितीया विभक्ति (एकवचन अथवा बहुवचन) के स्थान पर **प्रथमा** विभक्ति (एकवचन अथवा बहुवचन) होगी।
क्रिया में उपर्युक्त प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् (**प्रथमा में परिवर्तित**) कर्म के अनुसार **'क्रिया'** में पुरुष और वचन के प्रत्यय काल के अनुरूप जोड़ दिए जाते हैं।
'इज्ज' और **'इअ'/'इय'**प्रत्यय **वर्तमानकाल, भूतकाल** तथा **विधि एवं आज्ञा** में लगाये जाते हैं। जैसे-

(क) (कोक+इज्ज+इ) = **कोकिज्जइ** = बुलाया जाता है। (व.अ.पु. एक.)
(कोक+इज्ज+ए) = **कोकिज्जए** = बुलाया जाता है। (व.अ.पु. एक.)
(कोक+इज्ज+दि)=**कोकिज्जदि** = बुलाया जाता है। (व.अ.पु. एक.)
(कोक+इज्ज+दे)= **कोकिज्जदे** = बुलाया जाता है। (व.अ.पु. एक.)
(कोक+इय+इ) = **कोकियइ** = बुलाया जाता है। (व.अ.पु. एक.)
(कोक+इय+ए) = **कोकियए** = बुलाया जाता है। (व.अ.पु. एक.)
(कोक+इय+दि)= **कोकियदि** = बुलाया जाता है। (व.अ.पु. एक.)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(कोक+इय+दे) = **कोकियदे** = बुलाया जाता है। (व.अ.पु. एक.)

(ख) (कोक+इज्ज+ईअ)= **कोकिज्जईअ (कोकिज्जीअ)** = बुलाया गया। (भू.अ.पु.एक.)

(कोक+इअ+ईअ)= **कोकिअईअ (कोकिईअ)** = बुलाया गया। (भू.अ.पु.एक.)

(ग) (कोक+इज्ज+उ) = **कोकिज्जउ** = बुलाया जाए। (वि.अ.पु.एक.)

(कोक+इज्ज+दु) = **कोकिज्जदु** = बुलाया जाए। (वि.अ.पु.एक.)

(कोक+इय+उ) = **कोकियउ** = बुलाया जाए। (वि.अ.पु.एक.)

(कोक+इय+दु) = **कोकियदु** = बुलाया जाए। (वि.अ.पु.एक.)

नोट: इस प्रकार उत्तम पुरुष व मध्यम पुरुष का प्रयोग एकवचन व बहुवचन में तथा अन्य पुरुष का प्रयोग बहुवचन में किया जा सकता है।

---

2. भविष्यत्काल में क्रिया का **भविष्यत्काल कर्तृवाच्य** रूप ही बना रहता है उसमें **'इज्ज'** और **'इअ'** प्रत्यय नहीं लगाये जाते हैं। जैसे-

(क) (कोक+स+इ)=**कोकिसइ/कोकेसइ** = बुलाया जायेगा।(भ.अ.पु.एक.)

(कोक+स+ए)=**कोकिसए/कोकेसए** = बुलाया जायेगा।(भ.अ.पु.एक.)

(कोक+स+दि)=**कोकिसदि/कोकेसदि**=बुलाया जायेगा।(भ.अ.पु.एक.)

(कोक+स+दे)=**कोकिसदे/कोकेसदे** = बुलाया जायेगा।(भ.अ.पु.एक.)

(ख) (कोक+हि+इ)=**कोकिहिइ/कोकेहिइ**=बुलाया जायेगा।(भ.अ.पु.एक.)

(कोक+हि+ए)=**कोकिहिए/कोकेहिए**=बुलाया जायेगा।(भ.अ.पु.एक.)

(कोक+हि+दि)=**कोकिहिदि/कोकेहिदे**=बुलाया जायेगा।(भ.अ.पु.एक.)

(कोक+हि+दे)=**कोकिहिदे/कोकेहिदे**=बुलाया जायेगा।(भ.अ.पु.एक.)

नोट: इस प्रकार उत्तम पुरुष व मध्यम पुरुष का प्रयोग एकवचन व बहुवचन में तथा अन्य पुरुष का प्रयोग बहुवचन में किया जा सकता है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कृदन्तों का कर्मवाच्य में प्रयोग-नियम

भूतकालिक कृदन्त का कर्मवाच्य में प्रयोग-नियम

जब क्रिया सकर्मक होती है तो भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग कर्मवाच्य में किया जाता है।

कर्ता में तृतीया विभक्ति (एकवचन अथवा बहुवचन) होगी।

कर्म में प्रथमा विभक्ति (एकवचन अथवा बहुवचन) होगी।

कृदन्त के रूप (प्रथमा में परिवर्तित) कर्म के लिंग और वचन के अनुसार चलेंगे। जैसे-

(क) कोकिअ/कोकिआ/कोकिउ/कोकिओ = बुलाया गया। (पुल्लिंग एकवचन)
कोकिअ/कोकिआ = बुलाये गये। (पुल्लिग बहुवचन)

(ख) इच्छिअ/इच्छिआ/इच्छिउ = चाहा गया। (नपुंसकलिंग एकवचन)
पेच्छिअ/पेच्छिआ/पेच्छिअइं/पेच्छिआइं = देखे गये।
(नपुंसकलिंग बहुवचन)

(ग) सुणिआ/सुणिअ = सुनी गयी। (स्त्रीलिंग एकवचन)
सुणिआ/सुणिअ/सुणिआउ/सुणिअउ/सुणिआओ/सुणिअउ = सुनी गयी। (स्त्रीलिंग बहुवचन)

विधि कृदन्त का कर्मवाच्य में प्रयोग-नियम

(क) जब क्रिया सकर्मक होती है तो अपभ्रंश भाषा में *प्राकृत भाषा* के अनुसार विधि कृदन्त का प्रयोग कर्मवाच्य में किया जाता है।

कर्ता में तृतीया विभक्ति (एकवचन अथवा बहुवचन) होगी।

कर्म में प्रथमा विभक्ति (एकवचन अथवा बहुवचन) होगी।

कृदन्त के रूप (प्रथमा में परिवर्तित) कर्म के लिंग और वचन के अनुसार चलेंगे। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(क) 1 (i) कीणिअव्व/कीणियव्व/कीणितव्व/कीणिदव्व/आदि =
खरीदा जाना चाहिए। (पुल्लिंग एकवचन)

(ii) कीणिअव्व/कीणिअव्वा आदि = खरीदे जाने चाहिए।
(पुल्लिंग बहुवचन)

(क) 2 (i) पेच्छिअव्व/पेच्छिअव्वा/पेच्छिअव्वु/आदि =
देखी जानी चाहिए। (नपुंसकलिंग एकवचन)

(ii) पेच्छिअव्व/पेच्छिअव्वा/पेच्छिअव्वइं/पेच्छिअव्वाइं/आदि =
देखी जानी चाहिए। (नपुंसकलिंग बहुवचन)

(क) 3 (i) पेसिअव्वा/पेसिअव्व/आदि = भेजा जाना चाहिए।
(स्त्रीलिंग एकवचन)

(ii) पेसिअव्वा/पेसिअव्व/पेसिअव्वाउ/पेसिअव्वउ/पेसिअव्वाओ/
पेसिअव्वओ/आदि = भेजे जाने चाहिए। (स्त्रीलिंग बहुवचन)

(ख) अपभ्रंश में विधि कृदन्त का कर्मवाच्य में प्रयोग करने के लिए भी कर्ता में तृतीया विभक्ति (एकवचन अथवा बहुवचन) होगी। कर्म में प्रथमा विभक्ति (एकवचन अथवा बहुवचन) होगी। **कृदन्त** में कोई परिवर्तन नहीं होगा। जैसे-

(ख) 1 (i) कीणिएव्वउं/कीणेव्वउं/कीणेवा = खरीदा जाना चाहिए।
(पुल्लिंग एकवचन)

(ii) कीणिएव्वउं/कीणेव्वउं/कीणेवा = खरीदा जाना चाहिए।
(पुल्लिंग बहुवचन)

(ख) 2 (i) पेच्छिएव्वउं/पेच्छव्वउं/पेच्छेवा = देखी जानी चाहिए।
(नपुंसकलिंग एकवचन)

(ii) पेच्छिएव्वउं/पेच्छव्वउं/पेच्छेवा= देखी जानी चाहिए।
(नपुंसकलिंग बहुवचन)

(ख) 3 (i) पेसिएव्वउं/पेसेव्वउं/पेसेवा = भेजा जाना चाहिए।(स्त्रीलिंग एकवचन)

(ii) पेसिएव्वउं/पेसेव्वउं/पेसेवा = भेजे जाने चाहिए। (स्त्रीलिंग बहुवचन)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वार्थिक प्रत्यय

1. अपभ्रंश भाषा में **'अ', 'अड'** और **'उल्ल'** स्वार्थिक प्रत्यय होते हैं। इनमें से कोई भी एक, दो अथवा कभी-कभी तीनों एक साथ संज्ञाओ में जोड़ दिए जाते हैं। इस प्रकार कुल स्वार्थिक प्रत्यय सात हो जाते हैं। (1) अ (2) अड (3) उल्ल (4) अडअ (5) उल्लअ (6) उल्लअड/उल्लड (7) उल्लअडअ/उल्लडअ।

उपर्युक्त स्वार्थिक प्रत्यय जोड़ने पर मूल अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

संज्ञा शब्दों में स्वार्थिक प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् विभक्ति बोधक प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

(i) (जीविय+अ) = **जीवियअ** (जीवित)

जीवियअ/जीवियआ/जीवियउ/जीवियओ (प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

(जीव+अड) = **जीवड** (जीव)

जीवड/जीवडा/जीवडु/जीवडो (प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

(गोर+अड) = गोरड →**गोरडी** (पत्नी) (प्रथमा विभक्ति, एकवचन)

(कुडी+उल्ल) = कुडुल्ल→**कुडुल्ली** (झोंपड़ी) (प्रथमा विभक्ति, एकवचन) (अपभ्रंश भाषा में स्त्रीलिंग में ई प्रत्यय जोड़ा जाता है)।

(ii) (हिअ+अड+अ) = हिअडअ (हृदय)

(चुड+उल्ल+अ) = चुडुल्लअ (कंकण)

(कन्न+उल्ल+अड) = कन्नुल्लड (कान)

(iii) (बाहुबल+उल्ल+अड+अ) = बाहुबलुल्लडअ (भुजा का बल)

---

2. अपभ्रंश भाषा में स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के अन्त में स्थित **'अकार'**को **'आ'** प्रत्यय की प्राप्ति होने के पहले **'इकार'** वर्ण की प्राप्ति हो जाती है। जैसे-

(धूलि+अड) = धूलड

(धूलड+आ) = धूलडिआ (धूलि-रजकण)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रेरणार्थक प्रत्यय

1. अपभ्रंश भाषा में प्रेरणा अर्थ में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'अ'** और **'आव'** प्रत्यय क्रिया में जोड़े जाते हैं। प्रेरणार्थक प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् अकर्मक क्रिया **सकर्मक** हो जाती है। इसलिए इस क्रिया में कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य का ही प्रयोग होता है। जैसे-

(हस+अ) = **हास** (हँसाना) (उपान्त्य[1] 'अ' का 'आ' हो जाता है)

(हस+आव) = **हसाव** (हँसाना)

(कर+अ) = **कार** (कराना) (उपान्त्य[1] 'अ' का 'आ' हो जाता है)

(कर+आव) = **कराव** (कराना)

क्रियाओं में प्रेरणार्थक प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् कालों के प्रत्यय जोड़ने से विभिन्न कालों के सकर्मक प्रेरणार्थक रूप बन जाते हैं। जैसे-

हस = हँसना (अकर्मक क्रिया)

वर्तमानकाल अन्य पुरुष एकवचन 3/1

(i) **हासइ** आदि (ii) **हसावइ** आदि = हँसाता है/हँसाती है।

भूतकाल अन्य पुरुष एकवचन 3/1

(i) **हासीअ** आदि (ii) **हसावीअ** आदि = हँसाया।

भविष्यत्काल अन्य पुरुष एकवचन 3/1

(i) **हासेसइ** आदि (ii) **हसावेसइ** आदि =हँसायेगा/हँसायेगी।

विधि एवं आज्ञा अन्य पुरुष एकवचन 3/1

(i) **हासउ, हासदु** (ii) **हसावउ, हसावदु** = हँसावे।

कर = करना (सकर्मक क्रिया)

वर्तमानकाल, अन्य पुरुष एकवचन 3/1

(i) **कारइ** आदि (ii) **करावइ** आदि = करवाता है/करवाती है।

---

1. उपान्त्य अर्थात् क्रिया के अन्त का पूर्ववर्ती स्वर।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भूतकाल, अन्य पुरुष एकवचन 3/1

(i) **कारीअ** (ii) **करावीअ** आदि = करवाया।

भविष्यत्काल, अन्य पुरुष एकवचन 3/1

(i) **कारेसइ** आदि (ii) **करावेसइ** आदि = करवायेगा/करवायेगी।

विधि एवं आज्ञा, अन्य पुरुष एकवचन 3/1

(i) **कारउ** आदि (ii) **करावउ** आदि = करवावे।

इसी प्रकार उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष के रूप बनेंगे।

कर्मवाच्य के प्रेरणार्थक प्रत्यय: आवि, 0

2. अपभ्रंश भाषा में प्रेरणा अर्थ में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **भाववाच्य** और **कर्मवाच्य** के **'आवि'** और **'शून्य' (0)** प्रत्यय क्रिया में जोड़े जाते हैं। इससे अकर्मक क्रिया सकर्मक बन जाती है। जैसे-

(हस+आवि) = **हसावि** (हँसाना)

(हस+0) = **हास** (हँसाना) (उपान्त्य[1] 'अ' का 'आ' हो जाता है)

(कर+आवि) = **करावि** (कराना)

(कर+0) = **कार** (कराना) (उपान्त्य[1] 'अ' का 'आ' हो जाता है)

क्रियाओं में प्रेरणार्थक प्रत्यय जोड़ने के पश्चात कर्मवाच्य के **इज्ज** और **इय** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

(क) हसावि+इज्ज = **हसाविज्ज** (हँसाया जाना)

हसावि+इय = **हसाविय** (हँसाया जाना)

हास+इज्ज = **हासिज्ज** (हँसाया जाना)

हास+इय = **हासिय** (हँसाया जाना)

(ख) करावि+इज्ज = **करावियज्ज** (करवाया जाना)

करावि+इय = **करावियय** (करवाया जाना)

---

1. उपान्त्य अर्थात् क्रिया के अन्त का पूर्ववर्ती स्वर।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

कार+इज्ज = **कारिज्ज** (करवाया जाना)

कार+इय = **कारिय** (करवाया जाना)

क्रियाओं में प्रेरणार्थक प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् कालों के प्रत्यय जोड़ने से विभिन्न कालों के प्रेरणार्थक कर्मवाच्य के रूप बन जाते हैं। जैसे-

वर्तमानकाल अन्य पुरुष एकवचन 3/1

(क) हसावि+इज्ज+इ आदि = **हसाविज्जइ** आदि (हँसाया जाता है)

हसावि+इय+इ आदि = **हसावियइ** आदि (हँसाया जाता है)

हास+इज्ज+इ आदि = **हासिज्जइ** आदि (हँसाया जाता है)

हास+इय+इ आदि = **हासियइ** आदि (हँसाया जाता है)

(ख) करावि+इज्ज+इ आदि = **करावियइ** आदि (करवाया जाता है)

करावि+इय+इ आदि = **करावियइ** आदि (करवाया जाता है)

कार+इज्ज+इ आदि = **कारिज्जइ** आदि (करवाया जाता है)

कार+इय+इ आदि = **कारियइ** आदि (करवाया जाता है)

भूतकाल अन्य पुरुष एकवचन 3/1

(क) हसावि+इज्ज+ईअ = **हसाविज्जईअ** (हँसाया गया)

हसावि+इय+ईअ = **हसावियईअ** (हँसाया गया)

हास+इज्ज+ईअ = **हासिज्जईअ** (हँसाया गया)

हास+इय+ईअ = **हासियईअ** (हँसाया गया)

(ख) करावि+इज्ज+ईअ = **करावियईअ** (करवाया गया)

करावि+इय+ईअ = **करावियईअ** (करवाया गया)

कार+इज्ज+ईअ = **कारिज्जईअ** (करवाया गया)

कार+इय+ईअ = **कारियईअ** (करवाया गया)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

(क) हसावि+इज्ज+उ आदि = **हसाविज्जउ** आदि (हँसाया जावे)
हसावि+इय+उ आदि = **हसावियउ** आदि (हँसाया जावे)
हास+इज्ज+उ आदि = **हासिज्जउ** आदि (हँसाया जावे)
हास+इय+उ आदि = **हासियउ** आदि (हँसाया जावे)

(ख) करावि+इज्ज+उ आदि = **करावियउ** आदि (करवाया जावे)
करावि+इय+उ = **करावियउ** आदि (करवाया जावे)
कार+इज्ज+उ = **कारिज्जउ** आदि (करवाया जावे)
कार+इय+उ= **कारियउ** आदि (करवाया जावे)

इसी प्रकार उत्तम पुरुष एवं मध्यम पुरुष के रूप बना लेने चाहिए।

नोट– **भविष्यत्काल** में प्रेरणार्थक कर्मवाच्य में **'इज्ज, इय/इअ'** प्रत्यय नहीं लगते हैं। भविष्यत्काल में प्रेरणार्थक कर्मवाच्य में भविष्यत्काल की क्रिया का रूप कर्तृवाच्य के अनुसार ही रहेगा किन्तु अर्थ कर्मवाच्य के अनुसार होगा।

कृदन्तों के प्रेरणार्थक प्रत्यय: आवि, 0

3. अपभ्रंश भाषा में प्रेरणा अर्थ में *प्राकृत भाषा* के अनुसार **'आवि'** और **'शून्य' (0)** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। क्रियाओं में प्रेरणार्थक प्रत्यय जोड़ने के पश्चात कृदन्तों के प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे-

(हस+आवि) = **हसावि** (हँसाना)
(हस+0) = **हास** (हँसाना) (उपान्त्य 'अ' का 'आ' हो जाता है)।
(कर+आवि) = **करावि** (कराना)
(कर+0) = **कार** (कराना) (उपान्त्य 'अ' का 'आ' हो जाता है)

क्रियाओं में प्रेरणार्थक प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् कृदन्तों के प्रत्यय जोड़ने से विभिन्न कृदन्तों के सकर्मक प्रेरणार्थक रूप बन जाते हैं। जैसे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रेरणार्थक भूतकालिक कृदन्त

(क) हसावि+अ/य = **हसाविअ/हसाविय** (हँसाया गया)

हास+अ/य = **हासिअ/हासिय** (हँसाया गया)

(ख) करावि+अ/य = **करावि‌अ/करावि‌य** (कराया गया)

कार+अ/य = **कारिअ/कारिय** (कराया गया)

प्रेरणार्थक वर्तमान कृदन्त

(क) हसावि+अ+न्त = **हसावन्त** (हँसाता हुआ)

हसावि+अ+माण = **हसावमाण** (हँसाता हुआ)

नोट- यहाँ हसावि के बाद 'अ' विकरण लगाया गया है क्योंकि अपभ्रंश में क्रियाओं को अकारान्त करने की प्रवृत्ति होती है।

हास+न्त = **हासन्त** (हँसाता हुआ)

हास्+माण = **हासमाण** (हँसाता हुआ)

(ख) करावि+अ+न्त = **करावन्त** (करवाता हुआ)

करावि+अ+माण = **करावमाण** (करवाता हुआ)

नोट- यहाँ करावि के बाद 'अ' विकरण लगाया गया है क्योंकि अपभ्रंश में क्रियाओं को अकारान्त करने की प्रवृत्ति होती है।

कार+न्त = **कारन्त** (करवाता हुआ)

कार+माण = **कारमाण** (करवाता हुआ)

प्रेरणार्थक विधि कृदन्त

1. हसावि+अव्व आदि = **हसावि‌अव्व** आदि (हँसाया जाना चाहिए)

हसावि+इएव्वउं = **हसावि‌एव्वउं** (हँसाया जाना चाहिए)

हसावि+एव्वउं = **हसावेव्वउं** (हँसाया जाना चाहिए)

हसावि+एवा = **हसावेवा** (हँसाया जाना चाहिए)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

2. हास+अव्व आदि=**हासिअव्व/हासेअव्व आदि** (हँसाया जाना चाहिए)

हास+इएव्वउं = **हासिएव्वउं** (हँसाया जाना चाहिए)

हास+एव्वउं = **हासेव्वउं** (हँसाया जाना चाहिए)

हास+एवा = **हासेवा** (हँसाया जाना चाहिए)

प्रेरणार्थक सम्बन्धक कृदन्त

1. (i) हसावि+इ = **हसाविइ** (हँसाकर)

हसावि+इउ = **हसाविउ** (हँसाकर)

हसावि+इवि = **हसाविवि** (हँसाकर)

हसावि+अवि = **हसावि** (हँसाकर)

हसावि+एप्पि = **हसावेप्पि** (हँसाकर)

हसावि+एप्पिणु = **हसावेप्पिणु** (हँसाकर)

हसावि+एवि = **हसावेवि** (हँसाकर)

हसावि+एविणु = **हसावेविणु** (हँसाकर)

(ii) हसावि+इय = **हसाविय** (हँसाकर)

हसावि+दूण = **हसाविदूण** (हँसाकर)

हसावि+त्ता = **हसावित्ता** (हँसाकर)

2. (i) हास+इ = **हासि** (हँसाकर)

हास+उ = **हासिउ** (हँसाकर)

हास+इवि = **हासिवि** (हँसाकर)

हास+अवि = **हासवि** (हँसाकर)

हास+एप्पि = **हासेप्पि** (हँसाकर)

हास+एप्पिणु = **हासेप्पिणु** (हँसाकर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

हास+एवि = **हासेवि** (हँसाकर)

हास+एविणु = **हासेविणु** (हँसाकर)

(ii) हास+इय = **हासिय** (हँसाकर)

हासि+दूण = **हासिदूण** (हँसाकर)

हासि+त्ता = **हासित्ता** (हँसाकर)

प्रेरणार्थक हेत्वर्थक कृदन्त

1. हसावि+एवं = **हसावेवं** (हँसाने के लिए)

हसावि+अण = **हसावण** (हँसाने के लिए)

हसावि+अणहं = **हसावणहं** (हँसाने के लिए)

हसावि+अणहिं = **हसावणहिं** (हँसाने के लिए)

हसावि+एप्पि = **हसावेप्पि** (हँसाने के लिए)

हसावि+एप्पिणु = **हसावेप्पिणु** (हँसाने के लिए)

हसावि+एवि = **हसावेवि** (हँसाने के लिए)

हसावि+एविणु = **हसावेविणु** (हँसाने के लिए)

2. हास+एवं = **हासेवं** (हँसाने के लिए)

हास+अण = **हासण** (हँसाने के लिए)

हास+अणहं = **हासणहं** (हँसाने के लिए)

हास+अणहिं = **हासणहिं** (हँसाने के लिए)

हास+एप्पि = **हासेप्पि** (हँसाने के लिए)

हास+एप्पिणु = **हासेप्पिणु** (हँसाने के लिए)

हास+एवि = **हासेवि** (हँसाने के लिए)

हास+एविणु = **हासेविणु** (हँसाने के लिए)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संख्यावाची शब्द

1. अपभ्रंश भाषा में *प्राकृत भाषा* के अनुसार दो के लिए **'दो'** और **'वे'** का प्रयोग किया जाता है।

प्रथमा विभक्ति बहुवचन - **दुवे, दोण्णि, वेण्णि, दुण्णि, विण्णि**

द्वितीया विभक्ति बहुवचन - **दुवे, दोण्णि, वेण्णि, दुण्णि, विण्णि**

तृतीया विभक्ति बहुवचन - **दोहि, वेहि**

पंचमी विभक्ति बहुवचन - **दोहिन्तो, वेहिन्तो**

चतुर्थी व षष्ठी विभक्ति बहुवचन - **दोण्ह, दोण्हं, वेण्ह, वेण्हं**

सप्तमी विभक्ति बहुवचन - **दोसु, वेसु** का प्रयोग किया जाता है।

---

2. अपभ्रंश भाषा में *प्राकृत भाषा* के अनुसार तीन के लिए **'ति'** का प्रयोग किया जाता है।

प्रथमा विभक्ति बहुवचन - **तिण्णि**

द्वितीया विभक्ति बहुवचन - **तिण्णि**

तृतीया विभक्ति बहुवचन - **तीहिं**

पंचमी विभक्ति बहुवचन - **तीहिन्तो**

चतुर्थी व षष्ठी विभक्ति बहुवचन - **तिण्ह, तिण्हं**

सप्तमी विभक्ति बहुवचन - **तीसु**

---

3. अपभ्रंश भाषा में *प्राकृत भाषा* के अनुसार चार के लिए **'चउ'** का प्रयोग किया जाता है।

प्रथमा विभक्ति बहुवचन - **चत्तारो, चउरो, चत्तारि**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीया विभक्ति बहुवचन - **चत्तारो, चउरो, चत्तारि**

चतुर्थी व षष्ठी विभक्ति बहुवचन - **चउण्ह, चउण्हं**

---

4. अपभ्रंश भाषा में *प्राकृत भाषा* के अनुसार पाँच के लिए **'पंच'** का प्रयोग किया जाता है।

चतुर्थी व षष्ठी विभक्ति बहुवचन - **पंचण्ह, पंचण्हं**

नोट-

(i) संख्यावाची शब्दों के रूपावली विधान आदि को 'प्रौढ अपभ्रंश रचना सौरभ भाग-1' के पाठ 6, 7, 8 में समझाया गया है।

(ii) अपभ्रंश भाषा में शब्द-रचना-प्रवृत्ति कहीं-कहीं प्राकृत भाषा[1] के अनुसार होती है और कहीं-कहीं पर शौरसेनी भाषा के समान भी होती है।

◆◆◆

---

1. हेमचन्द्र वृत्ति 4/329

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अव्यय

1. अपभ्रंश भाषा में **'किस प्रकार'** के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

   केम/किम/किह/किध/केवँ/किवँ = किस प्रकार

2. अपभ्रंश भाषा में **'जिस प्रकार'** के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

   जेम/जिम/जिह/जिध/जेवँ/जिवँ = जिस प्रकार

3. अपभ्रंश भाषा में **'उस प्रकार'** के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

   तेम/तिम/तिह/तिध/तेवँ/तिवँ = उस प्रकार

4. अपभ्रंश भाषा में **'इस प्रकार'** के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

   एम/इम/इह/इध = इस प्रकार

5. अपभ्रंश भाषा में **'जिसके समान'**, **'उसके समान'**, **'किसके समान'** और **'इसके समान'** के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता हैं।

   जेह, जइस = जिसके समान

   तेह, तइस = उसके समान

   केह, कइस = किसके समान

   एह, अइस = इसके समान

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

6. अपभ्रंश भाषा में **'जहाँ पर'**, **'वहाँ पर'** के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

जेत्थु/जत्तु = जहाँ पर

तेत्थु/तत्तु = वहाँ पर

7. अपभ्रंश भाषा में **'कहाँ पर'**, **'यहाँ पर'** के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

केत्थु = कहाँ पर

एत्थु = यहाँ पर

8. अपभ्रंश भाषा में **'जब तक'**, **'तब तक'**, के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

जाम/जाउं/जामहिं/जावँ = जब तक

ताम/ताउं/तामहिं/तावँ/दाव = तब तक

9. अपभ्रंश भाषा में **'जितना'**, **'उतना'**, के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

जेवड/जेत्तुल = जितना

तेवड/तेत्तुल = उतना

10. अपभ्रंश भाषा में **'इतना'**, **'कितना'**, के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

एवड/एत्तुल = इतना

केवड/केत्तुल = कितना

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

11. अपभ्रंश भाषा में **'अन्य प्रकार से-दूसरी तरह से'** के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

अनु/अन्नह= अन्य प्रकार से/दूसरी तरह से

12. अपभ्रंश भाषा में **'कहाँ से'** के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

कउ/कहन्तिहु = कहाँ से

13. अपभ्रंश भाषा में **'वैसा है तो, उस कारण से है तो'** के लिए निम्न अव्यय का प्रयोग किया जाता है।

तो = वैसा है तो/उस कारण से है तो

14. अपभ्रंश भाषा में निम्न विविध अव्ययों का भी प्रयोग किया जाता है।

1. एम्व = इस प्रकार से/इस तरह से
2. पर = किन्तु/परन्तु
3. समाणु = साथ
4. ध्रुवु = निश्चय ही
5. मं = मत/नहीं
6. मणाउ = थोड़ा सा भी/अल्प भी

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

15. अपभ्रंश भाषा में निम्न विविध अव्ययों का भी प्रयोग किया जाता है।

1. किर = निश्चय ही
2. अहवइ = अथवा
3. दिवे = दिन/दिवस
4. सहुं = साथ में
5. नाहिं = नहीं

16. अपभ्रंश भाषा में निम्न विविध अव्ययों का भी प्रयोग किया जाता है।

1. पच्छइ = पीछे/बादे में
2. एम्वइ = ऐसा ही/ इस प्रकार का ही
3. जि = ही, निश्चय ही
4. एम्वहिं = इसी समय में/अभी
5. पच्चलिउ = वैपरीत्य/उल्टापना
6. एत्तहे = इस तरफ/इधर/एक ओर

17. अपभ्रंश भाषा में **घइं** और **खाइ** आदि ऐसे अनेक अव्यय प्रयुक्त होते हैं जिनका कोई अर्थ नहीं होता है अर्थात् वाक्यालंकार के रूप में इन अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

18. अपभ्रंश भाषा में '**के लिये**' इस अर्थ के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

केहिं/तेहिं/रेसि/रेसिं/तणेण = के लिए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

19. अपभ्रंश भाषा में '**फिर से**' के लिए 'पुणु' तथा '**बिना**' के लिए 'विनु' अव्यय का प्रयोग किया जाता है।

पुणु = फिर से

विनु = बिना

20. अपभ्रंश भाषा में '**अवश्य**' के लिए 'अवस' तथा 'अवसें' अव्यय का प्रयोग किया जाता है।

अवस/अवसें = अवश्य

21. अपभ्रंश भाषा में '**एक बार**' के लिए 'एक्कसि' तथा 'इक्कसि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है।

एक्कसि/इक्कसि = एक बार

22. अपभ्रंश भाषा में '**के समान**' अथवा '**के जैसा**' के लिए निम्न अव्ययों का प्रयोग किया जाता है।

नं/नउ/नाइ/नावइ/जणि/जणु = के समान/के जैसा

◆◆◆

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विविध

1. अपभ्रंश भाषा में **'करता हूँ'** (उत्तम पुरुष एकवचन) अर्थ में <u>विकल्प से</u> **'कीसु'** क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे-

   कीसु = मैं करता हूँ।

2. अपभ्रंश भाषा में **'छोलना'** अर्थ में **'छोल्ल'** क्रिया-रूप का प्रयोग होता है। जैसे-

   छोल्ल (सकर्मक) = छोलना

3. अपभ्रंश भाषा में **'परस्पर'** के लिए **'अवरोप्पर'** पद का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

   अवरोप्पर = परस्पर

4. अपभ्रंश भाषा में **'अन्य के समान'**, तथा **'दूसरे के समान'** के लिए निम्न पदों का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

   अन्नाइस (विशेषण)/अवराइस (विशेषण)= अन्य के समान/दूसरे के समान

5. अपभ्रंश भाषा में भाववाचक अर्थ में **'प्पण'**और **'त्तण'** प्रत्यय प्रयुक्त होता है। जैसे-

   (भल्ल+प्पण) = भल्लप्पण (भद्रता/सज्जनता)

   (भल्ल+त्तण) = भल्लत्तण (भद्रता/सज्जनता)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

6. अपभ्रंश-भाषा में **'क-ख-ग'** आदि सभी व्यंजनो में स्थित **'ए'** तथा **'ओ'** स्वर ह्रस्व हो जाते हैं । जैसे-

दुल्लहहो का **दुल्लहहों** हो जाता है। यहाँ **'हो'** को ह्रस्व किया गया है।

कलिजुगे का **कलिजुगि** हो जाता है। यहाँ **'ए'** को ह्रस्व किया गया है।

7. अपभ्रंश-भाषा में **'के स्वभाव वाला'**अथवा **'वाला'** अर्थ में **'अणअ'** प्रत्यय क्रिया में जोड़ा जाता है।

(मार+अणअ) = मारणअ (मारने के स्वभाव वाला/मारने वाला)

8. अपभ्रंश भाषा में पदान्त **'उं, हुं, हिं, हं'** का उच्चारण ह्रस्व रूप से होता है। जैसे-

तुच्छउं के लिए तुच्छउँ । यहाँ **'उँ'** को ह्रस्व किया गया है।

तरुहुं के लिए तरुहुँ । यहाँ **'हुँ'** को ह्रस्व किया गया है।

जहिं के लिए जहिँ । यहाँ **'हिँ'** को ह्रस्व किया गया है।

तणहं के लिए तणहँ । यहाँ **'हँ'** को ह्रस्व किया गया है।

लिंग परिवर्तन

9. अपभ्रंश भाषा में शब्दों के लिंग के सम्बन्ध में यह नियम है कि पुल्लिंग शब्द को कभी-कभी नपुंसकलिंग के रूप में व्यक्त कर दिया जाता है और कभी-कभी नपुंसकलिंग वाले शब्द को पुल्लिग के रूप में व्यक्त कर दिया जाता है। इसी प्रकार से स्त्रीलिंग वाले शब्द को

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग के रूप में और नपुंसकलिंग वाले शब्द को स्त्रीलिंग के रूप में प्रयुक्त कर दिया जाता है। जैसे-

गयकुम्भइं दारन्तु = हाथियों के गण्डस्थलों को चीरते हुए

यहाँ '**कुम्भ**' शब्द पुल्लिंग है उसे नपुंसकलिंग के रूप में व्यक्त किया गया है।

अब्भा लग्गा डुङ्गरिहिं = पर्वतों के शिखरों पर लगे हुए

यहाँ '**अब्भ**' शब्द नपुंसकलिंग है उसे पुल्लिंग के रूप में व्यक्त किया गया है।

पुणु डालइं मोडन्ति = फिर डालियों को तोड़ते हैं-मरोड़ते हैं

यहाँ '**डाली**' शब्द स्त्रीलिंग है उसे नपुंसकलिंग के रूप में व्यक्त किया गया है।

पाइ विलग्गी अन्त्रडी = आन्तड़ियाँ पैरों तक लटकी हुई है

यहाँ '**अन्त्र**' शब्द नपुंसकलिंग है उसे स्त्रीलिंग के रूप में व्यक्त किया गया है।

10. अपभ्रंश भाषा में शौरसेनी प्राकृत का भी प्रयोग होता है। जैसे-

निव्वुदि = निवृत्ति

विणिम्मविदु = स्थापित किया हुआ

किदु = किया हुआ

रदिए = रति के

विहिदु = किया गया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

11. अपभ्रंश भाषा में काल बोधक प्रत्ययों में भी परस्पर में व्यत्यय अर्थात् उलट-पुलटपना भी पाया जाता है। वर्तमानकाल के प्रत्ययों का प्रयोग भूतकाल के अर्थ में तथा भूतकाल के प्रत्ययों का वर्तमानकाल के अर्थ में प्रयोग कर लिया जाता है। जैसे-

वर्तमानकाल के प्रत्यय का प्रयोग भूतकाल के अर्थ में

अह **पेच्छइ** रहु तणओ = इसके बाद रघु के लड़के ने देखा।

उपर्युक्त उदाहरण में वर्तमानकाल के **'इ'** प्रत्यय का प्रयोग किया गया है लेकिन अर्थ भूतकाल का लिया गया है।

भूतकाल के प्रत्यय का प्रयोग वर्तमानकाल के अर्थ में

सुणीअ एस वण्ठो = यह बौना (वामन) सुनता है।

उपर्युक्त उदाहरण में भूतकाल के **'ईअ'** प्रत्यय का प्रयोग किया गया है लेकिन अर्थ वर्तमानकाल का लिया गया है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-1

संज्ञा शब्दों की रूपावली

अकारान्त पुल्लिंग - देव (देव)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	देव, *देवा, देवु, देवो	देव, *देवा
द्वितीया	देव, *देवा, देवु,	देव, *देवा
तृतीया	देवेण, देवेणं[1], देवें	देवहिं, *देवाहिं, देवेहिं
चतुर्थी	देव, *देवा	देव, *देवा
व	देवसु, *देवासु,	देवहं, *देवाहं
षष्ठी	देवहो, *देवाहो, देवस्सु	
पंचमी	देवहे, *देवाहे, देवहु, *देवाहु	देवहुं, *देवाहुं
सप्तमी	देवि, देवे	देवहिं, *देवाहिं
सम्बोधन	हे देव, हे *देवा, हे देवु, हे देवो	हे देव, हे *देवा, हे देवहो, हे *देवाहो

नोट- अकारान्त, इ-ईकारान्त और उ-ऊकारान्त पुल्लिंग, अकारान्त, इकारान्त और उकारान्त नपुंसकलिंग और आकारान्त, इ-ईकारान्त उ-ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों में प्रथमा विभक्ति से संबोधन तक के प्रत्यय परे होने पर/रहने पर अंतिम स्वर **दीर्घ होने पर ह्रस्व तथा ह्रस्व होने पर दीर्घ** हो जाता है। (जो प्रत्यय संज्ञा शब्दों में मिलकर रूप निर्माण करते हैं अर्थात् जो परे नहीं बने रहते वहाँ यह नियम लागू नहीं होता है)

जैसे- **देवु, देवि, देवें, देवेण, देवो।**

कमलु, कमलि, कमलें, कमलेण।

1. तृतीया विभक्ति के एकवचन में 'ण' और 'णं' दोनों प्रत्ययों का प्रयोग होता है। इसी प्रकार अन्य रूपों में भी समझ लेना चाहिए।

* इस चिह्न का प्रयोग संज्ञा-सर्वनाम की रूपावली में दर्शाया गया है।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इकारान्त पुल्लिंग - हरि (हरि)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरि, *हरी	हरि, *हरी
द्वितीया	हरि, *हरी	हरि, *हरी
तृतीया	हरिएं, *हरीएं, हरिं, *हरीं हरिण, *हरीण, हरिणं, *हरीणं	हरिहिं, *हरीहिं
चतुर्थी	हरि, *हरी	हरि, *हरी
व		हरिहुं, *हरीहुं
षष्ठी		हरिहं, हरीहं*
पंचमी	हरिहे, *हरीहे	हरिहुं, *हरीहुं
सप्तमी	हरिहि, *हरीहि	हरिहिं, *हरीहिं, हरिहुं, *हरीहुं
सम्बोधन	हे हरि, हे *हरी	हे हरि, हे *हरी, हे हरिहो, हे *हरीहो

ईकारान्त पुल्लिंग - गामणी (गाँव का मुखिया)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	गामणी, *गामणि	गामणी, *गामणि
द्वितीया	गामणी, *गामणि	गामणी, *गामणि
तृतीया	गामणीएं, *गामणिएं, गामणीं, *गामणिं, गामणीण, *गामणिण, गामणीणं, *गामणिणं	गामणीहिं, *गामणिहिं
चतुर्थी	गामणी, *गामणि	गामणी, *गामणि
व		गामणीहुं, *गामणिहुं
षष्ठी		गामणीहं, *गामणिहं
पंचमी	गामणीहे, *गामणिहे	गामणीहुं, *गामणिहुं
सप्तमी	गामणीहि, *गामणिहि	गामणीहिं, *गामणिहिं, गामणीहुं, *गामणिहुं
सम्बोधन	हे गामणी, हे *गामणि	हे गामणी, हे *गामणि हे गामणीहो, हे *गामणिहो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उकारान्त पुल्लिंग - साहु (साधू)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	साहु, *साहू	साहु, *साहू
द्वितीया	साहु, *साहू	साहु, *साहू
तृतीया	साहुएं, *साहूएं, साहुं, *साहूं साहुण, *साहूण, साहुणं, *साहूणं	साहुहिं, *साहूहिं
चतुर्थी	साहु, *साहू	साहु, *साहू
व		साहुहुं, *साहूहुं
षष्ठी		साहुहं, *साहूहं
पंचमी	साहुहे, *साहूहे	साहुहुं, *साहूहुं
सप्तमी	साहुहि, *साहूहि	साहुहिं, *साहूहिं, साहुहुं, *साहूहुं
सम्बोधन	हे साहु, हे साहू*	हे साहु, हे *साहू, हे साहुहो, हे *साहूहो

ऊकारान्त पुल्लिंग - सयंभू (सर्वज्ञ)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सयंभू, *सयंभु	सयंभू, *सयंभु
द्वितीया	सयंभू, *सयंभु	सयंभू, *सयंभु
तृतीया	सयंभूएं, *सयंभुएं, सयंभूं, *सयंभु सयंभूण, *सयंभुण, सयंभूणं, *सयंभुणं	सयंभूहिं, सयंभुहिं*
चतुर्थी	सयंभू, *सयंभु	सयंभू, *सयंभु
व		सयंभूहुं, *सयंभुहुं
षष्ठी		सयंभूहं, *सयंभुहं
पंचमी	सयंभूहे, *सयंभुहे*	सयंभूहुं, *सयंभुहुं
सप्तमी	सयंभूहि, *सयंभुहि	सयंभूहिं, *सयंभुहिं, सयंभूहुं, *सयंभुहुं
सम्बोधन	हे सयंभू, हे *सयंभु	हे सयंभू, हे *सयंभु, हे सयंभूहो, हे *सयंभुहो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त नपुंसकलिंग – कमल (कमल का फूल)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कमल, *कमला, कमलु	कमल, *कमला, कमलइं, *कमलाइं
द्वितीया	कमल, *कमला, कमलु	कमल, *कमला, कमलइं, *कमलाइं
तृतीया	कमलेण, कमलेणं, कमलें	कमलहिं, *कमलाहिं, कमलेहिं
चतुर्थी	कमल, *कमला	कमल, *कमला
व	कमलसु, *कमलासु,	कमलहं, *कमलाहं
षष्ठी	कमलहो, *कमलाहो, कमलस्सु	
पंचमी	कमलहे, *कमलाहे, कमलहु, *कमलाहु	कमलहुं, *कमलाहुं
सप्तमी	कमलि, कमले	कमलहिं, *कमलाहिं
सम्बोधन	हे कमल, हे *कमला, हे कमलु,	हे कमल, हे *कमला, हे कमलहो, हे *कमलाहो

इकारान्त नपुंसकलिंग – वारि (जल)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि, *वारी	वारि, *वारी, वारिइं, *वारीइं
द्वितीया	वारि, *वारी	वारि, *वारी, वारिइं, *वारीइं
तृतीया	वारिएं, *वारीएं, वारिं, *वारीं वारिण, *वारीण, वारिणं, *वारीणं	वारिहिं, वारीहिं*
चतुर्थी	वारि, *वारी	वारि, *वारी
व		वारिहुं, *वारीहुं
षष्ठी		वारिहं, *वारीहं
पंचमी	वारिहे, *वारीहे	वारिहुं, *वारीहुं
सप्तमी	वारिहि, *वारीहि	वारिहिं, *वारीहिं, वारिहुं, *वारीहूं
सम्बोधन	हे वारि, हे *वारी	हे वारि, हे *वारी, हे वारिहो, हे *वारीहो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उकारान्त नपुंसकलिंग – महु (मधु)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	महु, *महू	महु, *महू, महुइं, *महूइं
द्वितीया	महु, *महू	महु, *महू, महुइं, *महूइं
तृतीया	महुएं, *महूएं, महुं, *महूं महुण, *महूण, महुणं, *महूणं	महुहिं, *महूहिं
चतुर्थी	महु, *महू	महु, *महू
व		महुहुं, *महूहुं
षष्ठी		महुहं, महूहं*
पंचमी	महुहे, *महूहे	महुहुं, *महूहुं
सप्तमी	महुहि, *महूहि	महुहिं, *महूहिं, महुहुं, *महूहुं
सम्बोधन	हे महु, हे *महू	हे महु, हे *महू, हे महुहो, हे *महूहो

आकारान्त स्त्रीलिंग – कहा (कथा)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कहा, *कह	कहा, *कह, कहाउ, *कहउ, कहाओ, *कहओ
द्वितीया	कहा, *कह	कहा, *कह, कहाउ, *कहउ, कहाओ, *कहओ
तृतीया	कहाए, *कहए	कहाहिं, *कहहिं
चतुर्थी	कहा, *कह	कहा, *कह
व	कहाहे, *कहहे,	कहाहु, *कहहु
षष्ठी		
पंचमी	कहाहे, *कहहे	कहाहु, *कहहु
सप्तमी	कहाहिं, *कहहिं	कहाहिं, *कहहिं
सम्बोधन	हे कहा, हे *कह	हे कहा, हे *कह, हे कहाउ, हे *कहउ, हे कहाओ, हे *कहओ हे कहाहो, हे *कहहो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

इकारान्त स्त्रीलिंग – मइ (मति)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	मइ, *मई	मइ, *मई, मइउ, *मईउ, मइओ, *मईओ
द्वितीया	मइ, *मई	मइ, *मई, मइउ, *मईउ, मइओ, *मईओ
तृतीया	मइए, *मईए	मइहिं, *मईहिं
चतुर्थी	मइ, *मई	मइ, *मई
व	मइहे, *मईहे	मइहु, *मईहु
षष्ठी		
पंचमी	मइहे, *मईहे	मइहु, *मईहु
सप्तमी	मइहिं, *मईहिं	मइहिं, *मईहिं,
सम्बोधन	हे मइ, हे *मई	हे मइ, हे *मई, हे मइउ, हे *मईउ हे मइओ, हे *मईओ, हे मइहो, हे *मईहो

ईकारान्त स्त्रीलिंग – लच्छी (लक्ष्मी)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	लच्छी, *लच्छि	लच्छी, *लच्छि, लच्छीउ, *लच्छिउ, लच्छीओ, *लच्छिओ
द्वितीया	लच्छी, *लच्छि	लच्छी, *लच्छि, लच्छीउ, *लच्छिउ, लच्छीओ, *लच्छिओ
तृतीया	लच्छीए, *लच्छिए	लच्छीहिं, *लच्छिहिं
चतुर्थी	लच्छी, *लच्छि	लच्छी, *लच्छि
व षष्ठी	लच्छीहे, *लच्छिहे	लच्छीहु, *लच्छिहु
पंचमी	लच्छीहे, *लच्छिहे	लच्छीहु, *लच्छिहु
सप्तमी	लच्छीहिं, *लच्छिहिं	लच्छीहिं, *लच्छिहिं
सम्बोधन	हे लच्छी, हे *लच्छि	हे लच्छी, हे *लच्छि, हे लच्छीउ, हे *लच्छिउ, हे लच्छीओ, हे *लच्छिओ हे लच्छीहो, हे *लच्छिहो

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उकारान्त स्त्रीलिंग - धेणु (गाय)

प्रथमा	धेणु, *धेणू	धेणु, *धेणू, धेणुउ, *धेणूउ, धेणुओ, *धेणूओ
द्वितीया	धेणु, *धेणू	धेणु, *धेणू, धेणुउ, *धेणूउ, धेणुओ, *धेणूओ
तृतीया	धेणुए, *धेणूए	धेणुहिं, *धेणूहिं
चतुर्थी व षष्ठी	धेणु, *धेणू धेणुहे, *धेणूहे	धेणु, *धेणू, धेणुहु, *धेणूहु
पंचमी	धेणुहे, *धेणूहे	धेणुहु, *धेणूहु
सप्तमी	धेणुहिं, *धेणूहिं	धेणुहिं, *धेणूहिं
सम्बोधन	हे धेणु, हे *धेणू	हे धेणु, हे *धेणू, हे धेणुउ, हे *धेणूउ, हे धेणुओ, हे *धेणूओ, हे धेणुहो, हे *धेणूहो

ऊकारान्त स्त्रीलिंग - बहू (बहू)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	बहू, *बहु	बहू, *बहु, बहूउ, *बहुउ, बहूओ, *बहुओ
द्वितीया	बहू, *बहु	बहू, *बहु, बहूउ, *बहुउ, बहूओ, *बहुओ
तृतीया	बहूए, *बहुए	बहूहिं, *बहुहिं
चतुर्थी व षष्ठी	बहू, *बहु, बहूहे, *बहुहे,	बहू, *बहु, बहूहु, *बहुहु
पंचमी	बहूहे, *बहुहे	बहूहु, *बहुहु
सप्तमी	बहूहिं, *बहुहिं	बहूहिं, *बहुहिं
सम्बोधन	हे बहू, हे *बहु	हे बहू, हे *बहु, हे बहूउ, हे *बहुउ, हे बहूओ, हे *बहुओ, हे बहूहो, हे *बहुहो

◆◆◆

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-2

सर्वनाम शब्दों की रूपावली

पुल्लिंग - सव्व (सब)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्व, *सव्वा, सव्वु, सव्वो (सब, सबने)	सव्व, *सव्वा (सबने)
द्वितीया	सव्व, *सव्वा, सव्वु (सबको)	सव्व,*सव्वा (सबको)
तृतीया	सव्वें, सव्वेण, सव्वेणं (सबसे, सबके द्वारा)	सव्वहिं, *सव्वाहिं, सव्वेहिं (सबसे, सबके द्वारा)
चतुर्थी व	सव्व, *सव्वा सव्वसु, *सव्वासु,	सव्व, *सव्वा सव्वहं, *सव्वाहं
षष्ठी	सव्वहो, *सव्वाहो, सव्वस्सु (सबके लिए) (सबका, सबकी, सबके)	(सबके लिए) (सबका, सबकी, सबके)
पंचमी	सव्वहां, *सव्वाहां (सबसे)	सव्वहुं, *सव्वाहुं (सबसे)
सप्तमी	सव्वहिं, *सव्वाहिं (सबमें, सब पर)	सव्वहिं, *सव्वाहिं (सबमें, सब पर)

नपुंसकलिंग - सव्व (सब)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्व, *सव्वा, सव्वु (सबने)	सव्व,*सव्वा, सव्वइं, *सव्वाइं (सब, सबने)
द्वितीया	सव्व, *सव्वा, सव्वु (सबको)	सव्व, *सव्वा, सव्वइं, *सव्वाइं (सबको)
तृतीया	सव्वें, सव्वेण, सव्वेणं (सबसे, सबके द्वारा)	सव्वहिं, *सव्वाहिं, सव्वेहिं (सबसे, सबके द्वारा)
चतुर्थी व	सव्व, *सव्वा सव्वसु, *सव्वासु,	सव्व, *सव्वा सव्वहं, *सव्वाहं
षष्ठी	सव्वहो, *सव्वाहो, सव्वस्सु (सबके लिए) (सबका, सबकी, सबके)	(सबके लिए) (सबका, सबकी, सबके)
पंचमी	सव्वहां, *सव्वाहां (सबसे)	सव्वहुं, *सव्वाहुं (सबसे)
सप्तमी	सव्वहिं, *सव्वाहिं (सबमें, सब पर)	सव्वहिं, *सव्वाहिं (सबमें, सब पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त स्त्रीलिंग - सव्वा (सब)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वा, *सव्व (सब, सबने)	सव्वा, *सव्व, सव्वाउ, *सव्वउ, सव्वाओ, *सव्वओ (सबने)
द्वितीया	सव्वा, *सव्व (सबको)	सव्वा, *सव्व, सव्वाउ, *सव्वउ, सव्वाओ, *सव्वओ (सबको)
तृतीया	सव्वाए, *सव्वए (सबसे, सबके द्वारा)	सव्वाहिं, *सव्वहिं (सबसे, सबके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	सव्वा, *सव्व सव्वाहे, *सव्वहे, (सबके लिए) (सबका, सबकी, सबके)	सव्वा, *सव्व सव्वाहु, *सव्वहु (सबके लिए) (सबका, सबकी, सबके)
पंचमी	सव्वाहे, *सव्वहे (सबसे)	सव्वाहु, *सव्वहु (सबसे)
सप्तमी	सव्वाहिं, *सव्वहिं (सबमें, सब पर)	सव्वाहिं, *सव्वहिं (सबमें, सब पर)

पुल्लिंग - त (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	स, *सा, सु, सो, त्रं, तं (वह, उसने)	त, *ता (वे, उन्होंने)
द्वितीया	त्रं, तं (उसे, उसको)	त, *ता (उन्हें, उनको)
तृतीया	तें, तेण, तेणं (उससे, उसके द्वारा)	तहिं, *ताहिं, तेहिं (उनसे, उनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	त, *ता, तासु, तहो, *ताहो, तस्सु (उसके लिए) (उसका, उसकी, उसके)	त, *ता, तहं, *ताहं (उनके लिए) (उनका, उनकी, उनके)
पंचमी	तहां, *ताहां (उस से)	तहुं, *ताहुं (उन से)
सप्तमी	तहिं, *ताहिं (उसमें, उस पर)	तहिं, *ताहिं (उनमें, उन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग – त (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्रं, तं	त, *ता, तइं, *ताइं
	(वह, उसने)	(वे, उन्होंने)
द्वितीया	त्रं, तं	त, *ता, तइं, *ताइं
	(उसे, उसको)	(उन्हें, उनको)
तृतीया	तें, तेण, तेणं	तहिं, *ताहिं, तेहिं
	(उससे, उसके द्वारा)	(उनसे, उनके द्वारा)
चतुर्थी	त, *ता, तासु,	त, *ता, तहं, *ताहं
व षष्ठी	तहो, *ताहो, तस्सु	(उनके लिए)
	(उसके लिए)	(उनका, उनकी, उनके)
	(उसका, उसकी, उसके)	
पंचमी	तहां, *ताहां	तहुं, *ताहुं
	(उस से)	(उन से)
सप्तमी	तहिं, *ताहिं	तहिं, *ताहिं
	(उसमें, उस पर)	(उनमें, उन पर)

स्त्रीलिंग – ता (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्रं, तं, सा, *स	ता, *त, ताउ, *तउ, ताओ,
	(वह, उसने)	*तओ
		(बे, उन्होंने)
द्वितीया	त्रं, तं	ता, *त, ताउ, *तउ, ताओ,
	(उसे, उसको)	*तओ
		(उन्हें, उनको)
तृतीया	ताए, *तए	ताहिं, *तहिं
	(उससे, उसके द्वारा)	(उनसे, उनके द्वारा)
चतुर्थी	ता, *त, ताहे, *तहे	ता, *त, ताहु, *तहु
व षष्ठी	(उसके लिए)	(उनके लिए)
	(उसका, उसकी, उसके)	(उनका, उनकी, उनके)
पंचमी	ताहे, *तहे	ताहु, *तहु
	(उस से)	(उन से)
सप्तमी	ताहिं, *तहिं	ताहिं, *तहिं
	(उसमें, उस पर)	(उनमें, उन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग - ज (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	ध्रुं, ज, *जा, जु, जो	ज, *जा
	(जो, जिसने)	(जो, जिन्होंने)
द्वितीया	ध्रुं, ज, *जा, जु,	ज, *जा
	(जिसे, जिसको)	(जिन्हें, जिनको)
तृतीया	जें, जेण, जेणं	जहिं, *जाहिं, जेहिं
	(जिससे, जिसके द्वारा)	(जिनसे, जिनके द्वारा)
चतुर्थी	ज, *जा, जासु,	ज, *जा, जहं, *जाहं
व षष्ठी	जहो, *जाहो, जस्सु	(जिनके लिए)
	(जिसके लिए)	(जिनका, जिनकी, जिनके)
	(जिसका, जिसकी,जिसके)	
पंचमी	जहां, *जाहां	जहुं, *जाहुं
	(जिस से)	(जिन से)
सप्तमी	जहिं, *जाहिं	जहिं, *जाहिं
	(जिसमें, जिस पर)	(जिनमें, जिन पर)

नपुंसकलिंग - ज (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	ध्रुं, जु	ज, *जा, जइं, *जाइं
	(जो, जिसने)	(जो, जिन्होंने)
द्वितीया	ध्रुं, जु	ज, *जा, जइं, *जाइं
	(जिसे, जिसको)	(जिन्हें, जिनको)
तृतीया	जें, जेण, जेणं	जहिं, *जाहिं, जेहिं
	(जिससे, जिसके द्वारा)	(जिनसे, जिनके द्वारा)
चतुर्थी	ज, *जा, जासु,	ज, *जा, जहं, *जाहं
व षष्ठी	जहो, *जाहो, जस्सु	(जिनके लिए)
	(जिसके लिए)	(जिनका, जिनकी, जिनके)
	(जिसका, जिसकी, जिसके)	
पंचमी	जहां, *जाहां	जहुं, *जाहुं
	(जिस से)	(जिन से)
सप्तमी	जहिं, *जाहिं	जहिं, *जाहिं
	(जिसमें, जिस पर)	(जिनमें, जिन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग – जा (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	धुं, जु (जो, जिसने)	जा, *ज, जाउ, *जउ, जाओ, *जओ (जो, जिन्होंने)
द्वितीया	धुं, जु (जिसे, जिसको)	जा, *ज, जाउ, *जउ, जाओ, *जओ (जिन्हें, जिनको)
तृतीया	जाए, *जए (जिससे, जिसके द्वारा)	जाहिं, *जहिं (जिनसे, जिनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	जा, *ज, जाहे, *जहे (जिसके लिए) (जिसका, जिसकी, जिसके)	जा, *ज, जाहु, *जहु (जिनके लिए) (जिनका, जिनकी, जिनके)
पंचमी	जाहे, *जहे (जिस से)	जाहु, *जहु (जिन से)
सप्तमी	जाहिं, *जहिं (जिसमें, जिस पर)	जाहिं, *जहिं (जिनमें, जिन पर)

पुल्लिंग– क (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	क, *का, कु, को (कौन, किसने)	क, *का (कौन, किन्होंने)
द्वितीया	क, *का, कु (किसे, किसको)	क, *का (किन्हें, किनको)
तृतीया	कें, केण, केणं (किससे, किसके द्वारा)	कहिं, *काहिं, केहिं (किनसे, किनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	क, *का, कासु, कहो, *काहो, कस्सु (किसके लिए) (किसका, किसकी, किसके)	क, *का, कहं, *काहं (किनके लिए) (किनका, किनकी, किनके)
पंचमी	कहां, *काहां, किहे (किस से)	कहुं, *काहुं (किन से)
सप्तमी	कहिं, *काहिं (किसमें, किस पर)	कहिं, *काहिं (किनमें, किन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग - क (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	क, *का, कु	क, *का, कइं, *काइं
	(कौन, किसने)	(कौन, किन्होंने)
द्वितीया	क, *का, कु	क, *का, कइं, *काइं
	(किसे, किसको)	(किन्हें, किनको)
तृतीया	कें, केण, केणं	कहिं, *काहिं, केहिं
	(किससे, किसके द्वारा)	(किनसे, किनके द्वारा)
चतुर्थी	क, *का, कासु,	क, *का, कहं, *काहं
व षष्ठी	कहो, *काहो, कस्सु	(किनके लिए)
	(किसके लिए)	(किनका, किनकी,किनके)
	(किसका, किसकी,किसके)	
पंचमी	कहां, *काहां, किहे	कहुं, *काहुं
	(किस से)	(किन से)
सप्तमी	कहिं, *काहिं	कहिं, *काहिं
	(किसमें, किस पर)	(किनमें, किन पर)

स्त्रीलिंग - का (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	का, *क	का, *क, काउ, *कउ,
	(कौन, किसने)	काओ,*कओ
		(कौन, किन्होंने)
द्वितीया	का, *क	का, *क, काउ, *कउ,
	(किसे, किसको)	काओ, *कओ
		(किन्हें, किनको)
तृतीया	काए, *कए	काहिं, *कहिं
	(किससे, किसके द्वारा)	(किनसे, किनके द्वारा)
चतुर्थी	का, *क, काहे,*कहे	का, *क, काहु, *कहु
व षष्ठी	(किसके लिए)	(किनके लिए)
	(किसका, किसकी,किसके)	(किनका,किनकी, किनके)
पंचमी	काहे,*कहे	काहु, *कहु
	(किस से)	(किन से)
सप्तमी	काहिं, *कहिं	काहिं, *कहिं
	(किसमें, किस पर)	(किनमें, किन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग - एत (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एहो	एइ
	(यह, इसने)	(ये, इन्होंने)
द्वितीया	एहो	एइ
	(इसे, इसको)	(इन्हें, इनको)
तृतीया	एतेण, एतेणं, एतें	एतहिं, *एताहिं, एतेहिं
	(इससे, इसके द्वारा)	(इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी	एत, *एता, एतसु, *एतासु,	एत, *एता, एतहं, *एताहं
व षष्ठी	एतहो, *एताहो, एतस्सु	(इनके लिए)
	(इसके लिए)	(इनका, इनकी, इनके)
	(इसका, इसकी, इसके)	
पंचमी	एतहां, *एताहां,	एतहुं, *एताहुं
	(इसं से)	(इन से)
सप्तमी	एतहिं, *एताहिं	एतहिं, *एताहिं
	(इसमें, इस पर)	(इनमें, इन पर)

नपुंसकलिंग - एत (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एहु	एइ
	(यह, इसने)	(ये, इन्होंने)
द्वितीया	एहु	एइ
	(इसे, इसको)	(इन्हें, इनको)
तृतीया	एतेण, एतेणं, एतें	एतहिं, *एताहिं, एतेहिं
	(इससे, इसके द्वारा)	(इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी	एत, *एता, एतसु, *एतासु,	एत, *एता, एतहं, *एताहं
व षष्ठी	एतहो, *एताहो, एतस्सु	(इनके लिए)
	(इसके लिए)	(इनका, इनकी, इनके)
	(इसका, इसकी, इसके)	
पंचमी	एतहां, *एताहां,	एतहुं, *एताहुं
	(इस से)	(इन से)
सप्तमी	एतहिं, *एताहिं	एतहिं, *एताहिं
	(इसमें, इस पर)	(इनमें, इन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - एता (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एह	एइ
	(यह, इसने)	(ये, इन्होंने)
द्वितीया	एह	एइ
	(इसे, इसको)	(इन्हें, इनको)
तृतीया	एताए, *एतए	एताहिं, *एतहिं
	(इससे, इसके द्वारा)	(इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी	एता, *एत, एताहे,*एतहे	एता, *एत, एताहु, *एतहु
व षष्ठी	(इसके लिए)	(इनके लिए)
	(इसका, इसकी, इसके)	(इनका, इनकी, इनके)
पंचमी	एताहे,*एतहे	एताहु, *एतहु
	(इस से)	(इन से)
सप्तमी	एताहिं, *एतहिं	एताहिं, *एतहिं
	(इसमें, इस पर)	(इनमें, इन पर)

पुल्लिंग - इम (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इम, *इमा, इमु, इमो	इम, *इमा
	(यह, इसने)	(ये, इन्होंने)
द्वितीया	इम, *इमा, इमु	इम, *इमा
	(इसे, इसको)	(इन्हें, इनको)
तृतीया	इमेण, इमेणं, इमें	इमहिं, *इमाहिं, इमेहिं
	(इससे, इसके द्वारा)	(इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी	इम, *इमा, इमसु, *इमासु,	इम, *इमा, इमहं, *इमाहं
व षष्ठी	इमहो, *इमाहो, इमस्सु	(इनके लिए)
	(इसके लिए)	(इनका, इनकी, इनके)
	(इसका, इसकी, इसके)	
पंचमी	इमहां, *इमाहां,	इमहुं, *इमाहुं
	(इस से)	(इन से)
सप्तमी	इमहिं, *इमाहिं	इमहिं, *इमाहिं
	(इसमें, इस पर)	(इनमें, इन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग – इम (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमु (यह, इसने)	इम, *इमा, इमइं, *इमाइं (ये, इन्होंने)
द्वितीया	इमु (इसे, इसको)	इम, *इमा, इमइं, *इमाइं (इन्हें, इनको)
तृतीया	इमेण, इमेणं, इमें (इससे, इसके द्वारा)	इमहिं, *इमाहिं, इमेहिं (इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	इम, *इमा, इमसु, *इमासु, इमहो, *इमाहो, इमस्सु (इसके लिए) (इसका, इसकी, इसके)	इम, *इमा, इमहं, *इमाहं (इनके लिए) (इनका, इनकी, इनके)
पंचमी	इमहां, *इमाहां, (इस से)	इमहुं, *इमाहुं (इन से)
सप्तमी	इमहिं, *इमाहिं (इसमें, इस पर)	इमहिं, *इमाहिं (इनमें, इन पर)

स्त्रीलिंग – इमा (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमा, *इम (यह, इसने)	इमा, *इम, इमाउ, *इमउ, इमाओ, *इमओ (ये, इन्होंने)
द्वितीया	इमा, *इम (इसे, इसको)	इमा, *इम, इमाउ, *इमउ, इमाओ, *इमओ (इन्हें, इनको)
तृतीया	इमाए, *इमए (इससे, इसके द्वारा)	इमाहिं, *इमहिं (इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	इमा, *इम, इमाहे, *इमहे (इसके लिए) (इसका, इसकी, इसके)	इमा, *इम, इमाहु, *इमहु (इनके लिए) (इनका, इनकी, इनके)
पंचमी	इमाहे, *इमहे (इस से)	इमाहु, *इमहु (इन से)
सप्तमी	इमाहिं, *इमहिं (इसमें, इस पर)	इमाहिं, *इमहिं (इनमें, इन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग - आय (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	आय,*आया, आयु, आयो	आय,*आया
	(यह, इसने)	(ये, इन्होंने)
द्वितीया	आय,*आया, आयु	आय,*आया
	(इसे, इसको)	(इन्हें, इनको)
तृतीया	आयेण, आयेणं, आयें	आयहिं, *आयाहिं, आयेहिं
	(इससे, इसके द्वारा)	(इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी	आय, *आया, आयसु, *आयासु,	आय, *आया,
व षष्ठी	आयहो, *आयाहो, आयस्सु	आयहं, *आयाहं
	(इसके लिए)	(इनके लिए)
	(इसका, इसकी, इसके)	(इनका, इनकी, इनके)
पंचमी	आयहां, *आयाहां,	आयहुं, *आयाहुं
	(इस से)	(इन से)
सप्तमी	आयहिं, *आयाहिं	आयहिं, *आयाहिं
	(इसमें, इस पर)	(इनमें, इन पर)

नपुंसकलिंग - आय (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	आय,*आया, आयु	आय,*आया,
	(यह, इसने)	आयइं,*आयाइं
		(ये, इन्होंने)
द्वितीया	आय,*आया, आयु	आय,*आया,
	(इसे, इसको)	आयइं, *आयाइं
		(इन्हें, इनको)
तृतीया	आयेण, आयेणं, आयें	आयहिं, *आयाहिं, आयेहिं
	(इससे, इसके द्वारा)	(इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी	आय, *आया, आयसु, *आयासु,	आय, *आया,
व षष्ठी	आयहो, *आयाहो, आयस्सु	आयहं, *आयाहं
	(इसके लिए)	(इनके लिए)
	(इसका, इसकी, इसके)	(इनका, इनकी, इनके)
पंचमी	आयहां, *आयाहां,	आयहुं, *आयाहुं
	(इस से)	(इन से)
सप्तमी	आयहिं, *आयाहिं	आयहिं, *आयाहिं
	(इसमें, इस पर)	(इनमें, इन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - आया (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	आया, *आय (यह, इसने)	आया, *आय, आयाउ, *आयउ, आयाओ, *आयओ (ये, इन्होंने)
द्वितीया	आया, *आय (इसे, इसको)	आया, *आय, आयाउ, *आयउ, आयाओ, *आयओ (इन्हें, इनको)
तृतीया	आयाए, *आयए (इससे, इसके द्वारा)	आयाहिं, *आयहिं (इनसे, इनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	आया, *आय, आयाहे,*आयहे (इसके लिए) (इसका, इसकी, इसके)	आया, *आय, आयाहु, *आयहु (इनके लिए) (इनका, इनकी, इनके)
पंचमी	आयाहे,*आयहे (इस से)	आयाहु, *आयहु (इन से)
सप्तमी	आयाहिं, *आयहिं (इसमें, इस पर)	आयाहिं, *आयहिं (इनमें, इन पर)

पुल्लिंग - अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमु, *अमू (वह, उसने)	ओइ (वे, उन्होंने)
द्वितीया	अमु, *अमू (उसे, उसको)	ओइ (उन्हें, उनको)
तृतीया	अमुएं, *अमूएं, अमुं, *अमूं, अमुण, *अमूण, अमुणं, *अमूणं (उससे, उसके द्वारा)	अमुहिं, *अमूहिं (उनसे, उनके द्वारा)
चतुर्थी व षष्ठी	अमु, *अमू (उसके लिए) (उसका, उसकी, उसके)	अमु, *अमू, अमुहुं, *अमूहुं अमुहं, *अमूहं (उनके लिए) (उनका, उनकी, उनके)
पंचमी	अमुहे, *अमूहे (उस से)	अमुहुं, *अमूहुं (उन से)
सप्तमी	अमुहिं, *अमूहिं (उसमें, उस पर)	अमुहिं, *अमूहिं, अमुहुं, *अमूहुं (उनमें, उन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग – अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमु, *अमू	ओइ
	(वह, उसने)	(वे, उन्होंने)
द्वितीया	अमु, *अमू	ओइ
	(उसे, उसको)	(उन्हें, उनको)
तृतीया	अमुएं, *अमूएं, अमुं, *अमूं,	अमुहिं, *अमूहिं
	अमुण, *अमूण, अमुणं, *अमूणं	(उनसे, उनके द्वारा)
	(उससे, उसके द्वारा)	
चतुर्थी	अमु, *अमू	अमु, *अमू, अमुहुं, *अमूहुं
व षष्ठी	(उसके लिए)	अमुहं, *अमूहं (उनके लिए)
	(उसका, उसकी, उसके)	(उनका, उनकी, उनके)
पंचमी	अमुहे, *अमूहे	अमुहुं, *अमूहुं
	(उस से)	(उन से)
सप्तमी	अमुहिं, *अमूहिं	अमुहिं, *अमूहिं,
	(उसमें, उस पर)	अमुहुं, *अमूहुं
		(उनमें, उन पर)

स्त्रीलिंग – अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमु, *अमू	ओइ
	(वह, उसने)	(वे, उन्होंने)
द्वितीया	अमु, *अमू	ओइ
	(उसे, उसको)	(उन्हें, उनको)
तृतीया	अमुए, *अमूए	अमुहिं, *अमूहिं
	(उससे, उसके द्वारा)	(उनसे, उनके द्वारा)
चतुर्थी	अमु, *अमू, अमुहे, *अमूहे	अमु, *अमू, अमुहु, *अमूहु
व षष्ठी	(उसके लिए)	(उनके लिए)
	(उसका, उसकी, उसके)	(उनका, उनकी, उनके)
पंचमी	अमुहे, *अमूहे	अमुहु, *अमूहु
	(उस से)	(उन से)
सप्तमी	अमुहिं, *अमूहिं	अमुहिं, *अमूहिं
	(उसमें, उस पर)	(उनमें, उन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिंग - कवण (कौन, क्या, कौनसा)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कवण, *कवणा, कवणु, कवणो	कवण, *कवणा
	(कौन, किसने)	(कौन, किन्होंने)
द्वितीया	कवण, *कवणा, कवण	कवण, *कवणा
	(किसे, किसको)	(किन्हें, किनको)
तृतीया	कवणेण, कवणेणं, कवणें	कवणहिं, *कवणाहिं,
	(किससे, किसके द्वारा)	कवणेहिं
		(किनसे, किनके द्वारा)
चतुर्थी	कवण, *कवणा	कवण, *कवणा
व	कवणसु, *कवणासु,	कवणहं, *कवणाहं
षष्ठी	कवणहो, *कवणाहो, कवणस्सु	(किनके लिए)
	(किसके लिए)	(किनका, किनकी,
	(किसका, किसकी, किसके)	किनके)
पंचमी	कवणहां, *कवणाहां	कवणहुं, *कवणाहुं
	(किस से)	(किन से)
सप्तमी	कवणहिं, *कवणाहिं	कवणहिं, *कवणाहिं
	(किसमें, किस पर)	(किनमें, किन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग – कवण (कौन, क्या, कौनसा)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कवण, *कवणा, कवणु	कवण, *कवणा,
	(कौन, किसने)	कवणइं, *कवणाइं
		(कौन, किन्होंने)
द्वितीया	कवण, *कवणा, कवणु	कवण, *कवणा,
	(किसे, किसको)	कवणइं, *कवणाइं
		(किन्हें, किनको)
तृतीया	कवणेण, कवणेणं, कवणें	कवणहिं, *कवणाहिं,
	(किससे, किसके द्वारा)	कवणेहिं
		(किनसे, किनके द्वारा)
चतुर्थी	कवण, *कवणा	कवण, *कवणा
व	कवणसु, *कवणासु,	कवणहं, *कवणाहं
षष्ठी	कवणहो, *कवणाहो, कवणस्सु	(किनके लिए)
	(किसके लिए)	(किनका, किनकी,
	(किसका, किसकी, किसके)	किनके)
पंचमी	कवणहां, *कवणाहां	कवणहुं, *कवणाहुं
	(किस से)	(किन से)
सप्तमी	कवणहिं, *कवणाहिं	कवणहिं, *कवणाहिं
	(किसमें, किस पर)	(किनमें, किन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - कवणा (कौन, क्या, कौनसा)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कवणा, *कवण (कौन, किसने)	कवणा, *कवण, कवणाउ, *कवणउ, कवणाओ, कवणओ (कौन, किन्होंने)
द्वितीया	कवणा, *कवण (किसे, किसको)	कवणा, *कवण, कवणाउ, *कवणउ, कवणाओ, *कवणओ (किन्हें, किनको)
तृतीया	कवणाए, *कवणए (किससे, किसके द्वारा)	कवणाहिं, *कवणहिं (किनसे, किनके द्वारा)
चतुर्थी	कवणा, *कवण	कवणा, *कवण
व षष्ठी	कवणाहे, *कवणहे (किसके लिए) (किसका, किसकी, किसके)	कवणाहु, *कवणहु (किनके लिए) (किनका, किनकी, किनके)
पंचमी	कवणाहे, *कवणहे (किस से)	कवणाहु, *कवणहु (किन से)
सप्तमी	कवणाहिं, *कवणहिं (किसमें, किस पर)	कवणाहिं, *कवणहिं (किनमें, किन पर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तीनों लिंगों में - अम्ह (मैं)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	हउं	अम्हे, अम्हइं
	(मैं, मैंने)	(हम, हमने)
द्वितीया	मइं	अम्हे, अम्हइं
	(मुझे, मुझको)	(हमें, हमको)
तृतीया	मइं	अम्हेहिं
	(मुझसे, मेरे द्वारा)	(हमसे, हमारे द्वारा)
चतुर्थी	महु, मज्झु	अम्हहं
व षष्ठी	(मेरे लिए, मेरा, मेरी, मेरे)	(हमारे लिए, हमारा, हमारी, हमारे)
पंचमी	महु, मज्झु	अम्हहं
	(मुझ से)	(हम से)
सप्तमी	मइं	अम्हासु
	(मुझमें, मुझ पर)	(हम में, हम पर)

तीनों लिंगों में - तुम्ह (तुम)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुहुं	तुम्हे, तुम्हइं
	(तू, तूने)	(तुम, तुमने)
द्वितीया	पइं, तइं	तुम्हे, तुम्हइं
	(तुझे, तुझको)	(तुम्हें, तुमको)
तृतीया	पइं, तइं	तुम्हेहिं
	(तुझसे, तेरे द्वारा)	(तुझसे, तुम्हारे द्वारा)
चतुर्थी	तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं
व षष्ठी	(तेरे लिए, तेरा, तेरी, तेरे)	(तुम्हारे लिए, तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे)
पंचमी	तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं
	(तुझ से)	(तुम से)
सप्तमी	पइं, तइं	तुम्हासु
	(तुझमें, तुझ पर)	(तुम में, तुम पर)

◆◆◆

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-3
क्रियारूप व कालबोधक प्रत्यय
वर्तमानकाल
अकारान्त क्रिया (हस)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हसउं	हसहुं
	हसमि, हसामि, हसेमि	हसमो, हसमु, हसम
मध्यम पुरुष	हसहि	हसहु
	हससि, हससे	हसह, हसित्था, हसध
अन्य पुरुष	हसइ, हसेइ, हसए	हसहिं
	हसदि, हसेदि, हसदे	हसन्ति, हसन्ते, हसिरे

अकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	उं	हुं
	मि	मो, मु, म
मध्यम पुरुष	हि	हु
	सि, से	ह, इत्था, ध
अन्य पुरुष	इ, ए	हिं
	दि, दे	न्ति, न्ते, इरे

वर्तमानकाल
आकारान्त क्रिया (ठा)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ठाउं	ठाहुं
	ठामि	ठामो, ठामु, ठाम
मध्यम पुरुष	ठाहि	ठाहु
	ठासि	ठाह, ठाइत्था, ठाध
अन्य पुरुष	ठाइ	ठाहिं
	ठादि	ठान्ति→ठन्ति,
		ठान्ते→ठन्ते, ठाइरे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमानकाल
ओकारान्त क्रिया (हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	होउं	होहुं
	होमि	होमो, होमु, होम
मध्यम पुरुष	होहि	होहु
	होसि	होह, होइत्था, होध
अन्य पुरुष	होइ	होहिं
	होदि	होन्ति, होन्ते, होइरे

आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	उं	हुं
	मि	मो, मु, म
मध्यम पुरुष	हि	हु
	सि	ह, इत्था, ध
अन्य पुरुष	इ	हिं
	दि	न्ति, न्ते, इरे

भूतकाल
अकारान्त क्रिया (हस)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हसीअ	हसीअ
मध्यम पुरुष	हसीअ	हसीअ
अन्य पुरुष	हसीअ	हसीअ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ईअ	ईअ
मध्यम पुरुष	ईअ	ईअ
अन्य पुरुष	ईअ	ईअ

भूतकाल

आकारान्त क्रिया (ठा)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ठासी, ठाही, ठाहीअ	ठासी, ठाही, ठाहीअ
मध्यम पुरुष	ठासी, ठाही, ठाहीअ	ठासी, ठाही, ठाहीअ
अन्य पुरुष	ठासी, ठाही, ठाहीअ	ठासी, ठाही, ठाहीअ

भूतकाल

ओकारान्त क्रिया (हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	होसी, होही, होहीअ	होसी, होही, होहीअ
मध्यम पुरुष	होसी, होही, होहीअ	होसी, होही, होहीअ
अन्य पुरुष	होसी, होही, होहीअ	होसी, होही, होहीअ

आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	सी, ही, हीअ	सी, ही, हीअ
मध्यम पुरुष	सी, ही, हीअ	सी, ही, हीअ
अन्य पुरुष	सी, ही, हीअ	सी, ही, हीअ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भविष्यत्काल

अकारान्त क्रिया (हस)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हसिसउं, हसेसउं	हसिसहुं, हसेसहुं
	हसिहिमि, हसेहिमि	हसिहिमो, हसिहिमु, हसिहिम
		हसेहिमो, हसेहिमु, हसेहिम
मध्यम पुरुष	हसिसहि, हसेसहि	हसिसहु, हसेसहु
	हसिहिसि, हसिहिसे,	हसिहिह, हसेहिह,
	हसेहिसि, हसेहिसे	हसिहित्था, हसेहित्था,
		हसिहिध, हसेहिध
अन्य पुरुष	हसिसइ, हसेसइ, हसिसए, हसेसए	हसिसहिं, हसेसहिं
	हसिहिइ, हसेहिइ, हसिहिए, हसेहिए	हसिहिन्ति, हसेहिन्ति,
	हसिसदि, हसेसदि, हसिसदे, हसेसदे	हसिहिन्ते, हसेहिन्ते
	हसिहिदि, हसेहिदि, हसिहिदे, हसेहिदे	हसिहिइरे, हसेहिइरे
	हसिस्सिदि	

अकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	सउं	सहुं
	हिमि	हिमो, हिमु, हिम
मध्यम पुरुष	सहि	सहु
	हिसि, हिसे	हिह, हित्था, हिध
अन्य पुरुष	सइ, सए, सदि, सदे	सहिं
	हिइ, हिए, हिदि, हिदे	हिन्ति, हिन्ते, हिइरे
	स्सिदि	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भविष्यत्काल

आकारान्त क्रिया (ठा)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ठासउं	ठासहुं
	ठाहिमि	ठाहिमो, ठाहिमु, ठाहिम
मध्यम पुरुष	ठासहि	ठासहु
	ठाहिसि	ठाहिह, ठाहित्था, ठाहिध
अन्य पुरुष	ठासइ, ठासदि	ठासहिं
	ठाहिइ, ठाहिदि	ठाहिन्ति, ठाहिन्ते, ठाहिइरे
	ठास्सिदि	

भविष्यत्काल

ओकारान्त क्रिया (हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	होसउं	होसहुं
	होहिमि	होहिमो, होहिमु, होहिम
मध्यम पुरुष	होसहि	होसहु
	होहिसि	होहिह, होहित्था, होहिध
अन्य पुरुष	होसइ, होसदि	होसहिं
	होहिइ, होहिदि	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिइरे
	होस्सिदि	

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	सउं	सहुं
	हिमि	हिमो, हिमु, हिम
मध्यम पुरुष	सहि	सहु
	हिसि	हिह, हित्था, हिध
अन्य पुरुष	सइ, सदि	सहिं
	हिइ, हिदि	हिन्ति, हिन्ते, हिइरे
	स्सिदि	

विधि एवं आज्ञा

अकारान्त क्रिया (हस)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हसमु, हसेमु	हसमो, हसेमो
मध्यम पुरुष	हसि, हसु, हसे	हसह, हसेह
	हसहि, हससु, हस	हसध, हसेध
अन्य पुरुष	हसउ, हसेउ	हसन्तु, हसेन्तु

अकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मु	मो
मध्यम पुरुष	इ, उ, ए	ह, ध
	हि, सु, शून्य	
अन्य पुरुष	उ, दु	न्तु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विधि एवं आज्ञा

आकारान्त क्रिया (ठा)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	ठामु	ठामो
मध्यम पुरुष	ठाइ, ठाए, ठाउ	ठाह
	ठाहि, ठासु	
अन्य पुरुष	ठाउ, ठादु	ठान्तु→ठन्तु

ओकारान्त क्रिया (हो)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	होमु	होमो
मध्यम पुरुष	होइ, होए, होउ	होह,
	होहि, होसु	
अन्य पुरुष	होउ	होन्तु

आकारान्त, ओकारान्त क्रिया (प्रत्यय)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मु	मो
मध्यम पुरुष	इ, ए, उ	ह
	हि, सु	
अन्य पुरुष	उ, दु	न्तु

◆◆◆

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट–4

संख्यावाची शब्द रूप

संख्यावाची **'एक्क'** शब्द के रूप केवल एकवचन पुल्लिंग में पुल्लिंग **'सव्व'** के अनुसार , नपुंसकलिंग में नपुंसकलिंग **'सव्व'** के अनुसार तथा स्त्रीलिंग में **'सव्वा'** के अनुसार होते हैं।

एक्क (एक)

	पुल्लिंग एक.	नपुंसकलिंग एक.	स्त्रीलिंग एक.
प्रथमा	एक्क, *एक्का, एक्कु, एक्को	एक्क, *एक्का, एक्कु	एक्का, *एक्क
द्वितीया	एक्क, *एक्का, एक्कु	एक्क, *एक्का, एक्कु	एक्का, *एक्क
तृतीया	एक्केण, एक्केणं, एक्कें	एक्केण, एक्केणं, एक्कें	एक्काए,* एक्कए
चतुर्थी	एक्क, *एक्का	एक्क, एक्का	एक्का, *एक्क
व	एक्कासु, *एक्कसु	एक्कासु, *एक्कसु	एक्काहे, *एक्कहे
षष्ठी	एक्कहो, *एक्काहो एक्कस्सु	एक्कहो, *एक्काहो एक्कस्सु	
पंचमी	एक्कहां, *एक्काहां	एक्कहां, *एक्काहां	एक्काहे, *एक्कहे
सप्तमी	एक्कहिं, *एक्काहिं	एक्कहिं, *एक्काहिं	एक्काहिं, *एक्कहिं

◆◆◆

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-5

आचार्य हेमचन्द्र-रचित सूत्रों के सन्दर्भ

संज्ञा शब्दों के विभक्ति प्रत्ययों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	4/331
2.	4/332
3.	4/333, 4/342, 1/27
4.	4/334
5.	4/335
6.	4/336
7.	4/337
8.	4/338
9.	4/339
10.	4/340 व वृत्ति
11.	4/341
12.	4/343, 1/27
13.	4/344
14.	4/345
15.	4/346, 4/448
16.	4/347
17.	4/348
18.	4/349
19.	4/350
20.	4/351
21.	4/352
22.	4/353
23.	4/330
24.	4/329

सर्वनाम शब्दों के विभक्ति प्रत्ययों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	4/355
2.	4/356
3.	4/357
4.	4/358
5.	4/359
6.	4/360 व वृत्ति
7.	4/361
8.	4/362
9.	4/363
10.	4/364
11.	4/365
12.	4/366
13.	4/367
14.	4/368
15.	4/369
16.	4/370

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

17.	4/371
18.	4/372
19.	4/373
20.	4/374
21.	4/375
22.	4/376
23.	4/377
24.	4/378
25.	4/379
26.	4/380
27.	4/381

क्रिया-रूप एवं कालबोधक प्रत्ययों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	4/385, 3/141
2.	4/386, 3/144
3.	4/383, 3/140
4.	4/384, 3/143, 4/268
5.	3/139, 3/158, 4/273, 4/274
6.	4/382, 3/142, 1/84
7.	3/163
8.	3/162
9.	4/388, 3/157
10.	4/388, 3/157
11.	4/388, 3/157
12.	4/388, 3/157
13.	4/388, 3/157, 4/275
14.	4/388, 3/157
15.	3/173
16.	3/176, 3/158
17.	4/387, 3/173-174
18.	3/176, 3/158
19.	3/173, 3/158
20.	3/176, 3/158, 1/84

कृदन्तों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	4/438, 4/448
2.	4/439, 4/440, 4/271, 1/27, 3/157
3.	4/442
4.	4/441
5.	3/152
6.	3/181

भाववाच्य एंव कर्मवाच्य के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	3/160
2.	3/160

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

स्वार्थिक प्रत्ययों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	4/429, 4/430
2.	4/431, 4/432

प्रेरणार्थक प्रत्ययों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	3/149
2.	3/152
3.	3/153, 3/161

संख्यावाची शब्दों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	3/119, 3/120, 3/123
2.	3/118, 3/121, 3/123
3.	3/122, 3/123
4.	3/123

अव्ययों के नियम

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	4/401
2.	4/401
3.	4/401
4.	4/401
5.	4/402, 4/403
6.	4/404
7.	4/405
8.	4/406
9.	4/407
10.	4/408
11.	4/415
12.	4/416
13.	4/417
14.	4/418
15.	4/419
16.	4/420
17.	4/424
18.	4/425
19.	4/426
20.	4/427
21.	4/428
22.	4/444

विविध

नियम संख्या	सूत्र संख्या
1.	4/389
2.	4/395
3.	4/409
4.	4/413
5.	4/437
6.	4/410
7.	4/443
8.	4/411
9.	4/445
10.	4/446
11.	4/447

◆◆◆

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

संदर्भ ग्रन्थ

1.	हेमचन्द्र प्राकृत व्याकरण, भाग 1-2	: व्याख्याता श्री प्यारचन्द जी महाराज (श्री जैन दिवाकर-दिव्य ज्योति कार्यालय, मेवाड़ी बाजार, ब्यावर)
2.	अपभ्रंश-हिन्दी कोश, भाग 1-2	: डॉ. नरेश कुमार (इण्डो विजन प्रा. लि. II A 220, नेहरू नगर, गाजियाबाद)
3.	पाइय-सद्द-महण्णवो	: पं. हरगोविन्ददास त्रिविक्रमचन्द्र सेठ (प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी)
4.	अपभ्रंश भाषा का अध्ययन	: वीरेन्द्र श्रीवास्तव (एस. चन्द एण्ड कम्पनी प्रा. लि., रामनगर, नई दिल्ली)
5.	प्रौढ अपभ्रंश रचना सौरभ, भाग-1	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर)
6.	प्रौढ प्राकृत-अपभ्रंश-रचना सौरभ,भाग-2	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर)
7.	अपभ्रंश रचना सौरभ (द्वितीय संस्करण)	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर)
8.	प्राकृत रचना सौरभ (द्वितीय संस्करण)	: डॉ. कमलचन्द सोगाणी (अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org